पद भाग क्र.४

०९ :– भक्ति का प्रताप को अंग
१० :– ध्यान संबधी शब्द महिमा को अंग
११ :– निरणा को अंग

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	नही रे अेसो मोसर दूजो कोय २४६	१
२	साधाँ म्हारे आनन्द भया हो घर मांही ३०९	२
३	ब्याव हुवो लो मेरा हुवोलो ९०	३

१०

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	गिगन मे भवर गुंजाना बे १२६	४
२	गिगन मे अनहद बाजे भारी १२८	५
३	जोगिया गिगन मंड्ळ घर खेले १७८	६
४	जोगिया गिगन मंड्ळ घर कीया १७९	७
५	मन रे तो कछु न जाणु २२३	८
६	साधो भाई तीरथ तो सब कीया ३१९	९
७	संतो देख्या इचरज भारी ३५३	९
८	संतो कहयाँ पत नहि आवे ३५९	११
९	त्रिगुटी मेहेल अनुपा हो ४००	१२

११

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	अनाहद सब्द सूं नाद हुयो ०६	१३
२	बांदा अगम देस पेड़याँ दस आगे ३२	१४
३	बांदा गुरू तजीयाँ दोष ओई ३७	१५
४	बांदा ने: अंछर तत्त साचो ४९	१९
५	बांदा ने: अंछर बिन अे नहीं लाँगो ५०	२०
६	बांदा ओ सुण भेद न्यारो ५६	२२
७	बांदा पाँच भक्त जुग जाणो ५९	२३
८	बांदा पुराण सुण कुण तिरीया ६०	२४
९	बांदा राज जोग बिध न्यारी ६१	२६
१०	बांदा सब ही भक्त नियारी ६२	२८
११	बांदा समज छाण मत लीजे ६३	३१
१२	बांदा सत सुक्रत ओ जाणो ६६	३३
१३	बांदा सतगुरू म्हेर न्यारी ६७	३४
१४	बांदा वे जन पूरां जोगी ७३	३८
१५	भजना रे प्राणिया ७९	४०

१६ भगत तुमारी बखाणी माधोजी ८५ ४१
१७ देव पदी जीव जाय ९८ ४२
१८ जे जे जाय मिल्या पद माही १७० ४३
१९ जीव बसे किस ठोड १७६ ४४
२० जीव को कंठ अस्थान १७७ ४५
२१ काचे मन बैराग १८९ ४५
२२ क्रम करे सो कवन हे हो १९४ ४६
२३ करम काट पद मे मिले १९५ ४७
२४ केइक पाप मन मानियारे १९७ ४८
२५ कोई अेसा हे जन सूर साधो २०५ ५२
२६ मन राजा के नार २१९ ५३
२७ पांडे ओ तो ब्रम्ह कहावे २६५ ५४
२८ पांडे समज वाद सो किजे २६९ ५५
२९ पंडित यामें कुण हे न्याई २७४ ५६
३० संतो अेसा भेव सभावो ३३५ ५७
३१ संतो अरथ करे सो पुरा ३३८ ५९
३२ संतो भाई ग्रहस्थ भेव बताऊँ ३४३ ६१
३३ संतो भाई त्यागन भेव बताऊँ ३४९ ६२
३४ संतो चौथे पद नही जावे ३५२ ६३
३५संतो केवल मत तो न्यारी ३६१ ६४
३६ संतो मे अेसा सतगुरु चाउॅ ३६४ ६७
३७ संतों तो सुण कारण माई ३७२ ६९
३८ सरब दुखी लो ३७३ ७०
३९ सतगुरु चरण बंदो मेरे प्राणी ३७८ ७१
४० तीरशा कू हर जाल कियो रे ३९८ ७२
४१ तुम सुणज्यो सकळ जन आण ४०६ ७३
४२ वो सुण भेद न्यारो सबसु ४२२ ७५

२४६

|| पदराग केदारा ||

नहीं रे अेसो मोसर दूजो कोय

नहीं रे अेसो मोसर दूजो कोय ||

इण सावे कोई हंस प्रणो || सो सब मीलजो मोय || टेर ||

जैसे साल में विवाह के सावे निकालते और उस तिथि पर विवाह करते। विवाह की तिथि नहीं निकली तो विवाह नहीं होता। इसीप्रकार चौरासी लक्ष योनी में मनुष्य देह यह मोक्ष पाने का अवसर है। इस मनुष्य अवसर में मोक्ष नहीं मिलाया तो यह अवसर हाथ से निकल जायेगा फिर यह अवसर कभी नहीं आएगा इसलिए जिसे जिसे मोक्ष चाहिए वे सभी मेरे शरण में आओ।।टेर।।

निर्मळ सावो छांट के ओ || सतगुरा दीनो लाय ||

त्रिकुटी तोरण बांध के हो || प्रण्या ब्रम्ह सुन्न जाय || १ ||

जैसे पंडित वधू-वर के जीवन में सुख समृध्दी निपजे इसलिए विवाह के लिए निर्मल सावा सभी सावो में से छाँट देते है वैसे ही मेरे सतगुरु ने आनंद लोक के महासुख पाने के लिए ८४ लाख योनी में से छाटकर मनुष्य देह दिया है। जैसे विवाह में तोरण बाँधते और चौऱ्या के जगह जाकर विवाह के फेरे करते ऐसे मेरे सतगुरु ने त्रिगुटी में तोरण बांधकर,ब्रम्हशुन्य में जाकर लग्न लगाये है ।।१।।

अर्ध उर्ध बिच ब्यांव रच्यो हो || चडिये नांव बरात ||

पिछम गेले होय धुन्न सबद की || चालत हे दिन रात || २ ||

विवाह में वर पक्ष का विवाह स्थल होता है और वर पक्ष बारात लेकर बँड बाजो के धुन में जहाँ चौऱ्या मंडी है उस स्थल पर आनंद मनाते चलते जाते है ऐसे ही आती-जाती साँस मे लग्न स्थल की रचना की है और नाम बरात पश्चिम के रास्ते से शब्द की धुन गाते रात-दिन ब्रम्हशून्य के ओर चल रही है ।।।२।।

गिगन स्हेर ज्हा जाय पहूंता || धुऱ्यां हे नांव निसाण ||

अळा पींगळा सुखमण नारी || लाई हे सेज पर ताण || ३ ||

गगन शहर में मैं जा पहुँचा हूँ। वहाँ नाम का निशान बज रहा है। मैने गंगा,जमुना,सुखमना नारियों को खींचकर पलंग पर लाया। ।।३।।

चंवरी मांडी ब्रम्ह सुन्न मे || त्रगुटी सा मेळो होय ||

बाजा बाजे हीरा बरसे || जोत झीला मिल जोय || ४ ||

ब्रम्हशून्य में चवरी रची और त्रिगुटी में मिली हुई। नाम के ध्वनि के बाजे बज रहे है और हीरो की वर्षा हो रही है और इधर उधर ज्योतियों की झिलमिल लगी है ।।४।।

सामेळो ले चालिया हो || परण्या ब्रम्ह सुन्न जाय ||

जन सुखदेवजी अब मेलां पोडया || आणंद सेज बीछाय || ५ ||

सामेला लेकर ब्रम्हशून्य में पहुँचा और वहाँ मैने विवाह किया आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि अब मैं सतस्वरुप महल में आनंदपद की गादी बिछाकर लेटा हूँ। ।५।

३०९

|| पदराग बिहगडो ||

साधाँ म्हारे आनन्द भया हो घर मांही
साधाँ म्हारे आनन्द भया हो घर मांही ||
निपजी साख नांम अन आयो || सांसो रहयो न काई || टेर ||

जैसे किसान के घर में भरपूर सभी प्रकारका अनाज उगता है और उसे अनाज की कोई चिन्ता नहीं रहती है तो उसे जैसे आनंद आता है वैसे ही मुझे मेरे घट में नाम प्रगटने के कारण आनंद हो रहा है। अब घट में हर प्रगटने की कोई चिंता नहीं रही है ।।टेर।।

ओ मन इन्दर उमंग कर आयो || ज्ञान बादळा दरस्या ||
ब्रेह तन बीज चमकणे लागी || भजन मे हे सो बरस्या || १ ||

जैसे इंद्र उल्हासित होकर आने पर उसके बादल इधर उधर–दिखने लगते। इधर–उधर बिजली चमकते दिखती और बहुत बारीश आती है ऐसे ही मेरे मन में इंद्र के समान हर के लिए उमंग आयी है। इधर–उधर ज्ञान बादल आए है,विरह की बिजली चमक रही है और धुंवाधार भजन की वर्षा हो रही है ।।१।।

सांतु अनं नीपता भारी || साख हेल दे आई ||
अब कोई आणर जाचे मो कूं || गाडा भरदुं भाई || २ ||

जैसे अच्छी बारीश होनेपर फसल लहरा लहराकर पकती तब घर में जरुरतवाले सातो अनाज भरपूर उगते है। ऐसे किसान को कोई माँगने जाता है तो उसे वह किसान गाडा भर–भर के देता है ऐसे ही मेरे रोम–रोम में राम प्रगटा है ।।२।।

मेरा तो तोटा सब ही भागा || ओर सबही का भाजे ||
जे कोई आण संभावे शिंवरण || तीन लोक सिर गाजे || ३ ||

मेरा तो सभी नुकसान समाप्त हो गया और भी सभी का भी हानि,लाभ में परिवर्तीत हो जायेगा। यदि कोई आकर राम नामका स्मरण करना धारण करेगा। तो वह तीनो लोक के ऊपर,गरजने लगेगा। || ३ ||

खुल्या भंडार द्रब बोहो निकस्या || तोटो पडण न पावे ||
कह सुखराम लगी अब ताळी || रूम रूम हर गावे || ४ ||

जैसे जमीन में द्रव्यों का भंडार होते वे भंडार हाथ में आने पर कितना भी निकाला तो भी उस भंडार के द्रव्यों की कमी नहीं आती। इसी प्रकार मेरी रामजी से लीव लगी है और मेरा रोम रोम रामजी गा रहे है। अब मुझे हर के नाम की कोई कसर नहीं पडने वाली है ।।४।

९०

|| पदराग जोग धनाश्री ||

ब्याव हुवो लो मेरा हुवोलो

ब्याव हुवो लो मेरा हुवोलो || अब घर कर सूं जूवा रे लो || टेर ||

लोगो,मेरा विवाह हो गया है,(पती मिल गया है।)अब मैं,अपना घर अलग करुँगी। ||टेर||

सतगुरू मिलिया अग्या लीवी || ताँ दिन भई सगाई रे लो ||

राम नाम मुख केणो लागो || जब हर परण्या आई रे लो || १ ||

जिस दिन सतगुरु मिले,उस दिन उनकी आज्ञा लेकर,उनका शिष्य बना,उसी दिन मेरी सगाई हो गई और जब मैं,मुँख से राम नाम कहने लगा,तब हर ने(रामजी ने)आकर,मुझ से विवाह किया। ||१||

अब हरजी मेरे घर आया || बापजी मोही पठावे रे ||

ब्रेहे प्रेम हीया भर उबके || सयाँ मिल मिल जावे रे लो || २ ||

अब हर(रामजी)मेरे घर आये और मेरे पिताजी(सतगुरु),मुझे हर के(रामजी के)साथ भेजने लगे। अब मुझे विरह(रोना)आने लगा और प्रेम के कारण,आँसू आने लगा,इस प्रकार से मेरा हृदय भर-भर कर,उबकने लगा और मेरी सहेलियाँ(इस भक्ती के मार्ग मे, लगे हुए साधक),ये मुझसे मिल-मिल कर जाने लगे । || २ ||

पीव हमारी सेजाँ रमिया || देह धक धूण लो थाणी रे ||

कपड़ा घड़ी भाँग मसळाणा || जब दुनियाँ मुझ जाणी रे लो || ३ ||

अब पीव ने(रामजी ने),मेरी पलंग के उपर(यानी मेरे शरीर मे)रमण किया। और उन्होंने बहुत धक्का धूम करके लथाड़ा,(इस उनके लथाड़ने से,मेरे पहने हुए)कपड़े का,बनाया हुआ घड़ी(मोड़)टूटकर,कपड़े मसल गये,(शरीर का स्वभाव,प्रकृती और शरीर के सभी गुण,चूर-चार हो गया),इस प्रकार से,मेरी काया के स्वभाव मे,बदलाव होने के कारण, दुनिया के लोग,मुझे जानने लगे || ३ ||

गरभ बंधियो ओदर बधियो || अब मुज नाज न भावे रे ||

बाँज लुगायाँ हँस हँस जावे || ब्यावर बिध बतावे रे लो || ४ ||

अब मेरा गर्भ ठहर गया और उदर(पेट)बढ़ने लगा,(गर्भ रुका यानी शब्द ठहर गया और उदर बढ़ने लगा यानी ध्यान बढ़ने लगा।)अब मुझे अन्न खाने की इच्छा नहीं होती है। (यानी दूसरे कर्म,दूसरी भक्ती,दूसरे धर्म,कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। क्यों कि,राम नामका ध्यान बढ़ने लगा,उस शब्द के आगे,दूसरा कुछ भी अच्छा नहीं लगता है।)अब मुझे बांझ औरतें(पंडीत),(यह जो बात मेरे अन्दर हुयी,वह जिसमें हुयी नहीं,शब्द की ध्वनी लगी नहीं तथा शब्द का ध्यान नहीं होता है,ऐसी बांझ औरत यानी पंडीत)मुझे हँसते है।(और ढोंग करती है,ऐसा कहती है और थट्टा करती है। पुत्रवती,जिसे पुत्र हो गया है,ऐसी यानी जिनमें भक्ती के चिन्ह,अभी जो मुझ में आये है,वे उनमे पहले ही हो

गये। ऐसे जन,मुझे इसके आगे होने वाली,सभी) विधी बताते है।(जिन में वह रीती हुयी नहीं,वे हँसते है और जिनमें ये बाते हो गयी,वे मुझे सभी विधी बतलाते है।)। ।। ४ ।।

गिगन मंडळ मे जापो हुवो ।। अनहद थाळ बजाणा रे लो ।।
के सुखराम बधाई अणभे ।। त्रिगुटी ध्यान लगाणा रे लो ।। ५ ।।

अब मैं गगन मंडल में(ब्रम्हाण्ड में),प्रसूती हुयी।(जैसे यहाँ संसार में,पुत्र पैदा होने पर, काँसे की थाली बजाते है,वैसे ही)मेरी अनहद का थाल,बज रहा है। सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,कि,अणभे की बधाई(अनुभव का शुभ वर्तमान),मेरा त्रिकुटी में ध्यान लगा,यही अणभे की बधाई यानी अनुभव का शुभ वर्तमान है। ।। ५ ।।

१२६

।। पदराग परज ।।

गिगन में भँवर गुंजाणा बे
गिगन में भँवर गुंजाणा बे ।।
कोई सुणता हो गुर ग्यानी ।। गिगन में भँवर गुंजाणा बे ।। टेर ।।

गिगन में दसवेद्वार के परे भँवरो के समान गुंजार हो रही है। यह गुंजार कोई गुरुज्ञानी होगा उसे ही सुनाई देती ।।टेर।।

च्यार पांखको कँवळ कंठा बीच ।। राम रटण धून लागी ।।
जामे जीव जुक्त कर बेठो ।। सबी सवाद रस पागी ।। १ ।।

चार पांख का कमल कंठ में है। उस कमल में राम नाम की धुन लगी है। उस कमल मे मेरा जीव युक्ती से बैठा है और जो खाता–पीता है उसके सभी स्वाद वह परखता है ।१।

अष्टां पाँख कवंळ दळ हिरदे ।। जहाँ सीव आसण होई ।।
मन सो बुध सुध सो सुरती ।। ईनहीं को घर ओई ।। २ ।।

आठ पांख का कंवल हृदय में है। इस कमल पर शिव का आसन है। यह कमल मन,बुध्दी,सुध्दी और सूरत इनका आकारी देह से रहने का घर है।२।

पाँख बत्तीस नाभ दळ कंवळा ।। ज्यां लिछमी बिसन बीराजे ।।
पवना सेवग करे बंदगी ।। मन तेजी होय गाजे ।। ३ ।।

बत्तीस पांख का कंवल नाभी में है। उस कमल पर लक्ष्मी,विष्णु बिराजे है। पवन सेवक बन कर बंदगी करता है और मन तेजीसे गाजता है ।।३।।

ज्हाँ तळ कंवळ ओर हे दूजो ।। षट दळ पांख लगाणी ।।
जा में ब्रम्हा मांड घड़त हे ।। ऊभै नार संग आणी ।। ४ ।।

इसके छःअंगुली नीचे छःपांख का और एक दुजा कमल है। उसमे ब्रम्हा बिराजमान है। वहाँ यह ब्रम्हा उभै याने दो नारियों के साथ सृष्टि की रचना करता है ।।४।।

चोंसट पांख च्यार तां ऊपर ।। ज्हाँ गणपत का बासा ।।

खुलिया घाट पिछम का मारग ।। किया मेर घर बासा ।। ५ ।।

चौसट पांख के उपर चार पांख का कमल है। उस चार पांख के कमल पर गणपती वास करता है। वहॉ से पश्चिम के रास्ते का घाट खूला। पश्चिम के रास्ते से इक्कीस स्वर्ग पार करके मेरु के घर निवास किया ।।५।।

दोय पांख को कंवळ त्रगुटी ।। निरखत हे जन पूरा ।।
अळा पिंगळा सुखमण जागी ।। मुख पर बरसत नूरा ।। ६ ।।

दो पांख का कमल त्रिगुटी मे लगा। इस कमल को जो पूरा संत है वही देखता है। त्रिगुटी मे इडा,पिंगला,सुषमना जागृत होती है और मुखपर तेज झलकने लगता है ।।६।।

पांख हजार कंवळ ज्यां फूला ।। कळी कळी रस छुटा ।।
जन सुखराम मिल्या सुख सागर ।। हीर अमोलक बूठा ।। ७ ।।

आगे एक हजार पंखुड्यिों का कमल खिला। उसके हर कलिसे रस छुटा। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,सुखसागर में मिलनेपर अनमोल हिरे बरसने लगे।।७।।

१२८

।। पदराग परज ।।

गिगन में अनहद बाजे भारी
कोई सुणता हो गुरूग्यानी ।। गिगन में अनहद बाजे भारी ।। टेर ।।

गिगन में दसवेद्वार में अनहद ध्वनि के भारी बाजे बज रहे। यह बाजे जो सतस्वरुप का गुरु ज्ञानी होगा वही समझेगा दूजे किसी भी माया के ग्यानी को यहाँ तक की भृगुटी मे चढाये हुए ओअम के ज्ञानी को और दसवेद्वार में पहुँचे हुये सोहम् जाप अजप्पा के ज्ञानी को यह बाजे सुनाई नहीं देंगे ।।टेर।।

हम गुरग्यान धारियो उर में ।। सतगुरू किरपा कीनी ।।
कागद बिना अंछर बिन अंछर ।। बस्त अनोपम चीनी ।। १ ।।

मैंने मेरे निजमन में गुरुज्ञान धारण किया तब मेरे सतगुरु ने मुझ पर कृपा की मैं गगन में दसवेद्वार में पहुँच गया। मैंने कागज पर लिखे जानेवाले अक्षरो से अलग ऐसा कागज पर न लिखे जानेवाले ने:अंछर यह अनोपम वस्तु पाई ।।१।।

मन कूं घेर मत्त मे लाया ।। सुरत सबद घर पाया ।।
मनसो पवन मिल्या नाभी मे ।। उलट सिखर घर आया ।। २ ।।

मैंने मेरे मन को ब्रम्हा,विष्णु,महादेव इनके करणियों से, विषय विकारों से निकाला और ने:अंछर के मत मे घेरा। मेरी सुरत कंठ में शब्द के घर मे लगाई। मेरा मन,पवन,सूरत, शब्द नाभी में मिले और नाभी लांघकर बंकनाल से उलटकर ये सभी त्रिगुटी सिखर में चढ गए ।।२।।

जन सुखराम अमर घर बोले ।। सुण लीज्यो सब लोई ।।
परम मुगत की चाय हुवे तो ।। राम रटो सब कोई ।। ३ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले, त्रिगुटी आगे मैं दसवेद्वार के अमरलोक के गगन में पहुँचा यह सभी स्त्री-पुरुष सुन लो। तुम्हें भी अमर घर की याने परममुक्ती की चाहना है तो तुम भी मैंने जैसे राम नाम जीभ से धारोधार रटा वैसे रटो ।।३।।

१७८

।। पदराग सोरठ ।।

जोगिया गिगन मंडळ घर खेले

जोगिया गिगन मंडळ घर खेले ।।

काम क्रोध अर मन की ममता ।। गुरू के सबदां पेले ।। टेर ।।

जोगिया,तू जहाँ पहुँचा उसके परे के गगन मंडळ में मैं पहुँचा हूँ और वहाँ मैं मेरे अनघड परमात्मा के साथ खेल रहा हूँ। हे जोगिया,तेरा काम,क्रोध,मन की ममता मरी नहीं वही मेरा काम,क्रोध और मन की ममता गुरु के सतशब्द से खतम् हो गई ।।टेर।।

हाथ न पांव परा नहि पाखाँ ।। नेण बेण नहि बाणी ।।

अगम अनोप अग्याद अगम में ।। बिरळे जन गत्त जाणी ।। १ ।।

मेरे अनघड परमात्मा को जगत के मनुष्य समान हाथ,पैर तथा पंछ्यिों समान परा और पंख नहीं है। उसे हमारे सरीखी आँखें नहीं। उसे जगत के नर-नारी सरीखा मुख नहीं और उसकी वचन या वाणी नहीं है वह अगम याने माया से समझने के परे है,अनोप है उसे माया से उपमा देते आती नहीं,वह अग्याद है,उसकी महिमा गाते नहीं आती,ऐसी उसकी गति है। उसके गति को बिरले जन जानते ।।१।।

अळा न आभो पवन न पाणी ।। रूपरंग नहि काया ।।

मात पिता बेहन नहि भय्या ।। जात पात नहि जाया ।। २ ।।

वहाँ अळा नहीं है,बादल नहीं है,पवन नहीं है,पानी नहीं है,वहाँ यहाँ के माया के देह के रुपरंग समान रुप रंग नहीं है। यहाँ के समान पाँच तत्वों की काया नहीं है। उस अनघड को हमारी माता सरीखी माता नहीं,उसे हमारे पिता सरीखे पिता नहीं। उसे हमारे समान बहन भाई नहीं। उसे हमारे सरीखी जात,पात ये कुछ नहीं। हमारे सरीखा जन्म नहीं।।२।।

अरद उरद बिच धरी उनमनी ।। गेबी गेब दिखाया ।।

अधर अकेला आप निरंजन ।। सुरत सबद संग लीया ।। ३ ।।

आती सांस में और जाती सांस में उनमनी धारण कर गेबी का स्मरण किया तब गेवी गेब याने दसवेद्वार के गिगन में सतगुरु ने दिखाया। यह सतशब्द अधर है,अकेला है,निरजंन याने बिना इन्द्रियोंका है। गिगन मंडल मे मेरे सूरत ने ऐसे निरंजन शब्द का संग किया।३।

टिप-गेबी तीन लोक चवदा भवन,तीन ब्रम्ह के तेरा लोक में ब्रम्हा,विष्णु,महादेव से पारब्रम्ह तक कोई भी इन्हें जानता नहीं,इन किसी को भी उसे खोजते आता नहीं ।

ता की निजर हीर सो आया ।। कवड़ी दाय न आवे ।।

जन सुखराम मिल्या अणघड़ सूं ।। सुरगुण सब छिट कावे ।। ४ ।।

जिसकी नजर हिरो पर पडी उसे कवडी अच्छी लगती नहीं। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मैं अणघड सू मिला और मैंने ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ती अवतार इन सभी सर्गुण देवता को त्याग दिया।।४।।

१७९

।। पदराग सोरठ ।।

जोगिया गिगन मंडळ घर कीया

जोगिया गिगन मंडळ घर कीया ।।

दिन दिन रूप चडे देही पर ।। माहा अमीरस पीया ।। टेर ।।

अरे जोगिया,मैंने तू जहाँ पहुँचा उसके परे के गगन मंडळ में घर किया। मैं वहाँ महा अमीरस पी रहा हूँ इसकारण देही पर अलख,अविनासी पुरुष पाने का तेज झलक रहा और मेरे रुप पर तेज दिन प्रती दिन चढ रहा है ।।टेर।।

गुरू प्रताब साध संग भेटया ।। प्रेम प्रीत तत्त चीना ।।

निस दिन राम नाम लीव लागी ।। बंकनाळ रस पीना ।। १ ।।

सतगुरु के प्रताप से मुझे साधु मिले। उन साधु से प्रेम प्रित लगाकर मैंने तत्त चीना याने खोजा। मुझे रात-दिन रामनाम की लीव लग गई और बकंनाल के रास्ते से शब्द का रस पीया।।१।।

गरजी गिगन धरण धुजाणी ।। जळ बिन पवन रस पीया ।।

नदियाँ चली पिछम के गेले ।। सुरत शब्द संग कीया ।। २ ।।

धरती धुजणे लगी,गिगन मे गर्जना होने लगी,बिना जल और पवन शब्द रस पिया। गंगा, यमुना और सुषमना नदियाँ पश्चिम के बकंनाल के रास्ते से गिगन के ओर बहने लगी। मेरे सूरत ने शब्द का संग किया ।।२।।

धरमराय शिर पांव दिराया ।। सुरत सब्द मिल कीना ।।

तीनु चले मेर सूं आगे ।। त्रिवेणी सुख लीना ।। ३ ।।

मैंने धर्मराय के सिर के उपर चढने के लिए सिढी की। मेरे शब्द ने सूरतके साथ संग किया। यह तीनो नदियाँ गंगा,जमुना,सरस्वती मेरु पर्वत के परे त्रिगुटी गिगन चढी और वहाँ मैने त्रिवेणी संगम में सुख लिया ।।३।।

चंद सूर उलट पलटाया ।। सुषमन का संग लीया ।।

आद पुरष अलख अबन्यासी ।। सो मिल हरि जन जीया ।। ४ ।।

मैंने चाँद,सुरज को उलटा पलटाया और सुषमना का संग लिया। कारण मैंने सुषमना का संग कर दसवेद्वार गगन मंडळ में घर किया। वहाँ मुझे आद पुरुष,अलख,अविन्यासी मिले उनके घर मे मैं खेला ।।४।।

निस दिन ध्यान लग्यो सुंन माही ।। मन निझमन हुय चीना ।।

जन सुखराम मिल्या सुख सागर ।। पीव परश अंग भीना ।। ५ ।।

मेरा निसदिन सुन्न में ध्यान लगा,मेरा अपमन निजमन हो गया। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,मैं मालिक के सुख सागर में मिला और उसके साथ एक अंग हो गया ।।५।।

२२३

।। पदराग भेरू (प्रभाती) ।।

मन रे मे तो कछु न जाणु

मन रे मे तो कछु न जाणु ।।

सतगुरू ग्यान बतावे भारी ।। जब ऊलटी कर ताणू ।। टेर ।।

मन रे,मैं तो कुछ नहीं जानता,सतगुरु भारी ज्ञान बताते तब ज्ञान समज नहीं लेता उलटा तानता,वाद विवाद करता ।।।टेर।।

मुख सूं बोल कहे कुछ नाही ।। संत सरायाँ जावे ।।

गीता बेद भागवत सायद ।। साध सिधसो गावे ।। १ ।।

सतगुरु की मुख के शब्दों से सराहना नहीं हो सकती ऐसा गीता,वेद,भागवत में साक्ष है तथा जगत के सभी साधु सिध्द कहते है फिर भी सतगुरु को मैं नहीं समझ रहा। ।।१।।

ऊलटा होय चडे कोई काँही ।। मन पवना सूं न्यारा ।।

नाड़ नाड मे हुवो अमाऊ ।। फाटे सरीर हमारा ।। २ ।।

संत उलटकर मन और पवन से न्यारे हो जाते है। ऐसे संत के नाड–नाड में अमाऊ प्रेम प्रगटता है उससे शरीर फाटता है। ।।२।।

गोटो अड़े मसलीयाँ चाले ।। और ऊपावन काँई ।।

मन कूं थोंब सुरत चेढांऊँ ।। जब कुछ सरके माँई ।। ३ ।।

जैसे पेट में गोटे चलते मसलियाँ चलती उसको निवारण कर की जगत मे विधियाँ है वैसी घट मे नाम के कारण गोटे और मसलियाँ चलते है। उसे निवारणे के लिए जगत की कोई विधि नहीं है। मन को रोक कर सुरत ऊपर खिंचता हूँ तो धीरे–धीरे घट में नाम के गोटे और मसलियाँ आगे सरकते है।।३।।

आपे धगग चडे जब ऊँचो ।। ब्रहमंड जाय भरीजे ।।

त्रिकुटी नेण फाट व्हे टुकड़ा ।। कहो काहा अब कीजे ।। ४ ।।

आपे धगग जब ऊँचा चढता है तब ब्रम्हांड में भर जाता है। त्रिगुटी में पहुँचने पर त्रिगुटी फाटकर तुकडे होगे ऐसा महसूस होता और अब यह फाटने का कष्ट कैसा सहना यह चिन्ता पड्ती।४।

अेसो ग्यान प्रकास्यो आई ।। द्रब नेण जब खूला ।।

प्रमधाम तो न्यारी दर्से ।। अे आरंभ सब ऊला ।। ५ ।।

ऐसा ज्ञान प्रकाशित हुआ जिससे दिव्य नैन खुले। सभी चरित्र परमधाम के आरंभ के है, परमधाम के नहीं है। परमधाम तो इससे निराला दिखता है ।।५।।

द्रब नेण माया का खूला ।। ब्रम्ह अखंडी सूजे ।।
के सुखराम ब्रम्ह का खुल्याँ ।। परमधाम नर बुजे ।। ६ ।।

माया के दिव्य नैन खुलनेपर पारब्रम्ह होनकाल–पारब्रम्ह होणकाल ही जिधर–उधर सुझता वैसे ही सतस्वरुप ब्रम्ह के नैन खुलने पर सतस्वरुप का परमधाम जिधर–उधर सुझता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।६।।

३१९

।। पदराग कल्याण ।।

साधो भाई तीरथ तो सब कीया
साधो भाई तीरथ तो सब कीया ।।
अेक धाम अेसो हम परस्यो ।। जळ बिन जळ वाँ पीया ।। टेर ।।

साधु भाई,मैने घट में जगत के सभी तीर्थ किए। इन तीर्थो में एक धाम मैंने ऐसा पाया जहाँ जल नहीं है परंतु मैंने वहाँ पानी पीया। ।।टेर।।

कासी कँवळ सबे हम देख्या ।। लोवागर लछ सारा ।।
बदरी जाय बक्या हम अणभे ।। पंच तिरथ लिव धारा ।। १ ।।

घट के अंदर के सभी कमल देखना यह मेरा काशी तीर्थ करना हैं। मेरे अंदर के सभी लक्षण देखना यह मेरा लोहागर तीर्थ करना हैं। मैं अनभय देश की बाणी बोल रहा हूँ यह मेरा बद्रिनाथ तीर्थ करना है और मेरी रामनाम स्मरन में लिव लग गयी यह मेरा पंच तीर्थ है।।१।

अड़द उड़द द्वारका देखी ।। पिराग पिछम राह पाई ।।
जगन्नाथ सो हमने देख्यो ।। उलट गिगन मे जाई ।। २ ।।

आती–जाती साँस में मैंने द्वारका देखी। पश्चिम के रास्तें से चलता यह मेरा प्रयाग तीर्थ है। उलटकर गगन ब्रम्हंड में चढना यह मेरा जगन्नाथ तीर्थ करना है ।।२।।

पोकर धाम अजपो परस्यो ।। उलट चडया गिरनारी ।।
तन केदार ज्योत हम परसी ।। अनहद बाजे बोहो भारी ।। ३ ।।

घट में अजप्पा के प्रताप से उलटकर गिरनार चढा यह मेरा पुष्कर तिर्थ है। शरीर में ज्योती देखी और अनहद बाजे बजते वह मेरा केदारनाथ तीर्थ है। ।।३।।

गंगा जमना ओर सरसती ।। त्रिगुटी जायर न्हाया ।।
कह सुखराम प्रथिवी पर दिखणा ।। तन मे वो मन फिर आया ।। ४ ।।

त्रिगुटी में गंगा,यमुना,सरस्वती नदियों के संगम में न्हाया यह काशी तीर्थ है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मेरा मन सतज्ञान से तन में फिरता यह मेरी पृथ्वी प्रदक्षिणा है । ।।४।।

३५३

।। पदराग भैरू (प्रभाती) ।।

संतो देख्या इचरज भारी

संतो देख्या इचरज भारी ।।

अमर लोक मे संत बिराजे ।। वाँ सुरत लिव म्हारी ।। टेर ।।

संतो,मैंने तीन लोक चौदा भवन में ऐसा कोई भी आश्चर्य नहीं है,पर्चा नहीं है,या चमत्कार नहीं है ऐसा भारी आश्चर्य मेरे घट में देखा। मैंने घट में अमरलोक मे बिराजे हुए संतो को देखा। यह भारी आश्चर्य दिखने के कारण मेरी सूरत और लिव संसार के मोह ममता मे जो सदा मगन रहती थी वह सुरत,लिव संसार से सदा के लिए उठ गई और जहाँ संत बिराजे है ऐसे अमरलोक में एक टक लग गई है ।।टेर।।

फाड़र पीठ चडया आकासा ।। हे कुद्रत लिव धारा ।।

अष्टांग जोग सांख नहीं पवना ।। अेसा खेल हमारा ।। १ ।।

मैं सतशब्द के जोर से पीठ के इक्किस मणियों को फाड्कर याने इक्किस स्वर्ग को पार कर आकाश याने ब्रम्हंड में दसवेद्वार में पहुँचा। वहाँ मेरी कुद्रती ही याने बिना किसी प्रयास से ही अपने आपही सतस्वरुप कुद्रत से लिव की धारा लग गई। वहाँ पर अष्टांग जोगी,सांख्य जोगी,पवन जोगी यदि पच पच कर मर गए तो भी कोई भी नहीं पहुँच पाते ऐसा अद्भुत खेल याने इचरज मैंने सतज्ञान से देखा।।१।।

ऊलटी गंग चड़ी गिरनारा ।। छुटी सेंसर धारा ।।

करणी सकळ ग्यान कर देख्या ।। सत्त शब्द तो न्यारा ।। २ ।।

गंगा नदी पहाड से पाताल के ओर चलती यह जगत के सभी लोगो को मालूम है परंतु वही गंगा नदी मेरे घट में पाताल से उलटकर बकंनाल के रास्ते से ब्रम्हंड के पहाड पर चढकर हजार धारा से छुटी यह मुझे दिखा। ऐसे नीचे से ऊपर गंगा नदी उल्टी बहने का अनमोल प्रसंग मेरे घटमें हुआ। ऐसी नदी पहाड पर चढकर उलटा बहनेका प्रसंग ब्रम्हा,विष्णु, महादेव,शक्ति की करणियाँ और ज्ञान से होता क्या यह मैंने खोजा तो दिखा की सतशब्द के सत्ता के बिना ऐसा चमत्कार किसी माया की करणियाँ,ज्ञान से नहीं होता इसलिये आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,सतशब्द सभी माया की करणियाँ और ज्ञान से अनोखा हैं।।२।।

बादल विज बिना इन्द्र गाजे ।। तीन लोक के मांही ।।

षट सुन राग छत्तीसूं न्यारी ।। अखंड खंडे कछु नाही ।। ३ ।।

जैसे जगत में घने बादल आने पर तीन लोको में बिजली चमकती और इंद्र की गर्जना सुनाई देती जैसे जगत में बादल आते वैसे बादल भी नहीं है,बिजली भी नहीं है फिर भी इंद्र के समान पूरे देह में गर्जना हो रही है ऐसा आश्चर्य मैंने देह में देखा। यह गर्जना छः राग और छत्तीस रागीनी से अलग,न खंडनेवाली अखंडित मेरे घट में लग गई।।३।।

सत्ता समाध लगी घट मे रे ।। त्रिकूटी संजम होई ।।

अला पिंगला सखमन नारी ।। रमे संग मिल दोई ।। ४ ।।

मेरे त्रिगुटी में गंगा,यमुना,सुखमना का त्रिवेणी संगम हुआ है। यह तीनो गंगा,यमुना और सुषमना नारियाँ एक दूजे के संग घुल-मिल कर रम रही हैं। मेरे घट में सत्ता समाधी लग गई याने मै रात-दिन मन से,देह से संसार में रम रहा हूँ और मेरा हंस संसार में जरासा भी न रमते सतशब्द के साथ अखंड्ति मगन होकर रम रहा है ऐसे सतशब्द के साथ संसार में रमते-रमते अखंड्ति मगन होकर रमने के स्थिति को सत्ता समाधी कहते। ।४।

के सुखराम सब्द जोरावर || पायाँ सूं पत आवे ||
बिन पायां केहे नर बोता || दिलका भरम न जावे || ५ ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,यह सभी चमत्कार सतशब्द के सत्ता के पराक्रम से हुए। इन चमत्कारों पर बिना देखे सुनने पर विश्वास नहीं आता। विश्वास तो देखने पर ही होता है। ऐसे भारी चमत्कार का ज्ञान बिना पाए जगत के ज्ञानी,ध्यानी.साधू ,सिध्द,संसार के नर नारियों के आगे अपने ज्ञान में कहते परंतु ऐसे कहनेवाले ज्ञानी, ध्यानियोंके दिल को सदा यही भ्रम खाता की मैं कह रहा हूँ यह सत्य है या असत्य है।५।

३५९

|| पदराग भेरू (प्रभाती) ||

संतो कहयाँ पत नहि आवे
संतो कहयाँ पत नहि आवे ||
किरपा करे दया गुरुदेवजी || जब शिष का भ्रम जावे || टेर ||

संतो,अमरलोक पहुँचानेवाले सतशब्द के पर्चे चमत्कार जगत के लोगो को समझाता हूँ तो जगत के लोगो को सतशब्द के अमरलोक ले जानेवाले पर्चे चमत्कार पर बिना पाए कारण विश्वास नहीं आता। शिष्य पर जब सतगुरु कृपा करके याने दया करके शिष्य के घट में सतशब्द प्रगट करेंगे तो यह सतशब्द हंस को अमरलोक बिना साधना,बिना ध्यान और बिना स्मरण ले जाता यह विश्वास हो जाता फिर उसे सतशब्द के प्रति कोई भ्रम नहीं रहता ।।टेर।।

सासा बिना पवन बिना पीवण || ना निजमन मन कोई ||
सुरत र निरत नहीं चित चेतन || बस्त अमोलक होई || १ ||

यह सतशब्द साँस याने पवन के समान नहीं है,हंस के निजमन एवम् मन के समान नहीं है। यह सतशब्द हंस के सुरत,निरत,चित्त और चेतन के समान भी नहीं है मतलब जगत के कोई वस्तु समान नहीं है। जगत के सभी वस्तुओं से न्यारा है। यह सतशब्द साँस, निजमन,मन,सुरत,निरत,चित्त और चेतन से अनमोल जिससे कभी भी अमरलोक में जाते आता ऐसा अनमोल है। ।।१।।

पाँखा पराँ बिना पंछी देख्या || नेण बेण कुछ नाही ||
आठूं पोर बतीसूं घडीयाँ || ऊडे गिगन घर माही || २ ||

यह सतशब्द जैसे पंछ्यिों को उड्ने के लिए पंख और पर रहते ऐसे पंख,पर के बिना

पंछी के समान गगन में उड्ते दिखा। जैसे पंछी को आँखे और बोलने के लिए मुख है वैसे सतशब्द को पंछी के समान माया चक्षु से दिखनेवाली आँखे और मुख नहीं है। वह सत आँखों से खंड ब्रम्हंड पूरा निहारता और वहाँ का ज्ञान देखकर बोलता। यह पंछी के समान गगन में उड्ता परंतु उड्ते-उड्ते पंछी जैसे थक जाता वैसा यह सतशब्द थकता नहीं वह अखंड्ित आठो प्रहर,बत्तीस घड्ियाँ याने रात-दिन गगन घर में उड्ते रहता ।।२।।

सोऊँ तो सोवण नहीं देवे ।। जुग सूं हेत न बांधे ।।
पाँच पचीस किया मुख आगे ।। चोक गिगन दिस साँधे ।। ३ ।।

जैसे पंछी रात को सोता वैसे यह सतशब्दरुपी पंछी रात या दिन मे कभी नहीं सोता और साथ में मुझे भी नहीं सोने देता तथा यह सतशब्दरुपी पंछी मुझे जुग से,कुल परिवार से कभी दोस्ती नहीं करने देता। यह सतशब्दरुपी पंछी जैसे गरुड,नाग को मुख में दबाकर गगन दिशा में ले उड्ता ऐसे मेरी नागरुपी पाँचो इंद्रियों के विषय रसो को और पच्चीस प्रकृतियों को मुख में दबाकर मुझे सतस्वरुप गगन के दिशा में ले उड्ता। ।।३।।

के सुखराम सब्द की मैमा ।। केंता बणे न काई ।।
साझन ध्यान बिना सुण सिंवरण ।। लिया अमर घर जाई ।। ४ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,सतशब्द की महिमा मुख से कहने पर बनती नहीं। इसकी महिमा अजब,अनमोल है। यह हंस को माया ब्रम्ह के साधन,ध्यान, सिमरन किए बिना अमर घर ले पहुँचता। ।।४।।

४००

।। पदराग धनु प्रभाति ।।

त्रिगुटी मेहेल अनुपा हो
त्रिगुटी मेहेल अनुपा हो ।। जां रात दिवस नहीं धूपा हो ।। टेर ।।

त्रिगुटी का महल अनुप है,(उस महल को,किसकी भी उपमा नहीं दी जा सकती,उपमा रहित अनुप है।)वहाँ त्रिगुटी में रात भी(अज्ञानता की)नहीं। और दिन(ज्ञान)भी नहीं और धूप भी नहीं। ।। टेर ।।

सुणज्यो हरिजन आणी हो ।। कहु प्रमपद छाणी हो ।। १ ।।

तुम हरीजन आकर सुनो,मैं परमपद तत्त का विचार तुम्हें बताता हूँ । ।। १ ।।

तीन लोक का सांधा हो ।। वांहाँ मठ त्रिगुटी बांधा हो ।। २ ।।

स्वर्ग,मृत्यु और पाताल इन तीनो लोगो के उपर,(सत्तलोक)का सांधा(जोड)है। वहाँ मैने मठ बनाया है। ।। २ ।।

सत्त लोक यां आगे हो ।। ज्याँ जम का डर नहि लागे हो ।। ३ ।।

सत्तलोक त्रिगुटी के आगे है। वहाँ सत्तलोक में,यम का भय नहीं रहता । ।। ३ ।।

त्रिगुटी लग जम जावे हो ।। ब्रम्हा बिसन ढहावे हो ।। ४ ।।

त्रिगुटी याने भृगुटी तक यम जाते रहता है और ब्रम्हा और विष्णु को यम मार डालता

है।४।

ओऊँ सोऊँ सासा हो ।। वांहाँ लग जम का बासा हो ।। ५ ।।

ओअम् और सोहं साँस है,वहाँ तक यम का,आना–जाना और रहने का स्थान है। ।।५।।

त्रिगुटी परे मुकामा हो ।। नव लंघ केवळ धामा हो ।। ६ ।।

मेरा त्रिगुटी के आगे मुक्काम है। त्रिगुटी के परे निराकार के नव लोग पार कर गये याने आगे सतस्वरुप कैवल्य धाम है। ।। ६ ।।

निरंजन अवगत दोई हो ।। वो पद पेला होई हो ।। ७ ।।

निरंजन याने जीवब्रम्ह और अविगत याने पारब्रम्ह ये दो है और यह जो मैं कहता हूँ वह सतस्वरुप पद निरंजन और अविगत के आगे है। ।। ७ ।।

कहे सुखदेव बिचारी हो ।। तत्त वांसुं पद न्यारी हो ।। ८ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,उस सतस्वरुप पद का विचार करो,तत्त पद याने सतस्वरुप जीवब्रम्ह पद तथा पारब्रम्ह पद से अलग है। ।। ८ ।।

०६

।। पदराग धमाल ।।

अनाहद सब्द सुं नाद हुयो

अनाहद सब्द सुं नाद हुयो ।। जां कूं लखेज बिरळा जाण ।। टेर ।।

अनाद शब्द से नाद की उत्पति हुई यह उत्पति कैसे हुई यह कोई बिरला संत ही जानता। यह उत्पति सभी ज्ञानी ध्यानी नहीं जानते। ।।टेर।।

नाद शब्द सुं अनहद इच्छा ।। तांको हे सोऊँ सांस ।।

याँ शब्द सुं सकळ बिस्तारा ।। तीनुं चवदे बांस ।। १ ।।

नाद,अनहद इच्छा के मिलन से सोहम और ओअम ये साँस जन्मे। इस सोहम ओअम से तीन लोक चौदा भवन का विस्तार हुआ ।।१।।

यासे ही रंरकार धुन ऊठे ।। याँ से ओऊँ कार ।।

सबके शीश जंग सुर गाजे ।। वो सत्त मूळ बिचार ।। २ ।।

इस सोहम् ओअम से ररंकार ध्वनि उठी। इससे ओम्कार जन्मा। इन सभी शब्दों के सिरपर जिंग ध्वनि गरज रही। जिंग ध्वनि के सिरपर जो ध्वनि है वह सतध्वनी सभी ध्वनियों की मुळ ध्वनि है यह समझो। ।।२।।

गायत्री सुन मंतर जंतर ।। सब सोऊं का होय ।।

बेद कुराण पुराण स गीता ।। बाणी भाखत जोय ।। ३ ।।

गायत्री मंत्र,जंतर आदि सभी सोहम् से जन्मे। ऐसे ही ये सभी वेद,कुराण,पुराण,गीता जगत में ज्ञानी ध्यानी कहते है वे सोहम से जन्मे ।।।३।।

राम भजन सुं सब गम होई ।। देख्या या तन माय ।।

रंरकार जंग शब्द कहिजे ।। नाद अनादु जोय ।। ४ ।।

यह सब मुझे राम भजन से मेरे तन में ही समझा। ररंकार जिंग,नाद,ये सभी शब्द अनाद से जन्मे ।।।४।।

मूळ शब्द अखंड हे मांहि ।। हले चले नहिं कोय ।।
जन सुखदेव पंच भूत के हो ।। परे शब्द ऊ होय ।। ५ ।।

यह अनाद जिसके आधार से चलता है वह मुळ शब्द मेरे घट में प्रगटा है,वह अखंड्ति है, वह इन शब्दों के समान जन्मता नहीं, वह स्थिर है,वह इन शब्दों के समान हलता चलता नहीं मतलब जन्मता और मरता नहीं। सदा से प्रगट है। यह सभी शब्द पाँच तत्व के देह के सीमा तक प्रगटते देह के सीमा के परे याने दसवेद्वार के परे मुळ शब्द पाच तत्व के देह में और देह के परे दसवेद्वार के परे प्रगटता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।५।।

३२

।। पदराग आसा ।।

बांदा अगम देस पेड़याँ दस आगे
बांदा अगम देस पेड़याँ दस आगे ।।
अणंद लोक का हे गुरू न्यारा ।। वाँ संग कुदरत जागे ।। टेर ।।

बांदा,अगम देश यह दस सिढीयों के परे है। उस अगम देश याने आनंद लोक के गुरु अलग है। उनके संग से काल को कुचलनेवाली कुदरत कला जागृत होती। ।। टेर ।।

पेड़ी सात परा लग आगे ।। सुतिया ध्रम बतायो ।।
अे पेड़ी कोई मोय बतावे ।। जिण बेहद घर पायो ।। १ ।।

सात सिढियाँ याने सुतिया धर्म है याने शक्ति के देश को पहुँचानेवाली है। सात सिढियों के उपर चिदानंदब्रम्ह,शिवब्रम्ह तथा पारब्रम्ह यह ब्रम्ह की सिढियाँ है। जिसने पारब्रम्ह सिढि पहचानी वह ये दस सिढियाँ बताएगा उसके परे एक श्रेष्ठ अगम देश की सिढि है। ।। १ ।।

केंता फिरे भेद नहीं जाणे ।। से नर अेसा होई ।।
लादे गुळ बेल के ऊपर ।। वे सुख नहीं जाणे कोई ।। २ ।।

अगम देश कहते फिरते परंतु अगम देश को जाने का भेद जानते नहीं वे मनुष्य जगत में जैसा बैल रहता वैसे है। बालदा अपने बैल के पीठ पर गुड की बोरी लादता। गुड मिठा रहता परंतु बैल अपने पीठ पर बोरी पर बोरी रखके एक जगह से दूर दूसरी जगह ले जाता। उस बैल को इतना अंतर पार करने पर भी गुड का एक कण इतना भी मिठा आनंद मिलता नहीं इसका कारण बैल को गुड खाने का और मिठेपन का भेद मालूम नहीं रहता। उसी तरह जीव अगम देश की बातें युगानयुग से करता परंतु बातें करनेवाले को भेद मालूम न होने के कारण कुद्रतकला का सुख मिलता नहीं। ।। २ ।।

पेड़ी सात जिकारी रितां ।। न्यारी करर बतावे ।।
कोण ध्रम कुण पेड़ी को ।। न्यारो कर कर लावे ।। ३ ।।

सुतिया धर्म तक की सात सीढीयाँ कोई अलग करके और कौनसा धर्म किस सीढी पर ले जाता यह कोई बताएगा क्या? ।।३ ।।

के सुखराम ध्रम पेड़याँ को ।। नाँव ने: अंछर पावे ।।
तो पूँथे पेड़याँ दस ऊपर ।। खाली धरम न जावे ।। ४ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते,जिनके घट में ने:अक्षर नाम प्रगट होता वे संत दस सिढीयों के उपर पहुँचते वे फिरसे इन निचे की दस सिढीयो में कभी आते नहीं। ।। ४ ।।

३७

।। पदराग आसा ।।

बांदा गुरू तजीयाँ दोष ओई
बांदा गुरू तजीयाँ दोष ओई ।।
आगे चीज फेर वा पावे ।। तो पाप काय को होई ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज हरजी भाटी से कहते है,कि वर्तमान गुरु त्याग उस गुरु से श्रेष्ठ गुरु मिलते होंगे तो गुरु त्यागने वाले को कोई भी पाप,दोष लगते नहीं। ।। टेर ।।

सतगुरू छाड़ जाय नर कोई ।। तिन लोक फिर आवे ।।
अेसो संत कोई नहीं मिलीयो ।। आ कुद्रत कळा जगावे ।। १ ।।

परंतु सतगुरु को त्यागने से बहुत बड़ा पाप लगता। तीन लोक में सतगुरु से श्रेष्ठ गुरु कहाँ भी घूमा तो मिलता नहीं। सतगुरु को त्यागने से तीन लोक में कुद्रत कला जागृत करनेवाले संत कहाँ भी मिलेंगे नहीं। ।।१।।

अनंत ऊपाय करे नर आगे ।। नाँव न जाण्यो कोई ।।
अेसा गरू फेर नहीं पायो ।। ज्यां संग किरपा होई ।। २ ।।

सतगुरु को त्यागता और घट में नाव जागृत करने के लिए अनेक गुरु करके,उनके अनंत उपाय करता परंतु नाव जागृत होता नहीं याने जिसके संग से घट में नाव जागृत होने की कृपा होती,ऐसे सतगुरु आगे किए हुए अनेक गुरु में फिरसे मिले नहीं । ।। २ ।।

क्रसो अेक राज सूं रूठो ।। ओर मुलक में जावे ।।
आगे खेत मिल्या घर आछा ।। तो काही कूं दु:ख पावे ।। ३ ।।

जैसे एखाद किसान राजा से रुठकर पर राज्य में जाता। वहाँ उसे पुराने राजा से अच्छा घर और खेती मिली तो पुराना राज्य छोड़ने का दु:ख क्यों होगा?ऐसे ही पुराने गुरु की कृपा से घट में नाम जागृत हुआ नहीं इसलिए गुरु को छोड दिया और आगे घट में नाम जागृत करा देनेवाले गुरु मिले तो पुराने गुरु छोड़ने का दु:ख क्यों होगा? ।। ३ ।।

बोपारी सोदो कर फेरे ।। अड़बी पड़ीयां कोई ।।
आगे चीज ब्होत जो मिलगी ।। भुक काहे की होई ।। ४ ।।

जैसे व्यापार में सौदा करने की आडी पडी और सौदा तुट गया और आगे उससे भी अच्छा उसी किंमत में सरस सौदा मिला तो पुराना सौदा हाथ से गया इसलिए उसका

कोई क्यों दु:ख करेगा वैसेही हाथ में आया हुआ नया अच्छा सौदा छोड्के पुराना हलका सौदा प्राप्त करने की इच्छा तो भी कोई क्यों करेगा?वैसेही घट में नाम प्रगट कर देनेवाले नये सतगुरु मिले और पुराने गुरु के उपाय नुसार सभी कोशिश करके भी घट में नाम प्रगट हुआ नहीं ऐसे पुराने सतगुरु कहकर गुरु त्यागने का दु:ख क्यों होगा और अभी नाम प्रगट करके नये मिले हुए सतगुरु त्यागकर पुराने सतगुरु का संग करना ऐसी इच्छा क्यों होगी?।। ४ ।।

यूं गुरू सीख सिष कूं देवे ।। बिध्ध बतावे सोई ।।
वा बिध्ध जाग जाग सब जाणे ।। तो कसर काय की होई ।। ५ ।।

गुरु ने शिष्य को उपदेश देकर विधी दिखाई। जो विधी दिखाई थी वह विधी जगह-जगह गुरु बताते परंतु कुछ कारण से पहला उपदेश देनेवाला गुरु त्यागा और वह विधी बतानेवाला दुजा गुरु धारण किया तो विधी मिलने में क्या कसर रही। ।। ५ ।।

मंत्र जाप कूंचीयाँ मुद्रा ।। ग्यानी सब ही जाणे ।।
कुद्रत कळा नाव की जागे ।। आ कोई नाँय पिछाणे ।। ६ ।।

यह सभी मंत्र,यह सभी जप और योगाभ्यास की कूँचिया और मुद्रा साधना यह सभी ज्ञानी जानते परंतु इस नाम की कुद्रतकला जागृत होती इसे कोई भी पहचानता याने जानता नहीं। ।। ६ ।।

कुद्रत कळा सता सतगुरू की ।। ध्यान भजन मे नाही ।।
ईण सतगुरू कूं तजे सिषरे ।। तो फिर पावे आ ना कांही ।। ७ ।।

यह नाम जागृत करने की कुद्रतकला याने सतगुरु की सत्ता माया के ज्ञान,ध्यान,मंत्र,जप, योगाभ्यास की साधना मुद्रा आदि में मिलती नहीं। यह नाम जागृत करने की सत्ता सतगुरु में रहती,ऐसे सतगुरु त्यागने से आगे नाम जागृत करने की सत्ता फिर से ज्ञान,ध्यान, भजन,मंत्र,जप योगाभ्यास,मुद्रा आदि में कही पर भी मिलेगी नहीं। ।। ७ ।।

ब्रम्हा बिसन महेसर पासे ।। नाव कळा नहीं होई ।।
ओर सिष्ट की कुण चलाई ।। सक्त न जाणे कोई ।। ८ ।।

यह नाम कला ब्रम्हा,विष्णु,महादेव इनके पास नहीं रहती। उसीप्रकार ब्रम्हा,विष्णु,महादेव इनके उपर रहनेवाले शक्ति के पास भी नहीं रहती फिर सृष्टी में रहनेवाले ब्रम्हा,विष्णु, महादेव,शक्ती इनसे उत्पन्न हुए वे ज्ञानी,ध्यानियों के पास कहाँ से आएगी?।। ८।।

जो इतबार न मानो कोई ।। बचन हमारा भाई ।।
तो कोई संत केवळी हूवा ।। बिष्ण बंदे किम आई ।। ९ ।।

यदी आपको मेरे वचनो पर विश्वास नहीं आता होगा तो विष्णु जगत के केवली संतों को वंदन करता यह मेरे वचन सत्य है की नहीं यह जाँच कर देखो। ।। ९ ।।

जे औतार आवीया जग मे ।। जना कूं ब्होत सराया ।।

जो गुण किसो क्हो सब ग्यानी ।। वे तो धणी सिष्ट का भाया ।। १० ।।

जो ब्रम्हा,विष्णु,महादेव के अवतार जगत में आये उन्होंने संतो की बहुत महिमा की। ब्रम्हा, विष्णु,महादेव यह तो सृष्टी के मालक थे फिर सतगुरु में इनसे कौन से अधिक गुण थे? इसलिए इनकी शोभा ब्रम्हा,विष्णु,महादेव इन्होंने की इनके जवाब सभी ज्ञानयिों ढुँढना। ।।१०।।

ब्रम्हा बिसन महेसर सक्ती ।। फिर औतार से जागे ।।
यांरी भक्त करे जिण जन के ।। अे चरणा नहीं लागे ।। ११ ।।

ब्रम्हा,विष्णु,महादेव और शक्ति और इन चारों के जगत में अवतरे हुए अवतार इनकी भक्ति करके जो जगत में भक्त हुए उनके ये ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति और अवतार कोई भी पैर पडे नहीं। ।। ११ ।।

तिन रित का जन हे जग मे ।। न्यारा कर्र पिछाणे ।।
तो ईण ग्यान भेद मे समजे ।। नहीं तो कोय न जाणे ।। १२ ।।

इस जगत में तीन प्रकार के संत है। ये तीनों प्रकार के संतों की पोहोच,पराक्रम अलग-अलग कैसे है यह सतज्ञान से पहचानो तब कुद्रतकला के ज्ञान को और भेद को समझेंगे। माया के ज्ञान से पहचान ने की कोशिश की तो जगत में तीन प्रकार के संत है। यह कोई भी ज्ञानी को समझेगा नहीं। ।।१२।।

केईक संत सक्त लग होई ।। दुजो होण ब्रम्ह लग पावे ।।
तिजा संत सता स्वरूपी ।। अणंद लोक ज्हाँ जावे ।। १३ ।।

इस जगत में कुछ संत शक्ति तक माया के पराक्रम के है। इन संतो के पराक्रम से हंस शक्ति लोक तक पहुँचता। यह भक्त शक्ति के परे रहनेवाले आनंद लोक को कभी भी नहीं पहुँचता। तो कुछ संत होनकाल के पराक्रम के रहते। इनके पराक्रम से हंस होनकाल पारब्रम्ह तक पहुँचता परंतु परे रहनेवाले आनंद लोक को कभी भी पहुँचता नहीं। उसीप्रकार कुछ विरले संत सत्तास्वरुपी है उनके सत्ता से जीव आनंद लोक जाता। इसीप्रकार तीन प्रकार के संत जगत में है। ।। १३ ।।

बळ पांडव हरचंद अे भाई ।। जग मे संत क्हाणा ।।
याँरी स्हाय करी औताराँ ।। सतगुरू कर नहीं जाण्या ।। १४ ।।

बळी,पांडव और हरीश्चंद्र यह सभी इस जगत में संत कहलाए इन संतो की अवतारों ने सहायता की,परन्तु इन संतो को अवतारों ने सत्तास्वरुपी संत गुरु माने नहीं। ।। १४ ।।

महेमा करी ग्यान मे सब की ।। स्हाय सकळ की कीवि ।।
चरणा जाय पडया नहीं याँरे ।। ना दिक्षा सो लिवी ।। १५ ।।

इन संतो की अवतारों ने ज्ञान से महिमा की और सहायता भी की परन्तु यह अवतार इन संतों के पैर पड़े नहीं अथवा इनके शरण में जाकर अवतारों ने दिक्षा भी ली नहीं। ।।१५।।

सतस्वरूप ऊपासी जन हुवा || निजनांव जिन पायो ||
ज्हाँ औतार आण कर निवीया || सरणो आण संभायो || १६ ||

सतस्वरुप की उपासना करके जो संत हुए उनके घट में निजनाम प्राप्त हुआ। ऐसे निजनामी संतो के पास जाकर अवतारो ने वंदन किया और उन निजनामी संतो का अवतारो ने शरणा भी लिया। || १६ ||

बडी पहुँच जक्त में कहिये || यूं सुण बडा न होई ||
बडी पहुँच कहे सो ग्यानी || इष्ट बिज मे जोई || १७ ||

जगत में बड़े पराक्रमी संत करके लाखो की संख्या से लोक मानते परंतु सत्त ज्ञानी कहते बड़ी पहुँच संख्या लाखो से होने कारण होती नहीं। तो संत हंस को अगम को पहुँचाता की नहीं इस सतस्वरुप इष्ट के बीज से होती यदि संत के पास सतस्वरुप इष्ट का बीज होगा तो संत बडी पहुँचवाला है ऐसे सतज्ञानी मानते और लाखो से जिसे लोग मानते परंतु उनके पास सतस्वरुप इष्ट का बीज नहीं होगा तो उस संत को सतस्वरुप पराक्रम के संत न मानते काल का ग्रास रहनेवाले संत मानते। || १७ ||

नेमनाथ के चर्णा लागा || किष्ण आण कर भाई ||
ओर संत का च्रण गहया व्हे || तो कहो सिष्ट के माई || १८ ||

अवतार कृष्ण नेमनाथ के पैर लगा परन्तु कृष्ण नेमनाथ छोड्कर सृष्टी में के अन्य कोई भी संत के पैर पड़ा क्या?ये ज्ञानियों ने ढुँढो । || १८ ||

जेसे बीज सकळ को न्यारो || युं भक्त्याँ को जोई ||
बडा हुवाँ यूं बीज न पलटे || मोख न पावे कोई || १९ ||

जैसे जगत में वृक्ष उत्पन्न करने का बीज अलग-अलग हैं। उसीप्रकार भक्ति का बीज अलग-अलग है। अनेक लोग मानते इसलिए संत में होनेवाले माया के भक्ति के बीज पलटकर मोक्ष का बीज होता नहीं याने मोक्ष में ले जानेवाले बीज सिवा अन्य भक्तियों के बीज से किसी को भी मोक्ष प्राप्त होता नहीं। || १९ ||

बच्चो सिंघ को सिंघ कवावे || गडरो बेल न होई ||
यूं केवळ बीज थेट सूं न्यारो || भेद न जाणे हे कोई || २० ||

जैसे सिंघ के बच्चों को बन का राजा सिंघ ही कहते। उस सिंघ के बच्चे से मेंढा या बैल शरीर से कितना भी यदी बड़ा हुआ तो भी,उस मेंढ़े को या बैल को बन का राजा सिंघ कहेंगे नहीं। ऐसे ही कैवल्य के भक्ति का बीज आदि से सिंघ के बीज सरीखा अलग है,इसका कोई भी भेद जानता नहीं। || २० ||

के सुखराम सुणो सब कोई || सतगुरू सोय कुहावे ||
कुदरत कळा सत्ता सूं जागे || मोख तके जन जावे || २१ ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ज्ञानी,ध्यानी से कहते है,कि सतगुरु शिष्य के घट

में,सतगुरु सत्ता से कुद्रत कला प्रगटते ऐसे संत को सतगुरु कहते और ऐसे सतगुरु द्वारा संत मोक्ष में जाता। || २१ ||

४९

|| पदराग आसा ||

बांदा ने: अंछर तत्त साचो

बांदा ने: अंछर तत्त साचो ||

प्रेम बिना भक्ति नाँव जुग मे || याँरो हेत सुण काचो || टेर ||

बांदा ने:अंछर तत्त सच्चा है। यह ने:अंछर तत्त सतगुरु से प्रेम होनेपर घट में प्रगटता। मन का हट करके यह ने:अंछर नाम घट में प्रगट होता नहीं इसलिए हट करके माया की साधनों से ने:अंछर घट में प्रगट होगा यह समझ रखना झूठी हैं याने कच्ची है। || टेर ||

बेद ब्यास बिन ब्यास हुवा रे || आज लग जुग माही ||

बेद पुराण बाचकर तिरीयो || तिको कहे क्युं नाही || १ ||

आज तक वेद व्यास छोड के अठारह पुराण पढ पढ के हुयेवे व्यास जगत में बहुत हुए। उसमें से जैसा वेद व्यास तिरा वैसा पुराण पढ पढ के हुआवा व्यास एक भी तिरा क्या? यह तुम बताओं। || १ ||

बेद पुराण सुण कोई तिरीयो || बिना परिक्षत भाई ||

सो तुम सोज बताओ हम कूं || आज लग जुग माई || २ ||

वेद,पुराण पढ के परीक्षित राजा तिरा। परीक्षित राजा के सिवा वेद,पुराण पढ के आज तक कोई तिरा क्या?यह तुम खोज के बताओं। || २ ||

तन मन अरप बंदगी करके || जन तिरीया जुग माई ||

द्वापर ऊरे अनंत की सायद || नर सब केंता जाई || ३ ||

सतगुरु को तन और मन अर्पण करके जिन्होंने-जिन्होंने सतगुरु की भक्ति की ऐसे द्वापार युग तक अनंत संत तिर गए इसकी सभी ज्ञानी,ध्यानी मनुष्य साक्ष भरते। ||३||

ब्यास तिऱ्यो सो कहीये मोही || प्रगट सायद लावो ||

बेद ब्यास कूं सब जुग जाणे || अेसो आण बतावो || ४ ||

परंतु पुराण पढ-पढ के कोई व्यास तिरा होगा तो उन तिरे हुए संत सरीखी उसकी प्रगट साक्ष दिखाओं। जैसे वेद व्यास तिरा इसकी सभी जगत साक्ष भरता वैसे वेद व्यास छोड के दुसरा कोई भी व्यास तिरा होगा तो उसकी वेद व्यास सरीखी साक्ष लाओ। || ४ ||

पुराण छाड़ कर जप तप किया || के किण भक्त समाई ||

ज्याहाँ पुराण को क्हा सुण बटीयो || काहा सुणणे को भाई || ५ ||

पुराण सुनना या पढना छोड के पुराण में तिरने के लिए बताए हुए विधी नुसार जप,तप किया या अन्य पुराण में की विधियाँ की तो भी वे तिरे नहीं याने पुराण में के जप,तप, क्रिया करके भी तिरे नहीं तो फिर सिर्फ पुराण सुनने से और पढने से कैसे तिरेंगे?||५||

बेद पुराण सुण्या नहीं पढीया ।। गीता की पत नाही ।।
नाँव रटे रट अनंत ऊर धरिया ।। से प्रगट जुग माही ।। ६ ।।

वेद,पुराण सुना नहीं या पढा नहीं और भागवत गिता के नाम पर जरासा भी विश्वास रखा नहीं,भागवत गिता में बताई हुई विधी की नहीं और घट में राम–राम रटके ने:अंछर नाम प्रगट किया ऐसे नाम प्रगट किए हुए अनंत हंस उधरे यह जगत मे प्रगट है। ।।६।।

जप तप कर भक्त कर तिरीया ।। से नहीं पूँथा कोई ।।
तुम बाचर पुराण मोख कूं चावो ।। सो बडो अचंबो मोई ।। ७ ।।

पुराणो में दिए हुए जप,तप तथा अन्य भक्ती,विधि करके कोई मोक्ष में पहुँचा नहीं और तुम पुराण पढ पढ के मोक्ष को पहुँचा ऐसा समझते तो तुम कैसे पहुँचोगे इसका मुझे बडा अचंभा होता। ।। ७ ।।

के सुखराम सुणो सब ग्यानी ।। पाछा सूँ बुध लावो ।।
कुण कुण ग्यान तिऱ्या जन केसे ।। सोई सोई बिध संभावो ।। ८ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले,आप सभी ज्ञानी पिछे तिरे हुए संतो को देखके तुम्हारी बुध्दी जगह पर लाओ। पहले कौनसे ज्ञान से संत तिरे और कौनसे ज्ञान से संत होनकाल में अटक के दु:ख में पडे वह खोजो और जिस विधी से संत तिरे वही विधि तुम भी धारण करो। ।। ८ ।।

५०

।। पदराग आसा ।।

बांदा ने: अंछर बिन अे नहीं लाँगो
बांदा ने: अंछर बिन अे नहीं लाँगो ।।
सुतिया ध्रम सकळ बिध सत्त हे ।। भ्रम जक्त का भांगों ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज हरजी भाटी को कहते है,ने:अंछर के सिवा ये दस सिढीयाँ लाँघी जाएगी नहीं,ये सुतीया धर्म सत्य हैं परंतु इन सभी धर्म से आनंदलोक को जाते आता नहीं इसलिए तु जगत में जाकर सुतीया धर्म से आनंदलोक में जाते आता यह जगत का भ्रम तोड। ।। टेर ।।

भोजन कियाँ देवतां रिजे ।। आ सुण पेली पेड़ी ।।
चोका चंदण फूल घस केसर ।। करो दुसरी नेड़ी ।। १ ।।

मुख से भोजन करने से अन्न देवता रिझते। भोजन मुँख से होता इसलिए मुँख यह पहली सीढी है। चोका,चंदन,केसर घिस के फूल लगाना यह नाक की दुसरी सीढी है। ।। १ ।।

बस्तर प्रणाम द्रब चड़ाया ।। ब्रम्हा रिजे भाई ।।
गऊं लोक मे खबर पहूँचे ।। च्यार पेडीयाँ ताई ।। २ ।।

तिजी सीढी आँखें है। वस्त्र चढाना,प्रणाम करना और द्रव्य चढाना यह आँखों से देख के करते। इस विधी से ब्रम्हा रिझता और गौ लोक रिझता इसीतरह चौथी सीढी है। ।।२।।

ग्यान गरीबी बचन निर्मळ ।। कर जोड़े नर कोई ।।
लिछमी बिस्न खुसी व्हे दोनूं ।। खट पेड़ी अे जोई ।। ३ ।।

कोई ज्ञान सुनता है और कहता है गरीब याने प्रेममय निर्मल वचन बोलता। कोई भी मगरुरी न रखते गरीब होके हाथ जोडता ऐसे विधि से लक्ष्मी और विष्णु दोनो खुश होते ऐसी यह छः सढियाँ देखी। ।। ३ ।।

मेहेरी होय बदन दिखावे ।। तो ईसर सुख पावे ।।
अे सुण सात कही तुज पेडी ।। युं कर अे जन गावे ।। ४ ।।

स्त्रि अपनी योनी महादेव के लिंग को दिखाएगी तो महादेव खुश होगा। इसतरह से तुम्हें सात सढियाँ बताई,इस तरह से कुंडापंथी गाते। ।।४।।

कन्याँ आण चडावे जन कूँ ।। सुतिया ध्रम ओ होई ।।
करता काम ब्रम्ह सो कहिये ।। वो रिंजे इम जोई ।। ५ ।।

कोई संत को अपनी कन्या चढाएगा याने अपने कन्या का संत से विवाह कर कन्या दान करेंगे इसे सुतीया धर्म कहते है इस विधि से काम ब्रम्ह खुश होगा। ।। ५ ।।

सुतीया ध्रम करे हर अर्पण ।। ता को ध्रम बतावे ।।
जोती सरूप सात पेड़ी सिर ।। यूं वो ब्रम्ह सुख पावे ।। ६ ।।

सुतीया धर्म रामजी को कोई अर्पण करेगा उसका धर्म मैं बताता,इन सिढियों के उपर ज्योती स्वरुप याने आनंद ब्रम्ह है उस ब्रम्ह को सुख मिलेगा। ।। ६ ।।

पेड़ी सात घट के माही ।। पेलि याँ चड जावे ।।
तब बेरांट दुसरो जीते ।। अेसो भेद समावे ।। ७ ।।

ये सात सिढियाँ पहले घट में ही चढ के जाना उसके बाद दूसरा निराकार का वैराट घट में लगेगा इस तरह से भेद समझो। ।।७।।

मुख सो नास चख श्रवण रे ।। सात पेड़ी अे जाणो ।।
याँ रे परे त्रिकुटी कहीये ।। ऊलटर जांय पिछाणो ।। ८ ।।

मुँख की पहली सीढी,नाक की दो,आँखों की दो,कानो की दो इस तरह से सात सिढियाँ हुई। इन सात सिढियों के परे त्रिगुटी है,इस त्रिगुटी में घट में उलटकर देखो। ।। ८ ।।

पवन छाड़ पिठ दिस ऊलटे ।। अणंद लोक वे जावे ।।
पुर्ब दिसा चड़े जन ऊँचा ।। वे ओ भेद न पावे ।। ९ ।।

पूरब से साँस चढाने की रीत छोडके पश्चिम के दिशा से उलटता वह आनन्दलोक को जाता। पूरब से साँस चढाके के भृगुटी में चढते उन्हें यह भेद मिलेगा नहीं। ।। ९ ।।

के सुखराम सुणो नर नारी ।। तन मन सब धन दिजे ।।
ऊलटर नांव चड़े गढ ऊपर ।। जिण गुरू संग अे किजे ।। १० ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर–नारी को कहते,जिस गुरु के कृपा से हंस घट

में नाम के आधार से उलटकर ब्रम्हंड गढपर चढता ऐसे गुरु को तन,मन और धन दो। यह बांदा कुंडा पंथी था इसलिए उसे कुंडा पंथी धर्म के अनुसार उपदेश बताकर समझाया। ।।१०।।

५६

।। पदराग आसा ।।

बांदा ओ सुण भेद न्यारो

बांदा ओ सुण भेद न्यारो ।।

ग्यानी ध्यानी देव न पावे ।। सतस्वरूप पियारो ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बांदा से कहते है कि,हे बांदा,जगत में रहनेवाले माया के सभी भेदो से होनकाल में से मुक्त करानेवाला सतस्वरुप का भेद निराला है। यह भेद सभी संतों को अति प्यारा लगता है। यह भेद माया के ज्ञानी,ध्यानी तथा स्वर्ग से लेकर बैकुंठ तक कोई भी देवता को मिलता नहीं। ।। टेर ।।

च्यार खाण जक्त मे कहीये ।। च्यार ग्यान मे होई ।।

निजनांव की कळा प्रगटे ।। सो उद बूद क्हूँ तोई ।। १ ।।

जैसे जरायुज,अंड्ज,अंकुर,उद्बिज यह चार खाणी जगत में है वैसे ही ज्ञान में माया ज्ञान, जीवब्रम्ह ज्ञान,पारब्रम्ह ज्ञान,निजनाम ज्ञान ऐसे चार ज्ञान है। जैसे जरायुज,अंड्ज,अंकुर के प्राणी जन्म लेते हुए दिखते परंतु उद्विज के प्राणी का जन्म कैसे हुआ यह किसी को भी समझता नहीं वैसेही माया ज्ञान,जीवब्रम्ह ज्ञान,पारब्रम्ह ज्ञान यह किससे जन्मे यह समझता परंतु उद्विज सरीखी निजनाम की कला घट में प्रगटी यह समझता नहीं। ।।१।।

बेद खाण आँकुर क्हावे ।। भेद इंड क्हूँ खाणी ।।

जरसो खाण जप तप तपस्या ।। अे सुण च्यार बखाणी ।। २ ।।

वेद ज्ञान याने ब्रम्हा का सांख्ययोग यह अंकुर खाण सरीखा है। भेद ज्ञान याने महादेव का हट्योग यह अंड्ज खाण सरीखा है और यह वेद,शास्त्र में बताए हुए जप,तप,तपश्चर्या यह जरायुज खाण सरीखी है। जैसे अंकुर,अंड्ज,जरायुज इन तीनों खाणियों के बीज जगत में लोगों को दिखते और समझते। ।। २ ।।

तिन खाण को बीज जक्त मे ।। देखे प्रखे लोई ।।

ऊब्दुद माय प्रगटे कांई ।। सो बीज लखे न कोई ।। ३ ।।

वैसेही सांख्ययोग,हट्योग,जप,तप करने की विधियाँ जगत में लोगों को समझके धारण करते आती परंतु जगत में जब उद्बिज जीव प्रगट्ता तब वह जीव कैसे प्रगट्ा और उसके बीज कौनसे थे यह जगत को समझता नहीं। उसीतरह निजनाम की कला संत में कैसी प्रगटी यह विधी किसी को भी समझती नहीं। ।। ३ ।।

के सुखराम सुणो सब कोई ।। ओ अरथाँ मे नाही ।।

ज्यूं बेराग ऊपजे जगमे ।। यूं प्रगटे जन माही ।। ४ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत में के ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति आदि के सभी ज्ञानी,ध्यानी इनको कहते है कि,आप सभी आकर सुनो,जगत में एखाद संत में काल के मुख में से मुक्त होने का विज्ञान वैराग्य उत्पन्न होता,वह विज्ञान तुमने साधे हुए माया की कोई भी विधी से उगता नहीं याने ही काल के मुख से छुट्ने का विज्ञान वैराग्य का भेद जगत में रहनेवाले माया ब्रम्ह के भेद से निराला है,यह समझो और यह भेद जो संत साधता वह संत सतस्वरुप को प्यारा लगता इसलिए तुम सभी माया की विधी त्यागकर यह सतस्वरुप की विधी धारण करो। || ४ ||

५९

|| पदराग आसा ||

बांदा पाँच भक्त जुग जाणो
बांदा पाँच भक्त जुग जाणो ||
छटी भक्त संत सम कहीये || यूं ओ भेद पिछाणो || टेर ||

बांदा,जगत में पाँच भक्ति करनेवाले भक्त जगत में की कोई भी भक्ति न करनेवाले जीवों सरीखे होनकाल में ही रहनेवाले जीव है। छटी सतस्वरुपी संत बनने की भक्ति इन पाँच भक्त और जगत के मनुष्य से अलग है ऐसे उस भक्ति का भेद तू पहचान। || टेर ||

सिव के भक्त तिके बोपारी || बिस्न भक्त सो क्रसा ||
सक्त भक्त सो वेशा जुग मे || जाचक ब्रम्हा दरसा || १ ||

जगत में की महादेव की भक्ति व्यापार के जैसी है। विष्णु की भक्ति किसान जैसी है। शक्ती की भक्ति वेश्या जैसी है तो ब्रम्हा की भक्ति भीख माँगनेवाले भिखारीं जैसी है। ||१||

आनदेव की भक्ति जुग मे || सो किसबी सब जाणो ||
मंत्र सुभ असूभ सब अेसे || ठग बेदर चोर बखाणो || २ ||

दुर्गा,सितला,भेरु,भोपा इनकी भक्ति हलकी नीच धंधे जैसी है। बुरे मंत्र ठग के जैसे है और अच्छे मंत्र वैद्य के धंदे जैसे है। || २ ||

पारब्रम्ह की भक्ति कहिये || सो राजा सम होई ||
निर्भे पद तिकण की भक्ति || सत्त कहूं म्हे तोई || ३ ||

पारब्रम्ह की भक्ति राजा सरीखी है। निर्भे पद की भक्ति सत्त पद का संत होने की है।।३।।

क्हे सुखराम भक्त षट हद में || सुरगुण निरगुण दोई ||
इण आगे सुण भक्त तीसरी || साची कहूं आ तोई || ४ ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,छः पद की भक्तियाँ यह सगुण और निर्गुण ऐसे हद,बेहद के दो पद में पहुँचानेवाली है। इसके परे आनंदपद भक्ति तीसरी भक्ति है। वह हद और बेहद इन दोनो पदो के परे तिसरे अगम पद में पहुँचानेवाली है। || ४ ||

६०

|| पदराग आसा ||

बांदा पुराण सुण कुण तिरीया

बांदा पुराण सुण कुण तिरीया ||

मोख जाय सो तो बिध न्यारी || पढीयाँ सूं काज न सरीया || टेर ||

जगत में आज सभी नर–नारी मोक्ष को जाने के लिए वेद व्यास के अठारह पुराण घरो घर, जगह–जगह पर पढते और सुनते परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते,आज तक पुराण सुनके कोई मोक्ष में गया नहीं कारण मोक्ष में जाने की तो विधि पुराण पढना या सुनना इस विधि से अलग है याने यह पुराण सुन सुनकर जैसे आज तक किसी का भी भवसागर से तिरने का काम हुआ नहीं वैसे आगे भी होगा नहीं। ।।टेर।।

बळ पांडव हरचंद रूक्मागंद || फिर अमरीष कुहावे ||

अेसा अनंत सत्त सूं तिरीया || सब जुग सायद गावे || १ ||

इस जगत में बली. राजा,पाँचो पांडव,हरिश्चंद्र राजा,रुक्मांगद,अमरीष राजा और इनके समान सत रखे हुए अनंत साधू तिर गए। वे संत सत के बल पर तिरे। इन में से एक भी संत ने पुराण सुना नहीं था या पढा नहीं था,इसकी साक्ष जगत के ज्ञानी,ध्यानी देते।।१।।

दुर्वासा तिणबंध ऊद्यालक || बिश्वामित्र भाई ||

द्रुणाचार्य कृपाचार्य || जप तप कर गत पाई || २ ||

दुर्वासा ऋषी,तृणबंध,उद्यालक,विश्वामित्र,द्रोणाचार्य,कृपाचार्य इन्होंने जप,तप करके गती पाई। यह पुराण सुनके गती मिलती नहीं यह समझता था इसलिए इन्होंने गती मिलाने के लिए पुराण सुना नहीं। ।।२।।

कपल मुनि गोतम बणारस || अनंत रिष कहुं तोई ||

अे सोऊँ जाप जपे गढ चढीया || साखा भरे सब कोई || ३ ||

जगत में कपिल मुनी,गौतम,बनारसी और इनकी तरह अनंत ऋषी हुए। ये ओअम साँस का जाप करके गढपर चढे ये कोई पुराण सुनके गढपर चढे नहीं। ये सभी ओअम के जप से गढ पर चढे है,यह साक्ष सभी भरते है। || ३ ||

गोपीचंद भरतरी गोरख || जालंधर सुण आणी ||

अे जोगारंभ साझ हुवा बंदा || ओर कछु नहीं जाणी || ४ ||

गोपीचंद, भर्तृहरी, गोरखनाथ, जालंधरनाथ और इनके सरीखे अनंत जोगारंभ साधके आवागमन से मुक्त हुए और जगत में काल मुक्त बंदे करके पहचाने गए। उन्होंने जोगारंभ सिवा पुराण सुनने की और पढने की कोई भी विधी नहीं की थी। || ४ ||

सनकादिक नारद हस्तामल || अष्टावक्र सोई ||

बाष्ट मुनि दत्तात्री ही || यां ने तत्त चिनीयो जोई || ५ ||

सनकादिक(सनक,सनंदन,सनातन,सनतकुमार)नारद,हस्तामल,अष्टावक्र,वशिष्ठमुनी,दत्तात्रय इन्होंने वेद व्यास के पुराणो के परे रहनेवाले तत्त को पहचाना और वे तत्त प्राप्त किया। इन सभी ने कभी भी पुराण सुना नहीं या पढ़ा नहीं। || ५ ||

नव जोगेसर जनक बदेही || सुखदेव कूं संग कियो ||
कुद्रत कळा नाँव की जागी || ऊलट आद घर लियो || ६ ||

ऋषभदेव के सौ पुत्र थे,उसमें से नौ पुत्र नौ खंड के राजे हुए,बयासी पुत्र त्रिगुणी माया के कर्म कांडी बने और सौ पुत्रों में से नौ पुत्र जोगेश्वर हुए। यह नौ जोगेश्वर,जनक विदेही और सुखदेव इन्होंने देह में नाम की कुद्रत कला जागृत की और कुद्रत कला के सत्ता से अपने घट में बंकनाल के रास्ते से उलटकर आदि घर जाके ब्रम्हंड में घर किया इन्होंने कभी भी पुराण सुना या पढ़ा नहीं। ||६||

बालमीक भिलणी गुजर || ध्रु प्रेहेलाद बखाणो ||
श्रीयादे सरगरो साचो || राम राम या जाण्यो || ७ ||

वाल्मिकी,शबरी भीलनी और गुजरी,ध्रुव,प्रल्हाद,श्रीयादे,बालमित सर्गरा इन्होंने राम राम शब्द का मर्म जाना और राम राम शब्द उच्चार करके भवसागर पार किया इन्होंने किसी ने भी पुराण सुना नहीं या पढ़ा नहीं। || ६ ||

संत कबीर नामदेव राको || नानक पिपो भाई ||
संतदास दादु दर्यासा || ने: अंछर कळ पाई || ८ ||

संत कबीर,नामदेव,राका,बाका,नानक,पीपा,संतदास,दादू साहेब,दर्याव साहेब इन्होंने सभी ने पुराण को भवसागर से तिरने के लिए झूठे ठहराए इसलिए उन्होंने पुराण पढ़े नहीं या सुने नहीं। इन सभी ने पुराण में रहनेवाली बावन अक्षरो के परे की ने:अंछर की कला घट में प्राप्त की और ये सभी अमरलोक में गए। || ८ ||

नेक नेक बानगी भाषी || ध्रम ध्रम की न्यारी ||
जो बिस्तार करूं तो ब्होता || क्हाँ लग कहूं ऊचारी || ९ ||

हे प्राणी,तुझे जगत के सभी धर्मो के थोड़े-थोड़े नमुनो के तौर पर उदाहरण बताए। सभी धर्मो का विस्तार करके बताया होता तो वह विस्तार बहुत बड़ा होता था इसलिए मैंने तुम्हे सभी धर्मो के भाँती-भाँती से उच्चारण करके बताया नहीं। इन सभी धर्मो में से एक ने भी भवसागर से तिरने के लिए पुराण पढ़े नहीं थे या सुने नहीं थे। || ९ ||

के सुखराम सुणो सब कोई || हम ने: अंछर पाया ||
नव जोगेसर जनक बदेही || यां मे ऊलट समाया || १० ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज नर-नारीयों को कहते है कि,सभी ध्यान से सुनो। कबीर साहब,नामदेव साहब राका,बाका,दादू साहब,दर्याव साहब,नानक साहब,संत दासजी ,पीपाजी इनको घट में जो ने:अंछर मिला वही ने:अंछर मुझे मिला। यह विधि पहले नौ

योगेश्वर और जनक विदेही को मिली थी। यह भी मेरे सरीखे घट में उलटके ब्रम्हंड में चढ गये थे। मैं पकड्के इनमें से कोई भी पुराण सुनके या पढ्के ब्रम्हंड में चढे नहीं यह समझो। ।।१०।।

६१

।। पदराग आसा ।।

बांदा राज जोग बिध न्यारी

बांदा राज जोग बिध न्यारी ।।

बेद लभेद भेद नहीं पावे ।। ना द्रसण सेंसारी ।। टेर ।।

अरे,हरजी भाटी,यह हमारी राजयोग की विधी,तो सबसे न्यारी है,उस(हमारी)राजयोग की विधी तो,वेद(ब्रम्हा),लबेद(शेष),भेद(महादेव,गोरक्षनाथ)इनको भी मिली नहीं। इस हमारी राजयोग की विधी,छ:दर्शन(मिमांसा,वेशोषीक,न्याय,योग,सांख्य और वेदांत इन छ:दर्शनों के कर्ते, जैमीनी, कणाद, गौतम, पातांजली, कपील और वेदव्यास इनको भी नहीं मिली, (इनकी तो क्या,जो संसारी(सभी सृष्टी का कर्ता या जगत की रचना करनेवाला)है,उसे भी यह(हमारे राजयोग विधी)मिली नहीं।(दूसरे षटदर्शन,जोगी,जंगम,सेवडा,संन्यासी, फकीर,ब्राम्हण)इन छ: दर्शनोंका,क्या गुजारा लगता। ।।टेर ।।

तज तज राज गया बन बीचे ।। वाँही भेद न पायो ।।

परमहंस बदेही धारा ।। ज्यां सुण लेस न आयो ।। १ ।।

जो अपने-अपने राज्य छोडके,वन में जानेवाले राजेभी(गोपीचंद,वृषभदेव, भृर्तहरी,इब्राहीम (बलख बुखारे के सुलतान बादशहा)ध्रुव,राहूगण ये ऐसे राजे और भी बहुत से राजे, अपने -अपने राज्य छोड के वन में गए। इनको भी हमारे(राजयोग का)भेद मिला नहीं और यह हमारे राजयोग का भेद,परमहंस(तंत्र परमहंसा नाम संवर्त कारूणी श्वेतकेत दुर्वास,त्रभु, निदाध,जडभरत,दत्तात्रय,रेवतक,भुसुण्ड,प्रभृतय(बृजाबा उपनिषद८/६)और दूसरे परमहंस तो अनंत हो गए,परंतु उपनिषद के उपर के श्लोक में बताये हुए,मुख्य(प्रमुख)मुख्य परमहंस हैं। इन परमहंसों को भी,यह हमारे राजयोग के विधि का भेद),लेश मात्र भी मिला नहीं,(फिर और दूसरे परमहंसो की गिणती क्या और इस हमारे राजयोग का भेद)विदेही सब१)जनक २)उदावसू ३)नंदिवर्धन ४)सुर्कतु ५)देवरात ६)वृहदुवथ ७) महावीर्य ८)सुधृती ९)वृष्टकेतू १०)हर्यश्व ११)मातु १२)प्रांतिक १३)कृतरथ १४)देवमीठ १५)महाधृती १७)कृतरात १८)हारोमा १९)सुवर्णरोमा २०)ह्स्वरोमा २१)सीरध्वज २२)भानुमात २३)शतधुम्न २४)शुचि २५)उर्जर २६)शतध्वज २७)कृती २८)अंजन २९)कुरूर्जित ३०)अरिष्ठनेम ३१)श्रुतायु ३२)सुपार्श्व ३३)श्रृंजय ३४)क्षेमावी ३५)अनेता ३६)भौमरथ ३७)सत्यरथ ३८)उपगु ३९)उपगुप्त ४०)स्वागत ४१)स्वानंद ४२)सुवची ४३)सुपार्श्व ४४)सुभाष ४५)सुश्रृत ४६)जय ४७)विजय ४८)त्रत ४९)सुनय ५०)वितहत्य ५१)श्रृती ५२)बहुलाश्व ५३)कृति,जितने जनक हुए,उतने और जडभरत इनको भी,हमारे

राजयोग के विधी का भेद,लेशमात्र भी मिला नहीं। ।।१।।

त्याग किया वे निर्भे केसे ।। नाँव भेद कहाँ पायो ।।
महा भ्रम डर घट मे ऊपज्यो ।। तब बन कूं नर धायो ।। २ ।।

जिन्होंने त्याग किया,उन्हें निर्भय कैसे समजना,(ऐसे त्याग करनेवालों में शुकदेव (बाद्रायणी),गोकर्ण इन्होंने माया का त्याग किया,तो इनको निर्भय कैसे समझना। शुकदेव, गोकर्ण,महादेव इन्होंने माया से डरकर,माया का त्याग किया,यह(बाद्रायणी सुकदेव, गोकर्ण)माया से डरे,फिर इनको निर्भय कैसे कहना,शुकदेव,गोकर्ण इनको तो भय उत्पन्न हुआ। जो किसीसे भी डरता नहीं,उसे ही तो निर्भय कहना चाहिए),इनमें बडे भ्रम और भय उत्पन्न हुए तब डरकर,वे वन में भाग गए।(तो वे डरकर वन में भाग गए,उन्हे निर्भय कैसे समझना। त्याग करनेवाले को निर्भय समझना नहीं। उन्होंने माया से डरकर,माया का त्याग किया है)।।२।।

दु:ख सुख सकळ अंतर मे प्रखे ।। मुख सूं केहे न काई ।।
वे क्हो निर्भे किस बिध हुवा ।। डर डर मुन संभाई ।। ३ ।।

ये सब सुख और दु:ख अंतर में तो समझते,लेकिन मुँह से बोलकर,बाहर कुछ भी नहीं दिखाते। जिन्होंने घबरा-घबराकर(डर-डरके)मौन धारण किया,वे जडभरतादिक)निर्भय हुए,ऐसा कैसे समझना।(डरके मौन धारण करनेवालो में से एक जडभरत है,इसने डरके मौन धारण किया,इसे भी निर्भय कैसे समझना।।३।।

अंग तो सकळ आतमा धरीया ।। क्या गृही क्या त्यागी ।।
अे आपस कर क्रमा सूं डरपे ।। निर्भे बुध कहाँ जागी ।। ४ ।।

यह स्वभाव तो आत्मा ने धारण किए है,फिर क्या तो गृहस्थी और क्या तो त्यागी,(यह सब स्वभाव आत्मा के है। यह खुदही कर्म करके,कर्म से डरते,तब इनमें निर्भय बुध्दी कहा जागृत हुई,क्यों कि जो डरते,वे निर्भय हुए है,यह कैसे समझना,तो इनको भी,हमारे इस राजयोग की विधि मिली नहीं।।४।।

जागे नाँव प्रेम सूं भाई ।। नख चख कुद्रत जोजे ।।
ऊलटर पिठ फोड़ चड़ जावे ।। मन कर कुछ नहीं सोझे ।। ५ ।।

सतगुरू के प्रेम से नाम जागृत होता। वह नाम नाखून,आँखें सब शरीर में,उसकी(सतगुरू के सत्ता की)कुद्रत से होती,यह देख लो।(यह सतगुरू की सत्ता से जागृत हुआ नाम, बंकनाल के रास्ते से उलटकर,पीट फाडकर(छेदन करके)चढ जाता।(वह नाम मन से) कुछ खोजतें नहीं। ।।५।।

राज जोग की आ बिध भाई ।। बिन साझन चढ जावे ।।
ताळी लगे न तुटे कोई ।। आ सेज समाद कुवावे ।। ६ ।।

हमारे इस राजयोग की तो,यह ऐसी विधि है,साधन किए बिना,उपर ब्रम्हंड में चढ जाते,

फिर ब्रम्हंड में लगी हुई ताली,क्षणभर भी टुटती नहीं,इसे ही सहज समाधी कहते है। ।६।

के सुखराम भोग सो भोगे ।। सेज होण सो होई ।।
त्रुगुटी माँय सब्द सुख भारी ।। आठ पोर क्हूं तोई ।। ७ ।।

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते,जिसे इस राजयोग की विधि मिली है,वे सब भोग (पाँचों इंद्रियों के भोग भोगते)और सहज में अपने आप और किये बिना,जो होगा वह होने देते। खुद होकर कुछ उपाय कुछ करते नहीं। उनके त्रिगुटी में शब्द का बहुत भारी सुख होता है। उस शब्द के सुख के आगे,संसार के कोई भी,पाँचों इंद्रियों के सुख,उनको रद्दी(झुठे)दिखते। वे सुख अगाधबोध में बताये नुसार,दिन और रात अष्टोप्रहर होते रहते। (त्रिगुटी के शब्द के सुख के आगे,संसार के पाँचों इंद्रियों के सुख,राजयोगी के मन में,भाते नहीं ।।७।।

६२

।। पदराग आसा ।।

बांदा सब ही भक्त नियारी
बांदा सब ही भक्त नियारी ।।
हंस कूं लेर लोक सो जासी ।। आप आप के सारी ।। टेर ।।

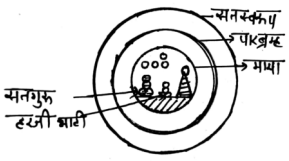

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बांदा हरजी भाटी को कहते है की,जगत में माया परब्रम्ह एवम् सतस्वरुप की न्यारी–न्यारी अनेक भक्तियाँ है। ये सारी भक्तियाँ अपने–अपने अलग पहुँच पराक्रम की है। हंस का मनुष्य देह छूट जाने के पश्चात भक्ति की याने उस देवता की जिस लोक की पहुँच होती वह देवता उस हंस को मृत्युलोक से अपने पहुँच पराक्रम अनुसार उस लोक ले जाता ।।टेर।।

हट जोग सो सिव की भक्ति ।। से केलासज जावे ।।
संख जोग ब्रम्हा को कहीये ।। जिग जप बेद पठावे ।। १ ।।

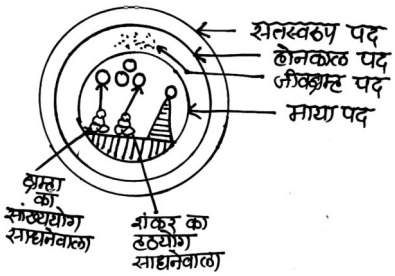

जैसे शंकर का हटयोग या शंकर की हठयोग छोड के अन्य विधि से भक्ती साधने से शंकर हंस को शरीर छुटने पश्चात अपने कैलास लोक में ले जायेगा। वहाँ हंस को ४३,२०,०००x७२x२८x३६०x१००x१२००० वर्षो तक तमोगुण माया के सुख देगा । शंकर के देश के सुकृत खतम हो जाने पर हंस को काल घेरेगा और गर्भ के महादु:ख में डालेगा । यदि हंस ने हटयोग न साधते सतगुरु का शरणा लेकर सतस्वरुप का राजयोग पलभर के लिये भी निजमन से साधा होता ,तो हंस अमरलोक जाता था और वहाँ के सुख कभी खतम् नहीं होते थे। हंस कभी गर्भ के महादु:ख में नहीं पडता था ऐसा शंकर और सतस्वरुप परमात्मा के पराक्रम में भारी फरक है। ब्रम्हा का सांख्ययोग साधने से या चारो वेदो में बताये हुये

यज्ञ,जप,क्रिया,करणियाँ साधने से ब्रम्हा हंस को मृत्युपश्चात मृत्युलोक से अपने सतलोक को लेजायेगा और वहाँ रजोगुण माया के सुख पुरायेगाँ। वहाँ हंस ४३,२०,०००x७२x२८x३६०x१००वर्षो तक सुख लेगें। जैसे मृत्युलोक की साँस खुट जाने पर हंस आवागमन के चक्कर में पडता वैसे ब्रम्हा के लोक की उम्र खुट जाने पर हंस जन्म-मरण के महादु:ख के चक्कर में पडता। यदि हंस ने ब्रम्हा का सांख्ययोग या वेदो की भक्तियाँ न साधते सतगुरु के शरण जाकर भक्तियोग साधा होता तो हंस आवागमन के दु:ख में कभी नहीं पडता तथा उसके सुख कभी नहीं खुटते ।।१।।

बिसन भक्त जगत मे कहीये ।। सोहंग सिंवरण सो होई ।।
हंस बेंकूट जाय सुण या संग ।। और न पहूंचे कोई ।। २ ।।

विष्णुकी श्रवण,किर्तन,स्मरण,पादसेवा,पूजा,वंदना,दास्य,सख्य,आत्मनिवेदन ऐसी नवविद्या भक्ति या विष्णु का जाप साँसो साँस में करनेसे विष्णु हंस को मृत्यु पश्चात मृत्युलोक से

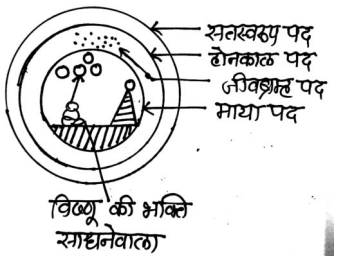

अपने बैकुंठ ले जायेगा और हंस की भक्ति की पहुँच देखकर अपने सालोक्य,सामीप्य,सायुज्य,सारुप्य,ये चारो मुक्तियोंसे एक मुक्ति लोक में रखेगा। वहाँ सतमाया का सुख पुराएगा। वहाँ के सुकृत खुट जाने पर हंस को काल गर्भ की यातना भुगवाएगा। यदि हंस ने विष्णु की भक्ति त्याग कर सतगुरु को खोजकर सतगुरु का शरणा लिया होता, तो विष्णु के चार मुक्तियोंके परे की अमर देश की महामुक्ति मिलती और हंस काल के दु:ख में कभी नहीं अटकाये जाता था मतलब विष्णु की कड्क भक्ति साधकर भी हंस बैकुंठ के परे अमरदेश कभी नहीं जा पाता,काल के मुख में रचे हुए बैकुंठ में ही रहता ।।२।।

सुतीया धरम सक्त की भक्ति ।। तिका जोत लग जावे ।।
देव भक्त सो मंत्र कहीये ।। प्रसण होय होय आवे ।। ३ ।।

शक्ति का सुतिया धर्म(कन्यादान)या शक्ति की अन्य भक्ति साधने से शक्ति हंस को

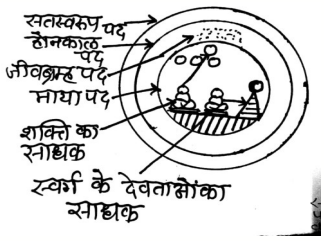

बैकुंठ के परे शक्ति के ज्योति लोक ले जाती। शक्ति हंस को ज्योति लोक के परे अमर धाम कभी नहीं ले जा सकती। शक्ति यह माया है और माया को काल आदि से खाता मतलब शक्ति को ही काल महाप्रलय में खाता तो उसके देश में ले गये हुए उसके भक्त काल से कैसे बचेंगे?यदि इन हंसों ने पलभर के लिए सतगुरु का शरणा धारण कर सतस्वरुप धर्म साधा होता,तो हंस काल के खाने से सदा के लिये बच जाता। स्वर्ग के देवताओंकी भक्ति करने से, या उनको प्रसन्न करने का मंत्र जपने से देवता प्रसन्न हो जाते और भक्तों का जगत में इच्छित काम करते और हंस को मृत्यु पश्चात स्वर्ग में ले जाते। वहाँ स्वर्ग में ४३,२०,०००x७२ वर्षो तक पाँचो

इंद्रियों के विषय वासना के सुख भोगते। स्वर्ग की आयु खुटते ही जम हंस को पकडता और चौरासी लक्ष योनी के महादु:ख में कठिन दु:ख भोगवाने डालता। यदि हंस ने साहेब को प्रसन्न करके घट में प्रगट किया होता तो साहेब हंस का हर पल सदा उसका इच्छित काम करता और हंस को मृत्युपश्चात अमर विमान में बैठाकर आनंदपद ले जाता। ऐसे आनंदपद पहुँचे हुये हंस को जम पकडना चाहा तो भी कभी नहीं पकड सकता इसकारण हंस चौरासी लाख योनी के महादु:ख के कठिन दु:ख भोगनेसे सदा के लिये मुक्त रहता ।।३।।

पारब्रम्ह की भक्ती जुग मे ।। सो तत्त निर्भे गावे ।।
होणकाळ लग जाय समावे ।। फिर पांछो हंस आवे ।। ४ ।।

जगत में इन माया की भक्तियों के समान ही पारब्रम्ह की भक्ति है। ऐसे पारब्रम्ह याने

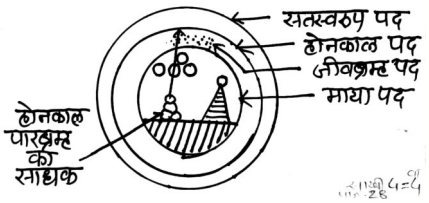

पारब्रम्ह होनकाल की भक्ति करने से हंस माया के परे के पारब्रम्ह तत्त के समान काल का डर न भासनेवाला निर्भय तत्त बन जाता और तीन लोक चौदा भवन के परे पारब्रम्ह होनकाल में जाकर समाता। वहाँ सदा न रहते कुछ समय के बाद फिर से गर्भ में आकर गर्भ के महादु:ख भोगता जैसे रामचंद्र,कृष्ण आदि अवतार मनुष्य देह से पारब्रम्ह की भक्ती करके पारब्रम्ह पहुचे थे और वे कुछ समय रहकर त्रेतायुग में कौशल्या के गर्भ में रामचंद्र और द्वापार युग में देवकी के गर्भ में कृष्ण आये थे और जगत में आकर जगत के लोगों के समान सुख-दु:ख भोगे थे। यदि रामचंद्र और कृष्ण के हंस ने पारब्रम्ह की भक्ति न धारण करते सतस्वरुप आनंदपद की भक्ति धारण की होती,तो वे माँ के गर्भ में कभी नहीं आते थे और यहाँ जगत के लोगो के समान सुख दु:ख नहीं भोगते थे। वे सतस्वरुप देश में पहुँचकर सतस्वरुप देश के अद्भुत सुख सदा के लिये भोगते थे।।४।।

सतस्वरूप की भक्ती जुग मे ।। राज जोग सुण होई ।।
ऊलटर नाँव चढे गड़ ऊपर ।। अगम आगे कूं सोई ।। ५ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,जैसे माया याने शिव,ब्रम्हा,विष्णु एवम् शक्ति और ब्रम्ह याने पारब्रम्ह की भक्ति जगत में है ऐसे ही माया ब्रम्ह के परे की सतस्वरुप की भक्ति जगत में है,इस भक्ति को राजयोग कहते है जैसे जगत में राजा और प्रजा पराक्रम पहुँच मे एवम् सुख पाने मे धरती-आसमान के अंतर के होते है,ऐसे ही योगों में भी राजा और प्रजा है। हंस को सतस्वरुप राजयोग राजा के समान सुख पहुँचाता है तो हटयोग,सांख्ययोग प्रजा के समान सुख-दु:ख पहुँचाता है। सतस्वरुप राजयोग की पहुँच हंस को काल के जबडे से निकालने की होती हैं,तो हटयोग,सांख्ययोग आदि की पहुँच काल के जबडे से निकालने की नहीं होती है। यह हंस जगत में आदि से संखनाल

के रास्ते से ब्रम्हंड से उतरकर खंड मे आया है। यह राजयोग याने सतनाम हंस को बंकनाल के रास्ते से खंड से याने मृत्युलोक से उलटाकर जम के परे के ब्रम्हंड के गढपर चढाता है और आगे ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति,पारब्रम्ह जिसे तिलमात्र भी जानते नहीं ऐसे महासुख के अगम देश ले जाता है। ।।५।।

सेवा ध्रम ऊपवास सब सिंज्या ।। अे आतम की भक्ति ।।
जुग के माँय सकळ फळ पावे ।। आस न काई मुक्ती ।। ६ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की जग में सेवा करना याने सभी आत्माओं की सेवा करना।

जैसे– गाय,चींटी,कबूतर,कुत्ता,मनुष्य इनको खाने पिने को देना ऐसी सेवा धर्म करना याने दया करना,किसीभी प्राणीको तथा मनुष्य को तकलीफ न देना दुःख न देना ऐसा दया धर्म पालना।

* उपवास करना–नित्य नियमसे गाय,कुत्ता,बिल्ली आदि प्राणीयोंको खाने को दिए बिना खुद न खाना पीना ऐसा उपवास करना ।

*संध्या करना–सभी प्राणीयोंकि सेवा करना,धर्म पालना,उपवास करना यह तीनो समय न भूलते करना ऐसी त्रिकाल संध्या करना।

ऐसे अनेक प्रकारकी छोटी बड़ी भक्तियाँ है यह भक्तियाँ आकाश,वायु,अग्नि,जल,पृथ्वी इस पांच आत्माओंकी याने पांच तत्वोंकी भक्तियाँ है यह भक्तियाँ जगत में तीन लोक चौदा भवन में ही फल देती याने यह हंस की तीन लोक चौदा भवन की परे की मुक्ति की आशा कभी पूरी नहीं करती। ।।६।।

के सुखराम सकळ अे भक्ति ।। हद बेहद के माँही ।।
अणंद लोक मे अे नहीं पहूँचे ।। सता सतगुरू की जाँही ।। ७ ।।

ये सभी भक्तियाँ हंस को हद याने बैकुंठ तक और बेहद याने पारब्रम्ह तक ले जाती है। हद और बेहद के परे आनंदलोक कभी नहीं ले जाती है। आनंदलोक में सिर्फ सतगुरु की सत्ता याने सतनाम याने राजयोग ही ले जाता है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।७।।

६३

।। पदराग आसा ।।

बांदा समज छाण मत लीजे

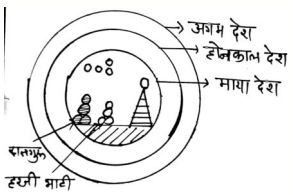

बांदा समज छाण मत लीजे ।।
अगम देस जाता कूं मारे ।। सो जम दूर करीजे ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज हरजी भाटी को समझाते की,अरे,समझकर छाण छाणकर अगम देश का मत धारण कर और अगम देश को पहुँचानेवाले मत को कौन मारता,उस मत को समझ। वह मत अगम

देश का काल है, उसे यम समझकर दुर कर ।।टेर।।

हद मे काळ क्रोध हे भाई ।। ओ जुग कोई काम बिगाडे. ।।
बेहद कूं नर करे चलण कूं ।। गुरू मुरख गेह पाडे ।। १ ।।

यह जगत हद,बेहद,अगम का बना है। इस हद,बेहद और अगम के अपने–अपने काल है।

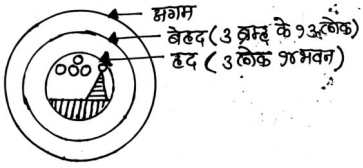

हद मे क्रोध यह काल है। यह काल संसार के सुखों का काम बिघाड देता और कोई मनुष्य बेहद चलने का उपाय करता और जिसे बेहद का रास्ता मालूम नहीं ऐसा बिन भेदी मुरख गुरु कर लेता तो वह हंस बेहद न पाते हद में ही पडे रहता। ऐसे मुर्ख गुरु से बेहद जाने का शिष्य का मत मर जाता। ।।१।।

हद बेहद अर अगम कुवावे ।। तिन देस अे होई ।।
याँ तिना का काळ जुवा हे ।। परखे हे बिरळा कोई ।। २ ।।

हद याने तीन लोक,चवदा भवन,बेहद याने पारब्रम्ह और अगम याने सतस्वरुप ऐसे तीन देश है। इन तीन देशों के काल अलग–अलग है,ये तीनो देशो के काल को बिरला ही संत जानता है।।२।।

अगम देस को काळ हद मे ।। जुग काई काम सुधारे ।।
हद को काळ अगम पहुँचावे ।। जो जन हिरदे धारे ।। ३ ।।

अगम देश का काल सांख्ययोग हद में याने तीन लोक १४ भवन में रहता। वह काल जुग में ब्रम्हा के सतलोक में पहुँचाने का काम सारता परंतु अगम देश में पहुँचानेवाले मत को पूर्ण मार देता। हद का काल क्रोध है,यह क्रोध हद मे माया में सच्चे सुख नहीं है,झुठे सुख है, ऐसा हंस का मत कहता है। इस कारण सुख देनेवाले माया से जीव रुठता और अपने तीन लोको के सुख बिघाडता परंतु यह काल शिष्य में तृप्त सुख देनेवाले अगम देश के मत को प्रगट करता ऐसे मत को जो जन हदय में धारण करता वह संत अगम में पहुँचता।।३।।

बेहद को सुण काळ बुरो रे ।। हद काई काम बिगाड़े ।।
हद बेहद दोना कूं भुक्ते ।। अगम जाता कूंई पाडे ।। ४ ।।

बेहद का काल बुरा है। यह बेहद का काल याने मूर्ख गुरु, हद के भी काम बिघाडता याने सुख देनेवाले त्रिगुणी माया के करणियों को भी दूर रखता। बेहद का भी काम बिघाडता तथा अगम जानेके मत को प्रगट होने नहीं देता मतलब जीव मे अगम देश के मत को बेहद का मत प्रगट कराके मार डालता ।।४।।

हद को काळ क्रोध तामस रे ।। अगम देस संख लोई ।।
बेहद को गुरू मुढ काळ रे ।। अे तिनूँ कहूँ तोई ।। ५ ।।

हद मे सुखों का काल क्रोध तामस है अगम देश का काल सांख्य योग है और मुर्ख गुरु

बेहद का काल है ऐसे हद,अगम और बेहद के अलग अलग तीन काल है यह मैं तुम्हें बताता हुँ। ।।५।।

हद को काळ जितीया भाई ।। बेहद कदे न पावे ।।
हद बेहद का दोनू जीता ।। अगम देस नहीं जावे ।। ६ ।।

हद का क्रोध काल जितने से बेहद कभी नहीं जाता। हद का काल क्रोध और बेहद का काल मूर्ख गुरु ये दोनो जीत गये याने हद में क्रोध को मारकर जरणा धारण कर लिया और बेहद का मूर्ख गुरु त्यागकर बेहद का उत्तम गुरु धारण कर लिया तो भी हंस हद बेहद के परे महासुख के अगम देश में कभी नहीं पहुँचता ।।।६।।

के सुखराम काळ वो जीतो ।। अगम देस को भाई ।।
हद बेहद का काळ तिका सुं ।। क्यूं पच रहया जुग माई ।। ७ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,अगम देश को जाने मे जो काल शिष्य के मत को मारता उस मत को जीतो। हद और बेहद का काल जितने में क्यो थककर चूर हो रहे हो। अगम देश का काल सांख्ययोग की समझ साधना है उस सांख्ययोग के मत को त्याग दो।।७।।

६६

।। पदराग आसा ।।

बांदा सत सुक्रत ओ जाणो
बांदा सत सुक्रत ओ जाणो ।।
छुछम बेद ताँसू सब हुवा ।। सो भज नाँव पिछाणो ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जिस सतसुकृत से काल से मुक्त करके अगम को ले जानेवाला सुक्ष्म वेद जगत में प्रगटा उस सतसुकृत का याने ही सतनाम का भजन करो। ।। टेर ।।

लेत देत साचो नर बोले ।। पण नहीं छाडे कोई ।।
ओ तो सत हद को कहीये ।। नहीं अगम को होई ।। १ ।।

संसार का छोटे से लेकर बडे देन लेन के व्यापार धंदे में कभी भी थोडासा भी झूठे बोल,बोलता नहीं,या झूठा करता नहीं ऐसे दृढ संकल्प से जीता और इस सत्त के नियम कभी खंड पडने नहीं देता तो भी आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,हंस को यह सत्त अगम याने महासुख के देश में कभी ले जाता नहीं। हद में काल के स्वर्गलोक में ही रखता। ।।१।।

पूरब दिसा चडावे पवन ।। सो बिध सत सुण होई ।।
बेहद को ओ साच जक्त मे ।। नहीं अगम को होई ।। २ ।।

इस संसार में यह साधक पूरब दिशा से साँस चढाता। यह साँस चढाने की विधी सत्त विधी है। इस सत्त के विधी से हंस भृगुटी मार्ग से ब्रम्हरंध्र में हजार पंखुड्यिों के बेहद

के स्थानपर पहुँचता परंतु हजार पंखुड्यिों के परे अगम देश को कभी भी पहुँचता नहीं इसलिए यह सत्त अगम देश का सत्त नहीं। || २ ||

अगम देस का सतगुरू सत्त रे || अकबक प्रेम कुवावे ||
ऊलटर नाँव चड़े गढ ऊपर || वो सुखरत ने आवे || ३ ||

अगमदेश के सतगुरु यह सत्त है। सतगुरु से प्रगटनेवाले प्रेम को अकबक प्रेम कहते है। सतगुरु से हुएवे अगम प्रेम के कारण हंस अपने घट में बंकनाल से उलटकर ब्रम्हंड गढपर चढ जाता। यह सत्त हंस में सत्त देश के सुकृत से आता। || २ ||

के सुखराम अगम कूं जाणो || तो ऊळा सूं मत पचीयो ||
ज्यां प्रताप नाँव घट जागे || ज्याँ गुरू संग रच मचीयो || ४ ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,अगर तुम्हें महासुख के अगम देश को जाना है तो तुम हद–बेहद के काल के दु:ख में रखनेवाले माया के सुख के लिए क्यों पचते?जगत में के माया के सभी देव और माया का ज्ञान बतानेवाले सभी गुरु त्यागके जिनके प्रताप से सत्तनाम घट में प्रगट्ता ऐसे सतगुरु धारण करके उनके संग रचमच के रहो याने तुम्हें अगम देश में पहुँचते आएगा। || ३ ||

६७

|| पदराग आसा ||

बांदा सतगुरू म्हेर न्यारी

बांदा सतगुरू म्हेर न्यारी || जे नर चालर ब्रछ तळ जावे ||
सुख पावे संसारी || टेर ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बांदा याने हरजी भाटी को समझाते है की,जगत में सतगुरु,सिध्द,ज्ञानी,देवता,मनुष्य आदि सभी की मेहेर होती है और इन सभी के मेहेर का सुख का परिणाम न्यारा–न्यारा रहता है,एक सरीखा नहीं रहता है। जैसे जगत में आम का और एरंड का पेड रहता है। कहने को आम के पेड और एरंड के पेड को पेड करके संबोधा जाता है। इन दोनो को पेड के सिवा और कोई शब्द से नहीं संबोधा जाता। इसी तरह सभी के मेहेर को मेहेर करके ही संबोधा जाता है परंतु कडी धुप में मनुष्य चलकर जिस पेड के तले जाता उस मनुष्य को वैसे सुख मिलता। जो जीव आम के पेड के निचे जाता है उसे धूप से पुरा छुटकारा मिलता और घने छाया का ठंडा ठंडा सुख मिलता और जो जीव एरंड के पेड के निचे चलकर जाता है उसे धुप से जरासी भी राहत नहीं मिलती। ऐसे ही जगत मे सतगरु और माया यह दो मेहेर है। जो शिष्य सतगुरु के शरण में जाता है उस पर सतगुरु की मेहेर होती है। उसे अमर सुख मिलते और सदा के लिये आवागमन के चक्कर से मुक्ति मिलती है। जो शिष्य त्रिगुणी माया के शरण जाता है उसे मुश्किल से जरासे माया के सुख मिलते और उस पर कालके अनंत दु:ख पड्ते।उसको सतगुरु के मेहेर समान सदा सुख कभी नहीं मिलता। ।।टेर।।

मुख की मेहेर सिध की होई || के ग्यानी की भाई ||
वो मुख सूं फळ दे माया को || वो ग्यान सिखावे आई || १ ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,मुख की मेहेर सिध्द और ज्ञानी पर होती। यह सिध्द माया के सुख का फल देता और ज्ञानी माया के ज्ञान सिखाता। ||१||

दिल की मेहेर देवतां करे हे || जे माया फळ धारे ||
मन हातां की म्हेर जक्त मे || देह कूं पार उतारें || २ ||

वैसे ही दिलकी मेहेर देवता करते और स्वर्ग के फल देते। मन और हाथ की मेहेर संसारी नर–नारी की होती वे देह के संसार के कार्य पार करते। |||२||

कर मन मुख की म्हेर जक्त मे || सबे संगती की होई ||
सतगुरू म्हेर सता सरूपी || केहेण करण नहि कोई || ३ ||

हाथ की,मन की,मुँख की मेहेर यह शक्ति की याने त्रिगुणी माया की है परंतु सतगुरु की मेहेर शक्ती के परे रहनेवाली सत्ता स्वरुपी सतस्वरुप की है। यह मेहेर हाथ से,मन से करने से या मुँख के कहने से होती नहीं। यह मेहेर सतगुरु का निजमन प्रसन्न होने पर सतगुरु के निजमन से होती। || ३ ||

ज्युं हमाव पंछी के हेटे || नर छाँयां मे आवे ||
ऊण देहे भुप बणे ईण जग मे || यूं सतगुरू सरण कहावे || ४ ||

जैसे जगत में हुमायु पंछी के छाया के नीचे जो मनुष्य आता वह मनुष्य उसी देह से राजा बनता। वैसे ही सतगुरु के शरण जाने से हंस उसी देह से आनंदपद में जाकर सुख भोगता। ||४||

छाँया सुण्या देखियाँ भाई || भूप हुवे नई कोई ||
छाँया माय गरक हुवे आई || जब गुण प्रगटे सोई || ५ ||

जिस प्रकार हमायु पंछी के छाया का वर्णन किसीने सुना या पंछी को दुर से देखा तो सुननेवाला या देखनेवाला राजा होता नहीं,उसीप्रकार सतगुरु की मेहमा सुनने से या सतगुरु का देह देखने से सतस्वरुप देश का वासी होता नहीं। जैसे हुमायु पंछी के छाया में पूरा गर्क होगा याने छाया के निचे पूरा आयेगा तभी राजा होने का गुण उस हंस में प्रगटेगा उसीप्रकार सतगुरु के सत्ता के छाया में पूरा आनेपर ही सतस्वरुप का संत बनने का गुण आता। ||५||

सतगुरू सरणे तके नर आया || ज्यूं तरवर तळ आवे ||
छाया कने जाय कर ऊभा || वे नहीं सरण क्हावे || ६ ||

जैसे कोई वृक्ष के निचे पूरी तरह आता वैसा सतगुरु की शरण में आया तो उसे सतगुरु के शरण आया ऐसे समझना। जो वृक्ष के निचे आया नहीं और वृक्ष के छाया के नजदिक खडा रहा याने वृक्ष के निचे आया ऐसे होता नहीं,ऐसे सतगुरु के नजदिक उठा,बैठा परंतु सतगुरु

का हुआ नहीं याने सतगुरु का शरणा लिया ऐसे होता नहीं। || ६ ||

ज्युं नर घाम सकळ कूं छाडे || जब ब्रछ हेटे जावे ||
घाम संग लियाँ जाय न सक्के || जे नर छाया चावे || ७ ||

जब मनुष्य घाम याने सूरज की धूप को छोड्ता और जहाँ जरासा भी सूरज की धूप नहीं ऐसे छाया के पेड के निचे आता उसे पेड के छाया के निचे आया ऐसा समझना। उसीप्रकार त्रिगुणी माया का त्याग करता और सतगुरु का पूर्णत: बनके रहता उसे सतगुरु के छाया के निचे आया ऐसा समझना। जिस प्रकार धूप को छोड्ता और पेड के छाया में आता तब उसके साथ धूप ले जाने का विचार किया तो भी छाया का सुख चाहनेवाले के साथ धूप जा नहीं सकती ऐसे ही सतस्वरुप सत्ता के सुख चाहनेवाले के साथ माया के सुख में भिना हुआ काल का दु:ख जा नहीं सकता। || ७ ||

सर्ब धरम आगला छाडे || ग्यान ध्यान सब भाया ||
निजमन असत जाण कर तजीया || जब सरणे नर आया || ८ ||

आगे के,पिछे के सभी धर्म,ज्ञान,ध्यान,करणियाँ काल मारने के लिए असत है याने झूठे है ऐसे निजमन से समझकर पिछ्ले सभी धर्म,ज्ञान,ध्यान त्यागता और निजमन से सतगुरु का शरणा लेता तब सतगुरु शरणा लिया ऐसे समझना। || ८ ||

जाणर तजो अजाण संभाई || ओ कुछ कारण नाही ||
अेक अंग व्हे सब आयर || से सब सरणे माही || ९ ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज महाराज कहते है की,माया के धर्म,ज्ञान,ध्यान,करणियाँ जानके तजो,या अजानते तजो उसका सतगुरु की मेहेर न होने का कुछ भी संबंध नहीं है। सतगुरु से एक अंग होना याने सतगुरु में जो सतस्वरुप है उस सतस्वरुप का बन जाना तब सभी त्रिगुणी माया त्यागी और सतगुरु के शरणा में आया ऐसे होता। ||९||

छाँयां सुख माहे कोई समझे || पछे सरण कोइ जावे ||
तोई घाम संग नहीं चाले || युं सतगुरू सरण कहावे || १० ||

पेड के छाया में क्या सुख है यह नहीं समझा और पेड के निचे खडा हुआ तो भी उसके साथ कष्ट देनेवाली धुप नहीं चलेगी इसी तरह सतगुरु के प्रताप को नहीं समझा और सतगुरु को निजमन दे दिया तो भी उसके साथ कालस्वरुपी त्रिगुणी माया के ज्ञान,ध्यान, धर्म के निच परिणाम देनेवाले कर्म नहीं चलेगे। इसप्रकार बिना समझ के निजमन देने के विधि को भी सतगुरु का शरणा लिया ऐसे समझना। ||१०||

छाँया सुख मांय नहीं समझे || ना कुछ घाम पिछाणे ||
स्हेजई आण ब्रछ तळ ऊभो || युं सतगुरू ही सत जाणे || ११ ||

पेड के सुख को नहीं समझता और धुप के दु:ख को भी नहीं पहचानता और पेड के निचे आकर खडा होता ऐसे पेड के निचे खडा होना यह पेड का शरणा लिया ऐसे ही होता।

इसीप्रकार सतगुरु के सुख को भी नहीं समझता और काल के दु:ख को भी नहीं जानता परंतु सहजमें सतगुरु सत्त है यह जाणकर निजमन देता ऐसे निजमन देने के विधी को भी सतगुरु का शरणा लिया ऐसा समझना। ।।११।।

ओर चीज सब ही संग रेहे ।। जेती जग के माही ।।
ईम्रत माँय कछु नहीं मावे ।। युं सतगुरू सरण केहाई ।। १२ ।।

अमृत छोड्कर जगत में जितनी भी चिजे है वे सभी चिजे एकदुजे के संग रह सकती परंतु अमृत के संग विषरूपी एक भी चिज नहीं रह सकती। इसीतरह त्रिगुणी माया के रजोगुण ब्रम्हा के क्रिया,कर्म,ज्ञान,ध्यान के साथ सतोगुण विष्णु के ज्ञान,ध्यान,क्रिया,कर्म रह सकते। ब्रम्हा के ज्ञान,ध्यान,क्रिया,कर्म के साथ विष्णु के ज्ञान,ध्यान,क्रिया,कर्म चल सकते याने एक माया की क्रिया,कर्म,ज्ञान,ध्यान के साथ दुजे माया की क्रिया,कर्म,ज्ञान, ध्यान रह सकते। ।।१२।।

ईम्रत माँय अेक गुण भारी ।। दूजो कछुन आवे ।।
ओर चीज सबही इण जग में ।। सुभ असुभ कर लावे ।। १३ ।।

अमृत में अमर करने का भारी गुण है इसकारण उसके संग मारनेवाली विष स्वभाव की कोई भी चीज नहीं रह सकती परंतु कम–जादा विष परिणामवाली सभी वस्तु एकदुजे के संग रह सकती। इसप्रकार सतस्वरुप सत्ता के साथ काल के मुख में डालनेवाली माया की कोई करणी क्रिया नहीं रह सकती इसीप्रकार सतगुरु के शरण में आनेवाले हंस के साथ काल के मुख में डालनेवाली त्रिगुणी माया की एक भी क्रिया करणी,ज्ञान,ध्यान नहीं रह सकती। ।।१३।।

अग्नि संग चीज नहीं राखे ।। कम जाफा कोई माही ।।
यूं सतगुरू बचन माँय नहीं मावे ।। ग्यान आगलो काई ।। १४ ।।

जैसे अग्नी अपने संग कोई भी दुजी छोटी,मोटी जलनेवाली वस्तु नहीं रखती। वह वस्तु साथ में आ गई तो उस वस्तु की राख कर देती इसीतरह सतगुरु के ज्ञान में हंस ने अभी तक का पाया हुआ काल के देश में रखनेवाला माया का ज्ञान नहीं टिकता याने नहीं रह सकता। ।।१४।।

हूणकाळ ब्रम्ह लग भाई ।। तके गुरू ग्यान बतावे ।।
वामें ग्यान सकळ संग मावे ।। वे हूणकाळ बस जावे ।। १५ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,माया से लेकर पारब्रम्ह होनकाल तक पहुँचानेवाला होनकाली गुरु का ज्ञान हंसो को होनकाल पारब्रम्ह तक पहुँचाता। पारब्रम्ह होनकाल के परे आनंदलोक में नहीं पहुँचाता इसलिए होनकाल में रखनेवाले ऐसे माया–ब्रम्ह के गुरु से उपजा हुआ सभी ज्ञान, ध्यान एकदुजे के साथ रहते ।।।१५।।

आ कुद्रत कळा म्हेर सतगुरू की ।। सतस्वरूप पर जाहीं ।।

या मे ग्यान ध्रम नहीं मावे ।। आ हूणकाळ बस नाही ।। १६ ।।

यह कुद्रकला सतगुरु के मेहेर से प्राप्त होती और यह मेहेर हंस को सतस्वरुप पहुँचाती। इस मेहेर से होनकाल के बस में याने होनकाल के देश में रखनेवाला ध्यान धर्म कभी नहीं उग पाता। इस मेहेर से होनकाल पारब्रम्ह के परे के सतस्वरुप पारब्रम्ह में पहुँचानेवाला ज्ञान धर्म रहता। ।।१६।।

होणकाळ बस आतम सारी ।। ज्यूं होणो सो होई ।।
आ कुद्रत कळा हंस कूं न्यारो ।। कर ले चाले सोई ।। १७ ।।

माया की पद की भक्तियाँ करनेवाले सभी आत्मायें अपने माया की भक्ति के जोर से होनकाल के बस से छुटती नहीं,होनकाल के बस में ही रहती होनकाल के परे के कुद्रत कला के सुख में कभी नहीं जाती। जिस माया की भक्ति की वैसे उन्हें भक्ति के अनुसार माया के सुख जरुर मिलते परंतु उस माया के भक्ति में काल के खाने का जो होणारथ लिखा था वह होणारथ माया के भक्ति के जोर से मिटता नहीं,होके रहता परंतु कुद्रकला की भक्ति से हंस होणकाल के बस से निकल जाता और हंस के काल के खाने के होणारथ मिट जाते और होनकाल के परे के कुद्रत कला के महासुख के देश में ले जाता। ।।१७।।

भेद बेद कोई नहीं जाणे ।। नहीं जाणे कोई ग्यानी ।।
नव जोगेसर जनक बदेही ।। वां आ कला पिछाणी ।। १८ ।।

वेद याने ब्रम्हा,भेद याने शंकर,लबेद याने शक्ति और नवविद्या याने विष्णु तथा उनके ज्ञानी,ध्यानी आदि सभी काल से मुक्त करानेवाले सतगुरु सत्ता को जरासा भी नहीं जानते। जगत में वृषभदेव,वृषभदेव के नौ पुत्र जोगेश्वर और जनक राजा ने इस सत्ता को जाना था। ।।१८।।

के सुखराम सता सतगुरू की ।। अनंत हंसा कूं तारे ।।
सरणे आयोडो कोई न डूबे ।। सब कूँई पार ऊतारे ।। १९ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,यह सतगुरु पद की सत्ता अनंत हंसों को होनकाल से तारती। इस सतगुरु सत्ता के शरण में आया हुआ कोई संत भवसागर में आज दिन तक नहीं डुबा और आगे भी नहीं डुबेगा ऐसी यह सत्ता सभी को भवसागर से पार उतारनेवाली बलवान है। ।।१९।।

७३

।। पदराग आसा ।।

बांदा वे जन पूरां जोगी
बांदा वे जन पूरां जोगी ।।
ऊलटर नाँव चढे गढ ऊपर ।। सुखमण का रस भोगी ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज हरजी भाटी,से बोले,जो संत नाम की कला से उलट

के ब्रम्हंड गढपर चढ गया है और गढपर सुखमना के रस का भोग लेते है,वही संत पूरे जोगी है। || टेर ||

निर्भे तके संक नहीं कोई || ले आतम सुख सारा ||
संग रे त्याग अेक नहीं कोई || पाप न पुन्न बिचारा || १ ||

अरे बंदा,निर्भय तो वही संत है,जो ग्रहस्थाश्रम में जाके आत्मा के सभी सुख भोगते है। जिन्हें ग्रहस्थी जीवन में रहना और ग्रहस्थी जीवन त्यागना सरीखा ही दिखता,ग्रहस्थी जीवन में पाप है और ब्रम्हचारी जीवन में पुण्य है ऐसा भ्रम होता नहीं,वही निर्भय है,वही पूर्ण जोगी है। जिसे सभी में सतस्वरुप ब्रम्ह ही दिखता,किसी में भी माया दिखती नहीं। ||१||

आतम हटके आतम भटके || तब लग निर्भे नाही ||
निर्भे जके नाँव मे राता || भव डर कछू न काही || २ ||

जब तक पाँचो आत्माओंको आत्मा के सुख लेने में हटकाता और उन आत्माओंको ब्रम्हचारी रखने में भटकता वह निर्भय नहीं,निर्भय तो वही है,जो काल में अटकानेवाली माया में अटके नहीं और काल के परे के नाम में लिन हुए हैं,निर्भय तो वही है,जिन्हें भवसागर में फिरसे गिरने का जरा भी भय नहीं। || २ ||

क्रिया क्रम ध्यान मंत्रा दिक || ओर भोग केहूँ सारा ||
यां को भ्रम नेक डर नाही || ज्याँ सुण नाँव बिचारा || ३ ||

जिन्होंने सतनाम का भेद,विचार करके धारण किया है उन्हें क्रिया कर्म,ध्यान मंत्रादिक और माया की अन्य विधियाँ नहीं किए तो काल के दु:ख पडेंगे यह भ्रम नहीं और माया के सुख मिलेंगे नहीं इसलिए थोडासा भी भय नहीं। || ३ ||

जे डरपे ताँ ग्यान न कोई || ना तत्त भेद न पायो ||
राम राम यूं कहो बोहो तेरो || कंवळ ऊगम नहीं आयो || ४ ||

जो जो आत्मा के सुख लेने में और माया के क्रिया कर्म,ध्यान मंत्रादिक नहीं किए तो दु:ख पडेंगे ऐसा डरता उसे तत्त भेद मिला नहीं याने उसने माया के सभी रसो के परे का अती सुख देनेवाला सुखमना का रस भोगा नहीं। यदि वह संत राम-राम मुख से बहुत बोलते रहा तो भी उसके घट में सुखमना का महासुख का कमल उमंग के आया नहीं,ऐसा समझो। ||४||

के सुखराम सुणो सब ग्यानी || निर्भे ज्यां मत जाणो ||
तन मन को हट कछू न काई || गढ चढ अलख पिछाणो || ५ ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ज्ञानीयों को कहते है कि,निर्भय मत तो उनका ही रहेगा जो पाँच इंद्रियों को मारने के लिए तन के और मन के हट करेंगे नहीं और गढपर चढकर अलख पहचानेगे। जो पाँच आत्माओं को तन के और मन के हट करके मारेंगे और

गढपर चढके मुल त्रिगुणी माया देखेंगे ऐसे मुल माया देखनेवाले योगी कच्चे योगी है। ।।५।।

७९

।। पदराग जोगारंभी ।।

भजना रे प्राणिया

भजना रे प्राणिया ।। क्या अरथ बिचारे ।।

पढयां गुण्या माने नहीं ।। जम जंवरो मारे ।। टेर ।।

अरे पंडित,अरे प्राणी,तू भजन कर। संस्कृत में लिखे हुए वेद,व्याकरण,शास्त्र के अर्थ समझ के क्या करेगा। तूने ये वेद,व्याकरण,शास्त्र कितने भी पढ लिए और उसमें तू प्रविण हो गया तो भी यमराज और यम की फौज तुझे मारेगी ।।टेर।।

तीन ताष का करम हे ।। जीवां की लारा ।।

चवदा तीनु लोक में ।। करमा बस सारा ।। १ ।।

अरे, प्राणी,अरे पंडित,संचित,प्रारब्ध और क्रियेमान ऐसे तीन प्रकार के कर्म तेरे पीछे लगे है। तीन लोक चौदा भवन में सभी लोग कर्म के वश पडकर जम के दु:ख भोग रहे। ।।१।।

प्रालब्द क्रिये सही ।। संचत हे भारी ।।

अे तीनुं जब काटसी ।। तब मिले हे मुरारी ।। २ ।।

प्रारब्ध,क्रियेमान और संचित ये तीनो कर्म भारी है। ये कर्म कटेंगे तब महासुख देनेवाला सतस्वरुप मुरारी तुझे तेरे घट में मिलेगा ।।२।।

काटण की बिध सांभळो ।। दिष्टांग बताऊँ ।।

अेक बड़ा करसाण था ।। तांको धन गाऊँ ।। ३ ।।

इन कर्मो को काटने की विधि समझ, वह विधी समझने के लिए तुझे मैं एक दृष्टांत बताता हुँ एक बडा किसान था उसके धन का किस्सा बताता हूँ। ।।३।।

अेक साल मे नीपनो ।। मन अेक हजारा ।।

ता धरबा के कारणे ।। अेसा बेत बिचारा ।। ४ ।।

उस किसान को एक साल में हजार मन अनाज उपजा। उसने उस अनाज को रखने की न्यारी-न्यारी तरकीब की। ।।४।।

सो मण घरे पठावियो ।। नवसे मन लारा ।।

ता कूं खव मे गाडियो ।। बोहो जतन बिचारा ।। ५ ।।

खाने के लिए उसने सौ मन अनाज घर भेज दिया। पीछे उसके पास नौ सौ मन अनाज रह गया। उस नौ सौ मन अनाज को बहुत जतन से खो में(पेव में)गाड दिया । ।।५।।

धुर असाड़ा सुं ओळ्यों ।। बिरषा बोहो भारी ।।

च्यार महीना बरसियो ।। ना आँख उघारी ।। ६ ।।

आषाढ उगते ही आषाढ के शुरुवात से ही पानी की झडी लग गई। बहुत भारी बरसात होते रही। चार माहतक बरसात ने आँख नहीं खोली ।।६।।

खोकोखों मे गळ गयो || हळ जूत न पाया ||
घर को घर मे पीस के || सब खाय खुटाया || ७ ||

उस भारी वर्षा के कारण से खो में भरा हुआ अनाज खो में ही सड गया। खेत में बहुत पानी जमने के कारण अनाज की नयी बुआई करते नहीं आई। घर में सौ मन अनाज भेजा था वह घर में पीसकर खाने में खुट गया।।७।।

अेक कण ना उबऱ्या || तूटा भल आया ||
इस बिध करम मिटावज्यो || पांडे सुण भाया || ८ ||

पीछे अनाज का एक कण नहीं बचा ऐसा अनाज खत्म हो गया ऐसा भारी तोटा हुआ। अरे पंडित,इस विधिसे संचित कर्म,क्रियेमान कर्म और प्रारब्ध कर्म मिटा डाल ।।८।।

आठ पोहर चोसट घड़ी || रसना झड़ लागे ||
सुण पांडे सुखदेव कहे || तब तीनुं भागे || ९ ||

तू आठ प्रहर चौसट घडी याने चौबीस घंटा रामनाम की झडी लगा जिससे हे पंडित,तेरे तीनो कर्म मिट जायेंगे ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने पंडित को कहा। ।।९।।

नोट –

भजन समय बेसमय धुव्वाधार करने से हंस दसवेद्वार पहुँचता। जैसेही वह दसवेद्वार पहुँचता उसके घट में अखंडित रंरकार की धुन शुरु हो जाती जैसे ही हंस के घट में अखंडित ने:अंछर ध्वनि लग जाती जिसमें हंस के संचित कर्म गल जाते और नये क्रियेमान यह अखंडित ध्वनि बनने ही नहीं देती और जो प्रारब्ध कर्म है वे कर्म सौ साल के भोगने के लिए है वे सौ साल में भोग लिए जाते भोगने के बाकी कुछ रहते नहीं ऐसे संचित कर्म, क्रियेमान कर्म और प्रारब्ध कर्म नष्ट हो जाते।

८५

|| पदराग गोडी ||

भगत तुमारी बखाणी माधोजी
भगत तुमारी बखाणी माधोजी ||
भगत तुमारी बखाणी || ता सूं कट जाय जूण पुराणी || टेर ||

माधोजी,तुम्हारी भक्ति की सभी ने बखाण कि है और आपकी भक्ति की महिमा की है। आपके भक्ति से कैसे भी चौरासी लाख योनि में डालनेवाले पुराने कर्म रहे तो भी एक भी कर्म बचते नहीं,सभी कट जाते ऐसा वेद,कुराण,गीता में साक्ष भरी है। ।।टेर।।

आन धरम पूजा बिध सारी || तीन लोक की जोई ||
मंत्रादिक फळ की सब बाता || परम मुगत नहि होई || १ ||

आपकी भक्ति छोडकर अन्य देवो की भक्ति,पुजा,धर्म होनकाल के तीन लोकोंमें ही रखती। ये सारे मंत्रादिक भी देखे,ये सभी अपने–अपने फल देनेवाली बाते है परन्तु होनकाल के परे कें परम मुक्ति में नहीं पहुँचाती। ब्रम्हा,विष्णु,महादेव के सभी मंत्र

तीन लोक के परे के परममुक्ति याने आनंदपद में कभी नहीं पहुँचाते। ।।१।।

ब्रम्हा बिसन महेसर देवा ।। सुरगुण भगत कहावे ।।
इनकी दोड़ मुगत लग सोंई ।। सतलोक नहि पावे ।। २ ।।

ब्रम्हा,विष्णु,महादेव आदि सभी देवताओंकी भक्तियाँ सुरगुण भक्तियाँ है। इन भक्ति की पहुँच त्रिगुणी माया याने ब्रम्हा,विष्णु,महादेव के मुक्ति पद तक है। इन भक्तियों मे त्रिगुणी माया के परेका सतलोक नहीं मिलता। ।।२।।

कूंडा पंथ सरब भी सुणिया ।। षटदर्शण ध्रम सारा ।।
सब ही सेंग उपायाँ जुग में ।। माया मिलण पसारा ।। ३ ।।

कुंडापंथ,षटदर्शन और इनके समान चौरासी लाख योनि कटाने के सारे उपाय खोजे। किसी भी उपाय में माधोजी मिलने का उपाय नहीं। इन सभी उपायोंसे ब्रम्हा,विष्णु, महादेव,शक्ति तक के माया देवता मिलते। ।।३।।

तेरी भगत बिनाँ सब भक्ति ।। भाँत भाँत मै जोई ।।
आवागवण मिटे नहि कब हुँ ।। सब माया की होई ।। ४ ।।

माधोजी,तेरे भक्ति सिवा तरह तरह की भक्तियाँ मैंने देखी,किसीसे भी आवागमन कभी नहीं मिटता,सभी में आवागमन में रखनेवाली माया मिलती ।।४।।

बेद कुराण पुराण स गीता ।। साख भरे सब बाणी ।।
के सुखराम भगत सत्त केवळ ।। दूजी छाँछर पाणी ।। ५ ।।

माधोजी,वेद,कुराण,पुराण,गीता और सभी संतों की बाणियाँ साक्ष भरती की सिर्फ माधोजी की भक्ती आवागमन मिटानेवाली सतकेवल भक्ति है। तेरे भक्ति के सिवा अन्य सभी भक्तियाँ छाछ के पानी समान आवागमन मिटाने के कोई काम की नहीं है ।।५।।

९८

।। पदराग मंगल ।।

देव पदी जीव जाय

देव पदी जीव जाय ।। मिनष तन पावसी ।।
वे जप तप जिग साझ ।। देव पद चावसी ।। १ ।।

जो मनुष्य यहाँ पर जप,तप,यज्ञ आदि देवता के स्वर्ग में जाने की निजमन से विधियाँ करता है वह देवता के देश से आकर यहाँ मनुष्य तन पाया है यह समझो। ।।१।।

मिनष जनम कूं छोड़ ।। मिनख ही होवसी ।।
सो सब सिंवरण साझ ।। धरम पंथ जोवसी ।। २ ।।

मनुष्य तन छुटकर जो मनुष्य जन्म में आए है वे सभी सतस्वरुप नाम के सुमीरन की साधना करते है और जगत में सतस्वरुप धर्म की खोज करते है। ये मनुष्य योनि से ही मनुष्य योनि में आए है यह समझो । ।।२।।

चोरांसी फिर जीव ।। हूवे सो मानवी ।।

वे सुण ग्यान बिचार || कछू नहीं जानवी || ३ ||

चौरासी लाख योनि फिरकर मनुष्य तन पाया है वे सतस्वरुप परमात्मा का ज्ञान समझाने पर भी नहीं समझते है। जैसे मनुष्य तन छोड्कर चौरासी लाख योनि के जीवोंको सतस्वरुप ज्ञान सुनाया तो भी समझता नहीं ऐसा जिस मनुष्य को ज्ञान समझाने पर भी समझता नहीं वह चौरासी लाख योनियाँ फिरकर मनुष्य देह में आया यह समझो। ||३||

नरक कुंड कूं भोग || मिनख तन धरत हे ||
सो नर मुढ गिंवार || भक्त सूं अड़त हे || ४ ||

नरककुंड भोगकर जो मनुष्य तन धारण करते है वे मनुष्य समझ से मूर्ख गवार रहते है। वे सतस्वरुप साँई का ज्ञान धारते तो नहींच नहीं उलटे कही सतस्वरुप साँई के सतगुरु ज्ञान बताते उनसे अड्ते,झगड्ते,मारामारी तक उठते,ये ऐसे मनुष्य नरककुंड से आकर मनुष्य देह में आए यह समझो। ||४||

नर नारी की जोय || इण सुण कारणे ||
के सुखदेव इण बात || न्यारी सब धारणे || ५ ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,इस मनुष्य देह में जन्मे हुए नर–नारी कहाँ से आकर इस मनुष्य तन में जन्मे है,यह उनके जीवन चालसे पहचानो। ||५||

१७०

|| पदराग कानडा ||

जे जे जाय मिल्या पद माही

जे जे जाय मिल्या पद माही || तिन की नकल जग मे नाही || टेर ||

जो–जो सतस्वरुप पद में जाकर मिल गए,वे तीन लोक चौदा भवन में कही नहीं रहे। इसकारण तीन लोक चौदा भवन में,वे नकल के रुप में भी कर्म भोगते कही दिखते नहीं। ।टेर।

अे तो पीर ओर देव जगत सारा || सुख दु:ख दोष करत हे लारा || १ ||

परंतु ये पीर,देवता तथा सारा जगत सतस्वरुप पद में नहीं गए इसलिए जहाँ–वहाँ तिन लोक में कर्मो के अनुसार माया के थोडे से सुख और काल के महादु:ख भोगते दिखते। ||१||

अन्न कूं पीस भूंज के बाया || तब को आस काहाँ रे भाया || २ ||

जैसे अन्न को पिस लिया और उसे भुंज डाला,और उसे खेत में बोया तो फसल नहीं उगती इसलिए ऐसे अनाज से फसल उगेगी यह आशा भी कोई कि सान नहीं करता,वैसे ही सभी कर्म रामनाम से जला दिए फिर ऐसे संत ने तीन लोकोमें जन्म लेना चाहा तो भी बिना कर्म से तीन लोक में जन्म नहीं ले सकता। ||२||

घस घस द्रब मिल्या धर माही || पाछे तोल मोल जुग नाही || ३ ||

जैसे सोने का गहना घस घस के जमीन में मिल गया फिर मिले हुए सोने के गहने का तोल कैसा करोगे और तोल ही नहीं होगा तो मोल कैसा करोगे? ऐसा ही संतने अपने कर्म रामनाम का रटन करके मिटा दिए फिर उस संत ने बिना कर्मो के कारण तीन लोक में जन्म लिया यह कैसे कहोगे?। ।।३।।

तिल कूं पील तेल कूं बाळे ।। तब को पाछे क्या गुण पाले ।। ४ ।।

तिल को पिलकर तेल निकाल दिया ऐसे बिना तेल के ढेप में तिल्ली के तेल का क्या गुण रहेगा ऐसे ही संतने विषय विकारो के कर्मो को जलाकर खतम् कर दिया फिर इन संतो में तीन लोक में जन्म लेने का कौनसा गुण बाकी रहा?।।४।।

बांज नार के पुत्तर नाही ।। किसकी मात बजे जग माई ।। ५ ।।

बांझ नार को पुत्र नहीं रहता इसकारण जगत में वह किसीकी माता बाजती नहीं ऐसे ही संतो मे तीन लोक में जन्म लेने के कर्म नहीं रहते इसकारण ये तीन लोक के वासी बाजते नहीं,ये सतस्वरुप पद के बासी बाजते। ।।५।।

कहे सुखराम मोख ज्यां पाई ।। मुख सूं बोल कहे कछु नाही ।। ६ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,जो जो संत मोक्ष गए याने तीन लोक चौदा भवन के परे के सतस्वरुप पद में मिल गए उनकी तीन लोक में रहनेवाले पिर,देव,जगत के नर–नारी के समान अस्सल तो क्या नक्कल भी मुख से बोलते नहीं आती। ।।६।।

१७६

जीव बसे किस ठोड़

जीव बसे किस ठोड़ ।। निकस कहाँ जायगो ।।

ओ तन छोडयां हंस ।। कहो कहा खायगो ।। १ ।।

जीव शरीर में कौनसे जगह रहता है?और अंतसमय निकलकर किस जगह जाता है? तथा शरीर छोड़ने के बाद क्या खाता है? ।।१।।

यांको अरथ बिचार ।। भक्त सो कीजिये ।।

सीव बसे किण जाग ।। भेद ओ दीजिये ।। २ ।।

इसकी समझ जिस भक्ति में मिलेगी वह भक्ति करो। शिव याने सतस्वरुप सिव किस जगह पर निवास करता है इसका भेद दो। ।।२।।

सबद कहो किण रूप ।। अरथ ओ कीजिये ।।

नई तर करूँ गरू ओर ।। समज गम लीजिये ।। ३ ।।

सतशब्द का रुप कौनसा है यह भेद पुछो, यह भेद गुरु नहीं देते है तो उस गुरु को त्यागो और जो यह भेद देता वह गुरु सतस्वरुप ज्ञान से समझ कर धारण करो । ।।३।।

सिंवरण को घर कोण ।। किसी राहा ध्याईये ।।

के सुखदेव हर नाव ।। निरख किम माईये ।। ४ ।।

सुमीरन का घर कौनसा है?तथा वहाँ पहुँचने के लिए किस रास्ते से जावे। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,हरी का नाम अपनी काया में कैसे निरखे?यह जो बताता वह गुरु करो और जो यह नहीं बताता उसे त्यागो। ।।४।।

१७७

।। पदराग मंगल ।।

जीव को कंठ अस्थान

जीव को कंठ अस्थान है ।। निकस बासना तहाँ जायगो ।।

ओ तन छोड़या जीव ।। कियो फळ खावसी ।।

जीव का रहने का स्थान कंठ है। अंतसमय निकलकर जीव की जहाँ वासना रहेगी वहाँ जाएगा। यह वासना मनुष्य देह में किए हुए ऊँच,नीच कर्म से जन्मती है। शरीर छोडने के पश्चात अपने किए हुए नीच–ऊँच कर्म के फल खाता।

शिव बसे सो जाग ।। दशमो द्वार हे ।।

सबद सो रूप ।। पोप बास जेसो हे ।।

शिव याने सतस्वरुप परमात्मा का दसवेद्वार में निवास है। सतशब्द को रुप नहीं रहता। जैसे सुंगधीत फूल के खुशबु को रुप नहीं रहता वैसेही सतशब्द को रुप नहीं रहता। जैसे हम फूल के खुशबु का रुप समझ लेते वैसे सतशब्द के ध्वनि का रुप समझना पडता।

सिंवरण को घर प्रेम ।। पवन की राहा ध्यायइये ।।

भजन कर नाँव ऊलटे ।। सुरत मन आ फेहेर पावसी ।।

सुमिरन का घर सुमिरन करने में प्रेम आना यह है। जहाँ सतस्वरुप साहेब है उस दसवेद्वार में श्वास के रास्ते से जाए जाता।

अरथ सम्पूर्ण ।। संत सुखरामजी कहया ।।

हरी का भजन करने पर हरी का नाम जीव को बकंनाल से उलटकर दसवेद्वार ले जाता है और उस नाम के साथ सूरत,मन का मेल होता है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। जिस गुरु को यह खुद में प्रगटे अनुभव से बताते नहीं आता दूजे संतो का ज्ञान बाच–बाच के बताता उस गुरु को त्यागो और जिसे स्वयम् के अनुभव पर बताते आता उस गुरु को सिरपर धारण करो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले।

१८९

।। पदराग मिश्रित ।।

काचे मन बेराग

काचे मन बेराग ।। त्याग भोळे मत कीजो ।।

घर माया के बीच ।। मन पचणे उर दीजो ।। टेर ।।

तुम्हारा मन वैराग्य लेने में कच्चा होगा तो ग्रहस्थी जीवन त्यागकर वैरागी मत बनो। वैराग्य लेने में मन पक्का हुआ हो तो ही वैराग्य लो नहीं तो भुलकर भी ग्रहस्थी जीवन मत त्यागो। इस मन को,इस उर को,घर के ग्रहस्थी के माया में थकने दो,त्यागन मत करो।

||टेर||

ज्युँ फळ बेली संग || बाळ माई संग जोय ||
तरवर दोळी बाड़ || पाये सेवा हुवे मोय || १ ||

जैसे फल लता के(ककडी आदि)साथ में पक जाता है,वैसेही बच्चा,माँ के साथ रहेगा तो वह बडा हो जाएगा परंतु बालपन में याने कच्चेपन में माता का साथ छोड देगा तो वह बच्चा मर जाएगा। ऐसे ही ककडी आदि वेल के साथ जो फल लगा रहेगा वह फल पक जाएगा और वह पके हुए फल के बीज से अनेक लताएँ उत्पन्न होकर अनंत फल लगेंगे इसी तरह से मन कच्चा रहा तो वो वैराग्य लो मत। मन पक्का होगा तभी वैराग्य लो। इस तरह से पेड के आड में पक्का कुंपण होगा तब ही मेरी सेवा होगी। ||१||

वेसा हुय तब त्यागियो || पाच न बोले काय ||
बास चले सुखरामजी || परमल दीसुं दस जाय || २ ||

मन पक्का होने पर ही ग्रहस्थीपन का त्यागन करो। मन पक्का हुए बगैर ग्रहस्थीपन त्यागने का कभी मत सोचो। पक्के मन से त्यागन करोगे तो त्यागीपण की खुशबू सभी ओर फैलेगी और कच्चेपन में गृहस्थी जीवन का त्यागन करोगे तो कभी ना कभी कही ना कही नीच कर्म करने की भूल होगी और उस भूल के कारण इधर-उधर दुर्गंधी ही दुर्गंधी छुटेगी ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ||२||

१९४

|| पदराग धमाल ||

क्रम करे सो कवन हे हो
क्रम करे सो कवन हे हो || यांको करज्यो बिचार || टेर ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि ज्ञानियों से पूछा ये सभी कर्म जो होते वे कर्म करनेवाला कौन है?इसका विचार करो। ||टेर||

मन करे कन राम करे हे || कन क्रम प्रालब्द जोय ||
कन यो जीव करत हे संतो || अर्थ बतावो मोय || १ ||

ये कर्म मन करता,सतस्वरुप राम करता या प्रारब्ध से याने अपने आप से होते रहते या जीव करता इसका अर्थ सतज्ञान खोजकर मुझे बताओ। ||१||

मन हे कर्ता मन हे हरता || मन बिन कछु न होय ||
जागृत सुषोपत सपन में हो || ज्यां त्यां मन कूं जोय || २ ||

ज्ञानियों ने जबाब दिया कि मन ही कर्म का कर्ता है और मन कर्म का हर्ता है याने क्रियेमान कर्म करनेवाला मन ही है,मन के बिना कुछ नहीं होता। जागृत,स्वप्न और सुषुप्ती अवस्था में जहाँ वहाँ मन ही कर्म करता। ||२||

तिरषा भूक उंघ सो आळस || छिंक उबासी बाय ||
जे ओ मन क्रम को क्रता || यांरी क्हो कद चाय || ३ ||

इसपर आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले,मन को प्यास,भुख,आलस,छिंक,जम्हाई, निंद की कभी चाहना नहीं रहती फिर ये प्यास,भुख,आलस,छिंक,जम्हाई,निंद के कर्म कैसे करता। ।।३।।

सुख सो संपत ब्होत बिध चावे ।। सो क्यूं होवे नाय ।।
जे ओ मन करण हे करता ।। दुख पावे क्यूं जाय ।। ४ ।।

मन सुख संपत विधि–विधि के चाहता फिर वह जो चाहता वे सुख संपदा क्यों नहीं होती?अगर मन कर्म करने का कर्ता है तो सुख प्रगट कर अपने दु:खोंका क्यों निवारण नहीं करता?दु:ख में क्यो पडा रहता? ।।४।।

सुख दुख को तो मन हे कर्ता ।। तिण मे फेर न सार ।।
अब सो करे अगम में भुक्ते ।। पुरब का अब लार ।। ५ ।।

सुख–दु:ख का तो मन यह कर्ता है इसमें कोई फेरफार नहीं। आज करता वह अगले जन्मोंमे भोगता और पिछ्ले जन्मों में किया वह आज भोगता। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले,आज करेगा वह आगे भोगेगा ऐसे कर्मो को संचित कर्म कहते। ।।५।।

संचत क्रम कांहे हर कर्ता ।। क्रिये मन बस होय ।।
के सुखराम ब्रम्ह बिन भ्यास्यां ।। भुल न निकळे कोय ।। ६।।

ऐसे संचित कर्म का कर्ता हर है और आज नये कर्म करता उस कर्म का कर्ता मन है आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,सतस्वरुप ब्रम्ह पाए बिना संचित कर्म का कर्ता हर है और क्रियेमान कर्म का कर्ता मन है यह भूल निकलती नहीं। यह भूल घट में ब्रम्ह पाने पश्चात निकल जाती और संचित कर्म का हर कर्ता है और क्रियेमान का मन कर्ता है यह समझ आ जाती ।।६।।

१९५

।। पदराग जोगारंभी ।।

करम काट पद मे मिले

करम काट पद मे मिले ।। तब अेसा होई ।।
सुखदुख सो ब्यापे नहीं ।। रंग पलटे ना कोई ।। टेर ।।

प्राणी जब संचित कर्म,प्रारब्ध कर्म और क्रियेमान कर्म काटकर आनंदपद में मिलता तब उसे जगत के विषयोंके सुख–दुख व्यापते नहीं तथा सुख–दु:ख दोनो अवस्था में उसके हंस का रंग बदलता नहीं मतलब सुख में फुलता नहीं और दु:ख में उदास होता नहीं ऐसे स्थिर रहता। ।।टेर।।

जब लग मन डर ऊपजे ।। सिस कारो खावे ।।
तब लग जन पूंता नहीं ।। फिर पाछा आवे ।। १ ।।

जब तक मन में काल के दु:ख पडने का और माया के सुख न मिलने का भय उपजता और मन सिसकारे खाता तब तक वह आनंदपद में पहुँचा नहीं यह समझना। मन से

आनंदपद में पहुँचा गया यह समझ लेने से आनंदपद पहुँचता नहीं। आनंदपद बंकनाल के रास्ते से उलटा चढने पर पहुँचता। जब तक हंस बंकनाल के रास्ते से उलटा चढता नहीं तब तक मन से आनंदपद पहुँच गया यह कितना भी समझ लिया तो भी उसे गर्भ में आकर दु:ख भोगना पडता। ।।१।।

नर नारी की गम रहे ।। चमक जन बेठा ।।
तब लग निरभे ने हुवा ।। घर आद ना पेठा ।। २ ।।

जब तक पुरुष और स्त्री दोनो अलग अलग माया है यह समझ भासती और इस अलग अलग माया के समझ कारण पुरुष संत स्त्री से चमकता,डरता तब तक वह संत माया से न्यारा हुआ नहीं और निर्भय हुआ नहीं सतस्वरुप आद घर पहुँचा नहीं यह समझो। जिस दिन संत सतस्वरुप आद घर पहुँचता तब उसको सभी स्त्री-पुरुष ब्रम्ह दिखते,देह रुप से स्त्री या पुरुष दिखते नहीं यह समझो। ।।२।।

केवळ बिन करतुत रे ।। बोळी हुय आवे ।।
जन सुखिया माया सबे ।। तोही मोख न जावे ।। ३ ।।

किसीको भी यह समज कैवल्य के बिना नहीं आती। कैवल्य बिना माया के पर्चे चमत्कारो की बहुतसी समझ आ जाती परंतु सभी ब्रम्ह है यह पर्चे चमत्कार कैवल्य के बिना नहीं आता। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,इसप्रकार सभी करतुते,सभी पर्चे चमत्कार माया के है,इन करतुतो से और पर्चे चमत्कारो से जीव मोक्ष में जाता नहीं। ।३।

१९७

।। पदराग धनाश्री ।।

केइक पाप मन मानियारे
केइक पाप मन मानियारे ।। केइंक कियां से होय ।।
केइंक लागे उड़ रज ज्यूंरे ।। समझ रहो दिल जोय ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,कि,कितने ही पाप तो,मन के माने हुए है।(मन के माने गये पाप का,दृष्टान्त)-(जैसे मारवाड देश में,मामा की लडकी को,सभी बहन जैसा मानते है। उससे(थट्टा)(मजाक)करना पाप समझते है और इधर महाराष्ट्र में,मामा की लडकी से खुशी से शादी करते है कारण इधर के लोग,इस बात का मन मे पाप नहीं मानते है और इधर के लोग चचेरी बहन और मौसी की लडकी को,बहन मानते है परन्तु मुसलमान लोग,सगे चाचा की लडकी से,शादी कर लेते है। जैसे कितने ही नीच जाती के लोग,पत्थर के देव के सामने गूंगे जानवर की हत्या करते है, उसे धर्म समझते है और ऊचे वर्ण के लोग इसप्रकार की हत्या को पाप समझते है। यह पशु वध करना ये लोग,मन से धर्म मान लिए है परंतु वास्तव मे यह पाप है वैसे ही बहुत से लोग,कुँआ खुदवाना, धर्मशाला बनवाना,बगीचा लगवाना,ऐसी सभी बातों को धर्म मानते है। उसी कुँआ खुदवाना,धर्मशाला बनवाना और बगीचा लगवाना वगैरे अच्छे कार्यो को,जैन धर्मी बहोत

बडा पाप समझते है,वैसे सभी लोग, परस्त्री गमन को पाप समझते है। परन्तु कुण्डापंथी परस्त्री गमन को,धर्म समझते है। दुसरे सभी लोग,नग्न स्त्री को देख लेने पर,कपडो के साथ ही स्नान करते है। उसी को कुडांपंथी(सहस्त्र भग का दर्शनो में मोक्ष),हजार स्त्रीयों के भग का दर्शन हो गया,तो कुण्डापंथी मोक्ष समझते है। यह भी तो,मन से ही माना हुआ है।इसी तरह कितने मन के,माने हुए पाप है और कितने ही पाप,करने से ही होते है। किए बिना लगते नहीं,ऐसे भी कितने ही पाप है और कितने ही पाप,धूल के जैसा उडकर लगते है इसलिए मन में समझकर,विचार करके रहो। || टेर ||

केइ म्रजादा मानिया रे || केइं अेक देही धर जाण ||
केइक लागे उड गेब सूं रे || फिर हे अगाऊ आण || १ ||

सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,कितने ही पाप,बाँधी गयी मर्यादा का,उलंघन करने से लगते है और कितने ही पाप,शरीर धारण करके लगते है और कितने ही पाप, उडकर गेबावू अचानक लगते है,वो ऐसे–(एक राजा ने यज्ञ किया था। उस यज्ञ में,उसकी प्रजा लोग,नजराना लेकर आते थे और यज्ञ का दर्शन करके,यज्ञ में भोजन करके,वापस लौट जाते थे। उस यज्ञ में,एक गाँव के ग्वालो ने विचार किया,की,हम भी यज्ञ का दर्शन करने चले और नजराणा में,दही की मटकी ले चले। यह दही नजराणा में दे देंगे, वह दही,लोग यज्ञ में खा लेंगे और हम भी यज्ञ का दर्शन करके,प्रसाद खा कर लौट आयेंगे। वे ग्वाले भोर होते ही,दही की मटकियाँ लेकर निकले,वह नदी पर आये और मटकियाँ नदी के किनारे,बरगद के पेड के निचे रख दिये और स्वयं नदी में स्नान करने लगे। इधर उस,बरगद के वृक्ष पर साँप था। वह उलटा लटककर,मुख से जहर नीचे गिरा रहा था। उस जहर गिरने की जगह पर,एक मटकी रखी गयी। उस मटकी में,साँप का जहर गिरकर,दही में मिल गया। आगे वे ग्वाले स्नान करके,अपनी–अपनी मटकियाँ लेकर,राजा के यज्ञ मंडप में आये और अपनी–अपनी मटकी,वहाँ नजराणा दिए,फिर बाद मे वह दही,यज्ञ में आये हुए ब्राम्हणो को परोसा गया। जिस–जिस ब्राम्हण को,वह दही परोसा गय,उनकी वो हत्या किसको लगे?कारण साँप तो,वहाँ पहले से जहर गिरा रहा था। उस साँप को क्या मालुम कि,इस जगह पर दही रखी गयी है। जिसकी वजह से ब्राम्हण की हत्या होई और ग्वाले को भी क्या मालुम की, साँप ने इसमें जहर उगल दिया है। जिससे ब्राम्हण की हत्या होगी और राजा को भी क्या मालुम की,इस दही में जहर है। जिससे ब्राम्हण मरेगा और परोसने वाले तथा खाने वाले को भी,कुछ भी नहीं मालुम था फिर यह हत्या लगे,तो किसे लगे?इधर यज्ञ में ब्राम्हण की मृत्यु हो जाने से,राजा बहुत ही उदास हो गया और भ्रमिष्ठ के जैसा,जंगल मे जिधर लगे,उधर घुमने लगा। खाना या पीना कुछ भी नहीं करता। दिनभर जंगल में पहाडो पर घुमे और रात को जंगल में ही,पेडो के नीचे पडा रहता। इस प्रकार से,एकदम पागल के जैसा बना हुआ राजा,एक दिन जंगल में,एक

बडे वृक्ष के नीचे,रात को पडा था। उस वृक्ष के उपर,पक्षियों की सभा हो रही थी। वहाँ सभापती गरुड था। वह गरुड उस दिन देर से आया।तब सभी पक्षी बोले कि,महाराज आज देर क्यों कर दी?तब गरुड बोला कि,आज बैकुंठ में विष्णु के सामने,न्याय करने के लिए,एक मुकद्मा आया था। वह न्याय,धर्मराय से भी नहीं हुआ था,इसलिए बैकुंठ में,विष्णु के सामने आया। वहाँ भी इस मुकद्मे का फैसला नहीं हुआ इसलिए इतनी देर हो गयी। तब सभी पक्षी बोले कि,ऐसा कौनसा मुकद्मा था,की,उसका निर्णय धर्मराय से भी नहीं हुआ?और विष्णु की तरफ से भी नहीं हुआ,ऐसा मुकद्मा क्या है?वह बताइए? तब गरुड ने क हा,फलाने राजा के यहाँ यज्ञ था। उस यज्ञ में ग्वाले दही लेकर आये। उस(दही में)साँप ने जहर उगल दिया। वही दही,यज्ञ में खाने के लिए आये ब्राम्हणो को, परोसने वाले ने परोसा,वे ब्राम्हण,वह दही खाकर मर गये। जिस योग से हत्या हुई। वह हत्या बोलती है,कि,मैं किसे लगूँ?तब यह निर्णय,धर्मराय से भी नहीं हुआ। उसने देखा तो,ग्वाले भी निर्दोष थे। उन ग्वालो को मालुम नहीं की,इस दही में, साँप ने जहर उगल दिया है और साँप भी निर्दोष था,क्यों कि,उस साँप को भी क्या मालुम,की,मैं जो जहर उगल रहा हूँ वहाँ पर दही का मटका रखा हैं और राजा को तो,कुछ भी मालुम नहीं,तो राजा भी निर्दोष है और परोसने वालो को भी नहीं मालुम रहने से,वे भी निर्दोष है और खानेवाले ब्राम्हणो को भी मालुम नहीं की,इसमें(दही में)जहर है,इसलिए ब्राम्हण भी निर्दोष है। तब यह हत्या लगे,तो किसको?इसका न्याय,धर्मराय से हुआ नहीं। इसलिए उस हत्या को लेकर,धर्मराय विष्णु के पास आया और बोला,कि,यह हत्या किसके नाम पर लिखूँ? ऐसा मुकद्मा,न्याय के लिए आया था,इसलिए मुझे यहाँ आने मे,देर हो गयी। तब पक्षी बोले,फिर वह हत्या किसके नाम पर,लिखने के लिए विष्णु ने बताया?गरुड बोला,अभी विष्णु से भी,न्याय नहीं हुआ। फिर पक्षी बोले,यह न्याय होकर,यह हत्या किसको लगेगी?इस मुकद्मे का निर्णय,जिस दिन होगा,वह सभी उस दिन बताएगा। गरुड बोला, ठीक है। इधर सारी हकीकत(सच्चाई),राजा को मालुम पड गयी। तब राजाने समझा की, मेरे हाथ से तो,यह हत्या हुई नहीं। ऐसा समझकर,राजा का मन खुशी हुआ और सोचा, की,अब प्रतिदिन रात को,इस वृक्ष के नीचे आकर,मुझे बैठना चाहिए। इसलिए की हत्या किसे लगी,यह तभी समझ मे आयेगा,फिर राजा,प्रतिदिन रात को,उस पेड के नीचे आने लगा और वहाँ प्रतिदिन,गरुड से पक्षी पूछते,की,न्याय हुआ की नहीं गरुड कहा की,अभी हुआ नहीं। ऐसे कई दिन बीत जाने पर,गरुड ने एक दिन कहा की,आज न्याय हो गया। पक्षी बोले की,यह हत्या किसके नाम पर लिखी गयी?गरुड बोला की,इस जंगल में एक ऋषी रहता है। उसके एक शिष्य के नाम पर लिखी गयी है और वह हत्या,उस ऋषी के शिष्य पर लग गयी है। पक्षी बोले कि,ऋषी के शिष्य ने,इसमें कौनसा अपराध किया था? क्योंकि वह तो वहाँ यज्ञ में या परोसने में या दही लाने में या दही में जहर डालने में,

किसी में भी नहीं था फिर उस ऋषी के शिष्य को,यह हत्या कैसे लगी?गरुड बोला कि, इस ऋषी के शिष्य,जंगल में से समीधा(होम की लकडी),लाने के लिए भटक रह थे तब, इस राजा को,भ्रमिष्ठ जैसा घुमते हुए देखा,तब एक शिष्य बोला कि,यह कौन है?पिसे जैसा जंगल में घुम रहा है,तब दूसरा शिष्य बोला कि,तुम्हें मालुम नहीं क्या?यह वो हत्यारा राजा है, इसके यहाँ यज्ञ में ब्राम्हण मर गये ऐसी उस ऋषी के शिष्य ने,झूठी निन्दा करने के बदले में,यह हत्या उस ऋषी के शिष्य के नाम पर लिखी गयी, तो इस ऋषी के शिष्य ने,कुछ हत्या की नहीं थी करने को भी किसी को लगाया नहीं था परन्तु झुठी निन्दा करने के कारण उसे लग गयी।)(कितने ही पाप)(अगाऊ)आगे-आगे आकर घुमते है।(वे ऐसे,देवी,चंडिका,कालिका,अंबा और बहरम(भैरव)वगैरे के मन्दिर में, निरपराधी प्राणी मारे जाते है। उन निरपराधी प्राणी की,हत्या वहाँ रहती है,वह हत्या,उस हत्या होनेवाले मंदिर में,भाव भक्ति से जानेवाले,मनुष्यों पर लगती रहती है। हत्या होनेवाले मंदिर के,छाँव में से भी,जाओ मत। जैसे मंदिर के पुरब की तरफ ,सुर्य रहने के कारन, मंदिर की छाया,पश्चिम में पडती है और सुर्य मंदिर के पश्चिम रहने से,छाया पूरब में पडती रहती है। तो रास्ते पर,उस मंदिर की छाया पडती रहती है। उस छाया में से, आने-जाने वाले स्त्री-पुरुष को,उस हत्या का पाप उन्हें लगता है। इसलिए उस मंदिर की छाया मे से न जाकर,घूम कर दूसरी तरफ से,दूसरे रास्ते से जाना चाहिए। उस मंदिर का,देव भी सत्य नहीं है परन्तु निरपराधी प्राणी की,हत्या होती है,वह वही रहती है और वह,वहाँ आने-जानेवाले और उस पशु के मांस खानेवाले और उस पशु के मांस को पकानेवाले और उस पशु को मांस को परोसनेवाले और मारने के लिए,जो अपना पशु बेचते है,उन्हें भी और उस पशु के उपर,सर्व प्रथम शस्त्र चलानेवाले,इन सभी पर,वह हत्या लगती है। देव तो पत्थर का होने से जड है,उस पत्थर को तो हत्या लगती नहीं परंतु उस देव को,पूजने जानेवाले मनुष्यों पर,वे पूजने जानेवाले अहिंसक भी रहे,तो भी वे पूजने जाकर,उस पत्थर के देव को महत्व देने के कारण,उन्हे भी हत्या लग ही जाती है। ऐसे उस मंदिर की छाया में से आने-जानेवाले पुरुष और स्त्री ने भी,मन्दिर की छाया में से न जाकर,छाया बचा कर जाये। || १ ||

केइक मुक्त तो ग्यान की रे || केइक भजन कर होय ||
अेक मुक्त मन गेब की रे || जाणे हे बिर्ळा कोय || २ ||

ऐसे ही कितनी ही मुक्ति तो,(ज्ञान को ही मुक्ति समझते है),वह ज्ञान की मुक्ति है और कितनी भी भजन करके मुक्ति होती है। और एक मुक्ति मन की(मन की मानी हुयी)और एक गेबाऊ(अचानक,संतो के योग से)होती है।(जैसे जनक राजा ने,नरक कुंड से,सभी जीव अचानक लेकर चला गया। एक सतवंती राणी,दिन निकलने से दिन के डूबने तक,जितने जीव मरे,उन्हें अपने साथ ले गयी। उज्जयनी में एक संत की,दग्ध क्रिया के

समय,दस हजार भूतो को,उसका(धूर)लगने से,मुक्ति हो गयी,ऐसा कहते है।)इस मुक्ति को कोई,बिरले ही जानते है। ।। २ ।।

अेक मुक्त तो मन की रे ।। अेक देही की होय ।।
अेक मुक्त हुवे जीव की रे ।। जन्म न धारे कोय ।। ३ ।।

एक मुक्ति(मन की मानी हुई),मन की मुक्ति और एक मुक्ति देह की होती है और एक मुक्ति जीव की होती है,(वह जीव दुबारा)जन्म धारण नहीं करता । ।। ३ ।।

प्रबत मेरा मानिया रे ।। निरबरत आपे जाग ।।
के सुखदेव सब छाड के रे ।। रहो नाव सूं लाग ।। ४ ।।

मेरा प्रवृत्त मानने से,निरवृत्ती अपने आप जागती है आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,यह सभी छोड कर,नाम से लगे रहो। ।। ४ ।।

२०५

।। पदराग धमाल ।।

कोई अेसा हे जन सूर साधो
कोई अेसा हे जन सूर साधो ।। ओ सब भ्रम मिटाई ये हो ।। टेर ।।

कोई ऐसा संत सुरा है क्या?जो मेरे यह सभी भ्रम मिटा देगा ।।टेर।।

क्रिये कर्म करे सो को हे ।। प्रालब्द कुण ल्यावे ।।
संचत क्रम किने कहो कीया ।। घेर कुण भुक्तावे ।। १ ।।

क्रियेमान करनेवाला कौन है?प्रारब्ध कर्म कौन लाता?संचित कर्म किसने किए?यह बताओ और ये किये हुए कर्म वापिस जीव से कौन भुक्ताता?यह बताओ ।।१।।

संचत करम किया हर आपी ।। प्रालब्द हर लावे ।।
क्रिये कर्म मन सीर दिया ।। सामल राम करावे ।।२ ।।

वर्तमान में प्राणी ने किये हुये क्रियेमान कर्म जो प्राणी से उस जन्म में भोगे नहीं गए ऐसे बाकी रहे हुए क्रियेमान कर्म रामजी हंस के उपर संचित कर देते हैं उदा.जैसे बँक में लोग अपना धन जमा करते जिसका धन होगा वह उसके ही खाते में जमा होता है यह खाते में जमा हुआ धन लिखने का काम कौन करता है? तो बँक करती है ऐसे ही जीव ने मनुष्य देह में क्रियेमान कर्म किए जो भोगे नहीं गए वह कर्म जमा के रुप में याने संचित कर्म के रुप में साहेब उस जीव के उपर लिख देता है।

जब हम बँक में से धन निकालते है तो बँक हमारे खाते में से ही हमारा ही धन हमे देती है याने हमने हमारे खाते में जो धन जमा किया था उसी में से ही हमे धन निकालकर देती है और वही धन हम इस्तमाल करते है वैसे ही साहेब जी के खाते में लिखे हुए संचित कर्मो में से ही जीव को अगले जन्म में कुछ कर्म प्रालब्ध के कर्म के रुप में भोगने के लिए देते है। ।।२।।

क्रिये करम कटे सो केसे ।। प्रालब्द किम खुटे ।।

संचत क्रम गले सुण केसे ।। सकळ फंद किम तूटे ।। ३ ।।

क्रियेमान कर्म कैसे कटते है?प्रारब्ध कैसे खुटते है?संचित कर्म कैसे गलते है?ऐसे क्रियेमान,प्रारब्ध और संचित सभी कर्मो का फंद कैसे टुटता?।।३।।

क्रिये क्रम त्याग सूं खूटे ।। परालबद सो खांया ।।

संचत क्रम जलम संग लेसी ।। बोहोर ग्रभ नहीं जाया ।। ४ ।।

क्रियेमान कर्म नए कर्म करने का त्याग करने से खुटता। प्रारब्ध कर्म भोगने से खुटते परंतु संचित कर्म जनम-जनम तक साथ रहते। ये संचित कर्म रामजी का स्मरन कर दसवेद्वार पहुँचने पर खुटते। ये संचित कर्म खुटने पर जीव वापिस गर्भ में आकर जन्मता नहीं।।४।।

संचत क्रम गळ्या जब प्राणी ।। कछु रेहे नहीं मांय ।।

के सुखराम प्रारब्ध क्रिये ।। सब ही गया बिलाय ।। ५ ।।

संचित कर्म गलनेपर प्राणी के पीछे भोगने के लिए कोई कर्म बाकी नहीं रहते। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते,इसप्रकार क्रियेमान,प्रारब्ध और संचित कर्म प्राणी के खत्म हो जाते। ।।५।।

२१९

।। पदराग मंगल ।।

मन राजा के नार

मन राजा के नार ।। दोय घर जाणीये ।।

पूत अठारे आठ ।। किन्या दस ठाणीये ।। १ ।।

मन राजा के घर दो रानियाँ है और एक एक रानी को तेरह तेरह पुत्र ऐसे छब्बीस पुत्र ,पाँच पाँच पुत्रियाँ ऐसे दस पुत्रियाँ है। ।।१।।

अेकण को सूण पीर ।। जूग के माँय हे ।।

दुजी को सूण साच ।। मूगत के गांव हे ।। २ ।।

एक रानी का माय का जगत में है तो दुजे रानी का माय का परममुक्ति के गाँव है। ।।२।।

जां सूं राखे हेत ।। पीराँ ले जावसी ।।

जां का पूतरी पूत ।। मनो खेलावसी ।। ३ ।।

मन जिस रानी से प्रिती करेगा वह राणी अपने माय के ले जाएँगी और उसी के पुत्र पुत्री का मन लाड करेगा। ।।३।।

अेकण का नीत पूत ।। फजीती करत हे ।।

अंत काळ के मांय ।। नरक में धरत हे ।। ४ ।।

रानी कुमती के पुत्र लोभ,दाव,मत्सर और पुत्रियाँ नित्य फजिती करते है और अंतकाल में नरक में डालते है। ।।४।।

दूजी राख्यां पास ।। बोहोत सुख पावसी ।।

दिन दिन सुख अपार ।। मोख लेजावसी ।। ५ ।।

दुसरी रानी सुमती के पुत्र,पुत्रियाँ पास रखने पर बहुत सुख मिलता है दिन-दिन अपार सुख होकर अंतकाल में माय याने अंतिम समय मोक्ष में ले जाते है। ।।५।।

जीण संग मिलीये मोख ।। मानेती कीजिये ।।
के सुखदेव नरका जाय ।। तका तज दीजीये ।। ६ ।।

जिन संग मोक्ष मिलेगा उसी रानी को मान्यवती रानी करना चाहिए और जिसके कारण नरक में जाना पड्ता उस रानीको त्याग देना चाहिए ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।६।।

२६५

।। पदराग सोरठ ।।

पांडे ओ तो ब्रम्ह कहावे
पांडे ओ तो ब्रम्ह कहावे ।।
ऊँच नीच किसब हे जुग मे ।। करणी सा फळ खावे ।। टेर ।।

अरे पंड्ति,यह जीव तो आदि से ही ब्रम्ह है। इसे कोई ऊँच या निच के कर्म लगते नहीं। ऊँच या नीच बनने की रीत उनके शरीर के करणियों के कारण है। जैसे करणी करते वैसे ऊँच नीच के फल भोगते। ।।टेर।।

सब ही कह सुख दुख मांही ।। ब्रम्ह आज नहिं राजी ।।
नाम जात अर बरण बिचाऱ्यां ।। हिंदु कह न काजी ।। १ ।।

सभी ही मनुष्य दु:ख में कहते है कि,आज मेरा ब्रम्ह राजी नहीं है। इसप्रकार से वे अपना शरीर का नाम,शरीर की जात,शरीर का वर्ण या हिन्दु,मुसलमान ऐसा बोलकर नहीं कहते अपनी मूल जात जो ब्रम्ह है उस जात को बोलकर बताते। ।।१।।

ब्राम्हण होय करे जो नीची ।। तो चंडाळ कहाई ।।
सुदर सुख सुण ऊँची खाच्याँ ।। तो उत्तम व्हे हो भाई ।। २ ।।

ब्राम्हण है और चांडाल के नीच कर्म करता है तो उसे ऊँच कर्मी ब्राम्हण करके नहीं जानते उसे चांडाल करके ही जानते और चांडाल है या कोई भी शुद्र है वह ब्राम्हणके कर्म करता है,ऊँचे कर्म करता है तो उसे निचकर्मी चांडाल या शुद्र नहीं जानते,उसे ऊँच कर्मी जानते। ।।२।।

घट मे वर्ण चार सो कहिये ।। सो मै सोध बताऊँ ।।
मै तो संग सकळ को छाडयो ।। राम संगत में जाऊँ ।। ३ ।।

हर किसीके घट में ये सारे ब्राम्हण,क्षत्रिय,वैश्य,शुद्र ये चार वर्ण है वह कैसे है यह मैं आपको खोजके समझाता हूँ। मैंने घट के चारो वर्णो को त्यागा है और रामस्नेही बनकर रामजी के संगत में जाता हूँ । ।।३।।

तामस नीच रीस सा शुद्रण ।। झूट साटियो तन में ।।
सिकळ बिकळ सो साँसी सांसण ।। थोरी डस रह मन में ।। ४ ।।

तामस,रिस यह नीच है,शुद्र है वह सब के घट में बसती है। झुट,लबाडी यह सभी साटि रू पी शुद्र हैं सभी के शरीर में बसी है। संकल्प–विकल्प यह नीच है,शुद्र है यह साँसा सासण हर घट में बैठे है,ऐसे हर मन में दावपेच यह थोरी नीच बैठा हैं। इसप्रकार हर देह में वह ब्राम्हण रहो या शुद्र रहो सभी में तामस,लबाडी,संकल्प–विकल्प,डावपेच ये नीच, शुद्र रहते है। ।।४।।

लोभ गुलाम चाय सो वैस्या ।। कळे कूंजड़ी जाणो ।।
क्रिया हिन सो स्वान काग हे ।। मै तें देत बंखाणो ।। ५ ।।

लोभ यह गुलाम है। चाहना यह वेश्या है। कलह यह कुंजडी है। सभी हलकी क्रियाएँ यह कुत्ते और कौए है,मैं और तू ये राक्षस है। ये लोभ,चाहना,कलह,हल्की विषय वासना की, जहरो की क्रियायें,मैं और तू ये सभी शुद्र लक्षण चाहे वह ब्राम्हण रहे,या शुद्र रहे हर घट में ओतप्रोत समाये है। ।।५।।

भाँग तमाखुं अमल अरोगे ।। सुरे पान सुं राता ।।
सो राकस हे कह सुखदेवजी ।। निष्ट बेण मुख बातां ।। ६ ।।

भांग पीना,तम्बाखू खाना,अफीम खाना,शराब पीना ये सभी राक्षस है।आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोलते, संतों से मुख से मीठी बात न करते अपशब्द से बोलते यह राक्षस है। ऐसे अपशब्द बोलना या कोई भांग,तम्बाखू,अफीम,शराब सरीखी नशीली चीजें खाना यह शुद्र गुण है,राक्षसी गुण है,यह ब्राम्हण गुण नहीं है यह पंडित,तू समझ। इसप्रकार से इन शुद्र गुणो के कारण ये सभी ब्राम्हण से लेकर शुद्र तक सभी शुद्र है,ब्राम्हण कोई नहीं है। ब्राम्हण तो जो भी जीव रामस्नेही बनता,रामजी के संगत में रहकर घट में रामब्रम्ह(राम याने सतस्वरुप ब्रम्ह)प्रगट करता वह कोई भी नीच या ऊँच धंदा करे वह ब्राम्हण है। ।।६।।

२६९

।। पदराग सोरठ ।।

पांडे समझ बाद सो कीजे
पांडे समझ बाद सो कीजे ।।
बिन समझ्यां सुण थाप ऊथापे ।। ज्या मे क्या ले दीजे ।। टेर ।।

अरे पंडित,तूं समझ–बूझकर मुझसे वाद–विवाद कर। सतज्ञान से समझ,बिना समझे तू मेरा तत्तज्ञान उथापता है और वेद,पुराण इन भ्रम ज्ञान को थापता है इसमें तुझे क्या मिलेगा?।।टेर।।

च्यारूं बेद दही सम हे ।। घ्रित संत सो बाणी ।।
तत्त नांव सूं हंस तिरत हे ।। सो म्हे कहूं पिछाणी ।। १ ।।

अरे पंडित,ये चारो वेद दही समान है तो संत ज्ञान घी समान है। वेदो से कोई भवसागर से तिरता नहीं। जो भी हंस तिरता वह तत्तनाम से तिरता यह मैं तुझे बताता हूँ। वेदों से

कोई तिरता नहीं,तत्तनाम से तिरता यह सत है या नहीं यह तू पहचान कर। ।।१।।

बेद पुराण संमँद हे भाई ।। जामे हीरो डाऱ्यो ।।
मरजीवा बिन प्रथन लाधे ।। पच पच जनम बिगाऱ्यो ।। २ ।।

यह जैसे समुद्र में हीरा रहता ऐसे वेद,पुराण समुद्र में रामनाम यह हीरा है। समुद्र से हीरा गोतेखोरो को मिलता ऊपर ऊपर तिरनेवालों को कभी नहीं मिलता ऐसे ही जीवन भर वेद पुराण उपर उपर पढने से वेद पुराण का मुल तत्तनाम नहीं मिलता। जैसे यह समुद्र में उपर उपर तिरनेवाला तिरकर थक जाता,अंतीम मे मर जाता परंतु हीरा कभी नहीं मिलता ऐसे ही वेद पुराण उपर उपर जाननेवाले पढ पढकर थक जाते,परंतु सत्तनाम कभी नहीं मिलता ऐसे वेद पुराण पढने में ये पंड्ति और नरनारी अपना अमुल्य मनुष्य देह बिघाड देते। ।।२।।

में यो रतन धऱ्यो हे बारे ।। सुणज्यो सब नर नारी ।।
केहे सुखराम चाह कारज की ।। तो मानो बात हमारी ।। ३ ।।

अरे पंड्ति,मैंने वेद,पुराण में का रामनाम रतन वेद,पुराण से बाहर निकाल कर जगत में प्रगट किया है याने सबको समझे ऐसा सत्तज्ञान में बताया है यह जगत के सभी नर–नारी और पंड्ति सुनो,आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,अगर आपको भवसागर से तिरने का कारज करना है तो मेरी बात मानो और ये वेद,पुराण त्यागो और मेरे पास आकर तत्तनाम धारण करो। ।।३।।

२७४

।। पदराग सोरठ ।।

पंडित यामें कुण हे न्याई
पंडित यामें कुण हे न्याई ।।
डूबे कोण उधरे यामे ।। सुरग नरक कुण जाई ।। टेर ।।

अरे पंडित,इनमें(हिन्दू और मुसलमान में)न्यायी कौन है?(और अन्यायी कौन है?)इनमें डूबता कौन है और उद्धार किसका होता है?इनमें स्वर्ग में कौन जाता है और नरक में कौन जाता है?।। टेर ।।

मुसलमान गाय कूं मारे ।। हिंदू सो कर जोडे. ।।
तुरक सूर की पूजा ठाणे ।। हिंदू झटके तोडे ।। १ ।।

ये मुसलमान लोग गाय को मारकर खा जाते है और हिन्दू गाय को हाथ जोड़ते है,पूजा करते है। मुसलमान लोग सूअर को मानते है और जो हिन्दू मांस भक्षक है वे हिन्दू लोग(सूअर को)झटके से तोड़ते है। ।। १ ।।

तुरक ब्याव सो मासे मांडे ।। हिंदू तपत सियाळे ।।
मुसल्ला दोष न माने अेकी ।। हिंदू दस सुण पाले ।। २ ।।

मुसलमान बारीश के दिनों में भी शादी करते है,परंतु हिन्दू वर्षाऋतु मे शादी नहीं करते

है। गर्मी और जाड़े में ही करते है। हिन्दू लोग शादी में जो दस दोष टालकर शादी करते है,वे दस दोष(१.लात २.पात ३.युती ४.बेध ५.यामित्र ६.पंचक ७.येकार्गल ८.उपग्रह ९.क्रांती और १०.दग्धतिथी ऐसे दस दोष निकालकर(वर्ज्य करके))हिन्दू शादी की तिथी रखते है। ये दस दोष टालकर हिन्दू लोग शादी करते है,परंतु तुर्क इनमें से एक भी दोष,शादी करने में नहीं मानते है। ।। २ ।।

पंथ मारग मे नार अपल हे ।। ओर सकल शिर काटे ।।
मुसलमान सब भेळा जी मे ।। हिंदू बरते घाटे ।। ३ ।।

और कुण्डापंथ में कोई,किसी की भी स्त्री से संग किया,(तो भी कुण्डापंथी मना नहीं करते है। कुण्डापंथ में कोई भी मनुष्य,किसी भी स्त्री से संभोग कर सकता है।)परन्तु दूसरे सभी लोग इस बात से(कोई किसी की स्त्री के पास दूसरा पुरुष गया,तो)सिर काटते है और मुसलमान सब एक ही थाली में खाते है,परन्तु हिंदु अलग-अलग(अपनी-अपनी)जाती के प्रमाण से उपयोग में लाते है। ।। ३ ।।

दुध टाळ सकळ के परणे ।। तुरक कबीले मांहि ।।
के सुखराम हिंदू कुळ टाळे ।। साख अडे ज्यांहाँ तांई ।। ४ ।।

मुसलमान लोग दूध टालकर,सिर्फ एक माँ का दूध न पिए हुए,लड़के-लड़की की शादी करते है।वह लड़की फिर सगे चाची की हो या सगी मौसी की हो,वे अपने कबीले में ही याने परीवार में ही शादी कर लेते है परन्तु हिन्दू जब तक साखा अड़ती है,तब तक कुल छोड़कर सगाई करते है। रिश्ते में किसी भी प्रकार से लड़की यदी बहन लगती होगी,तो उससे हिन्दू लोग शादी नहीं करते है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि, हिन्दू और मुसलमान इन दोनो में न्यायी कौन है और अन्यायी कौन है,यह मुझे तुम बताओ। ।। ४ ।।

३३५

।। पदराग मिश्रित ।।

संतो अेसा भेव संभावो

संतो अेसा भेव संभावो ।। ज्या सूं आवागवण न आवो ।। टेर ।।

संतो जिससे आवागमन नहीं आयेगा ऐसा भेद धारण करो। ।।टेर।।

तूं मेरा स्वामी मे तेरा चेला ।। जे ओ अरथ बताओ ।।
ने: क्रमी सूं किस बिध मिलीये ।। रेत कोण घर लावो ।। १ ।।

संतो, ने:कर्मी याने माया के परे के बैरागी को कैसे मिलते आता यह विधि मुझे बताओ। यदि यह अर्थ बता पाये तो तुम मेरे स्वामी हो और मैं आपका चेला हूँ। राजा के राज में रयत ने याने प्रजा ने कौनसा भेद धारण करना चाहिए जिससे राजा के याचनाओं से वह मनुष्य सदा के लिये मुक्त होगा इसीप्रकार होनकाल पारब्रम्ह के राज में प्रजा याने जीव ने कौनसी विधि धारन करनी चाहिये जिससे यह जीव होनकाल कर्मी राजा से सदा के

लिये मुक्त होगा और ने:कर्मी गुरू के महासुख पायेगा। ।।१।।

र रो म मो दोय मात पीता हे ।। रिध सिध बोहो घर होई ।।
नवला ब्याव करो नित साधो ।। ग्रभ टळे नहीं कोई ।। २ ।।

ऐसे ही रक्कार पिता है और मक्कार माता है तथा रिध्दी-सिध्दी यह मेरी अनेक पत्नियाँ है। इन रकार पिता और मकार माता याने रामनाम का साँस-उसाँस में नहीं साँस-साँस में रटन करने से गर्भ में आना टलता नहीं और नई-नई अनेक स्त्रियों के साथ विवाह किए याने रिध्दी-सिध्दियाँ घट में प्रगट की और उन रिध्दी-सिध्दीयों से प्रगट हुयेवे परचे चमत्कारों के सुख लिये तो भी गर्भ में आना टलता नहीं। ।।२।।

ओऊँ सोऊँ दादो दादी ।। पारब्रम्ह प्रदादो ।।
तीन लोक रच्या उनकी अंछया ।। उलट उसिने खादो ।। ३ ।।

जैसे घर में दादा है और दादी है। दादा-दादी के सेवा से,राज से उद्यम से आनेवाली आपदा टलती नहीं इसीप्रकार ओअम् यह मेरी दादी है और सोहम् यह मेरा दादा है। ऐसे ओअम दादी की और सोहम् दादा की भक्ति करने से गर्भ टलता नहीं। पारब्रम्ह यह मेरा परदादा है और इच्छा यह मेरी परदादी है। इनकी भक्ति करने से भी मेरा गर्भ टलता नहीं। मेरे परदादा पारब्रम्ह ने मेरे परदादी के साथ संसार किया और ३ लोक १४ भवन बनाये। यह मेरा परदादा परदादी के साथ सृष्टी रचना करता और उसी सृष्टी को खा डालता याने खतम कर देता। ।।३।।

रेत राज की कीया चाकरी ।। कर्म न दूरा जावे ।।
इन की टेल करम ही करणा ।। क्रमा की पदवी पावे ।। ४ ।।

जगत का राजा है और जगत के सभी मनुष्य उसकी प्रजा है। राजा यह वेदी वैरागी नहीं है। जैसे राजा की सेवा करने से पदवी मिलती परंतु वैरागी ज्ञान नहीं मिलता इसीप्रकार होनकाल पारब्रम्ह यह राजा है और जगत के सभी जीव यह उसकी प्रजा है ऐसे होनकाल राजा की सेवा करने से ३ लोक की ब्रम्हा,विष्णू,महादेव,शक्ति तथा अवतारो समान पदवी मिलती परंतु कर्म से मुक्त होकर ने:कर्मी नहीं बनते आता। ।।४।।

कुळ बेराग दोय हे रस्ता ।। परापरी सूं आवे ।।
कुळ मे त्याग पलक नहीं रेवे ।। ग्रेहे त्याग नहीं चावे ।। ५ ।।

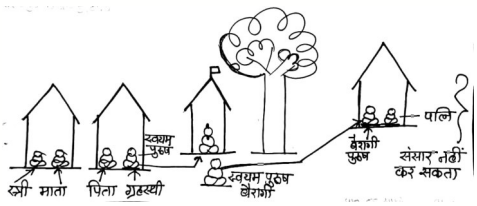

परापरी से कुल और वैराग्य ऐसे दो रास्ते चलते आए है। जैसे कुल में पलभर के लिये भी बैरागी नहीं बनते आता और बैरागी पद में पलभर के लिये भी ग्रहस्थी नहीं बनते आता वैसे ही होनकाल पारब्रम्ह के तथा इच्छा माता के

कुल में पलभर के लिए भी विज्ञान बैरागी नहीं बनते आता और विज्ञान बैरागी पदमे पलभर के लिए भी होनकाल पारब्रम्ह समान ग्रहस्थी नहीं बनते आता। ।।५।।

ना वे उरे परे भी नाही ।। ना कोई बीच कहावे ।।
त्यागी पुरष बीराजे न्यारा ।। कोटां मध पावे ।। ६ ।।

त्यागी पुरुष ये जैसे माता के भी नहीं रहते और पिता के भी नहीं रहते और माता-पिता छोड्कर पत्नी के भी नहीं रहते ऐसे वैराग्य विज्ञानी संत इच्छा माता के भी नहीं रहते,पिता होनकाल ब्रम्ह के भी नहीं रहते तथा रिध्दी-सिध्दी इस पत्नी के भी नहीं रहते। वे होनकाल पिता,त्रिगुणी माता तथा रिध्दी-सिध्दी पत्नी इससे न्यारे ऐसे सतगुरु विज्ञानी वैरागी बने रहते जो करोडों में एखाद पाए जाएँगे याने मिलेंगे। ।।६।।

कुळ मे तो निर्भे मत नाही ।। भावे सो जन होई ।।
के सुखराम त्याग जब निसऱ्यो ।। क्रम रहयो नहीं कोई ।। ७ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,जैसे कुल में कितना भी बलवान पुरुष रहा तो उसे उद्यम में की आपदा,नुकसान,पुत्र,पुत्रियों का विवाह आदि का भय रहता है ऐसेही होनकाल पारब्रम्ह के कुल में रहने से कैसा भी संत रहे तो भी गर्भ में आनेका,आवागमन का भय रहता है। जब पारब्रम्ह त्यागकर ने:कर्मी आनंदपद में मिलने का भेद धारन करता है तब ही कर्म भोगने का भय याने गर्भ में आने का भय मिट जाता है। ।।७।।

३३८

।। पदराग मिश्रित ।।

संतो अर्थ करे सो पूरा
संतो अर्थ करे सो पूरा ।।
सार सब्द कूं नहीं रे पीछाणे ।। रहें मोख सूं दुरा ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज संतो से कहते कि,वही संत काल से मुक्त है मतलब पूर्ण है,जो होनकाल ब्रम्ह परे का सारशब्द का अर्थ करता है याने पहचानता है। जो-जो संत होनकाल के परे ले जानेवाले सारशब्द को पहचानता नहीं वह मोक्ष से दूर है। ।।टेर।।

आद पुरुष सूं हंस बिछड्यो ।। क्या पाप पुन कीया ।।
किण आधार ग्रभ मे आयो ।। तो ताड़ किसी ने दीया ।। १ ।।

आदि होनकाल पुरुष से हंस अलग हुआ इसका क्या कारण है?उसने होनकाल के घर में कुछ पाप-पुण्य किये इसलिये उसे होनकाल घर छोड्ना पडा क्या?होनकाल का घर छोड्कर हंस गर्भ में आया ऐसा उसका क्या कारण बना?होनकाल पुरुष के घर से किसी ने उसे हकाल दिया क्या?ऐसा क्या हुआ ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज संतो को पूछ रहे है। ।।१।।

क्रम वांहा किया के यहां आय किया ।। के ने: कर्मी चल आयो ।।
कोण सा क्रम कोण ने लागे ।। तो काळ किसीने खायो ।। २ ।।

आदि पुरुष याने होनकाल ब्रम्ह से हंस बिछडा तो वह कर्मो के कारण बिछडा या ने:कर्मी याने बिना कर्म का चला आया?अगर कर्मो के कारण बिछडा तो कर्म वहाँ किये या यहाँ आकर किये?कौनसा कर्म उसे लगा इसलिए काल ने उसे खाया?जीव यह तो ब्रम्ह है और ब्रम्ह को कर्म लगते नहीं फिर कर्म किसे लगे?जब ब्रम्ह को कर्म लगते ही नहीं,ब्रम्ह को काल खाता भी नहीं फिर कर्म किसे लगे?जिसे काल ने खाया वह मुझे ज्ञान से बताओ ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज संतो को पूछ रहे है। ।।२।।

अेती गम ग्यान्या कूं नाही ।। समझ बीहुणा सारा ।।
काली क्रि या नार ने ब्याही ।। सो तुम करो बिचारा ।। ३ ।।

जैसे जगत में जगत के लोग पगले स्त्री का अच्छे स्त्री से विवाह कर देते परंतु उस स्त्री को पुरुष का सुख नहीं मिला देते इसीप्रकार जीव होनकाल ब्रम्ह से आया और फिर से जीव को होनकाल ब्रम्ह में मिला दिया। इससे जीव को आदि सुख से क्या नया सुख मिला?ऐसी जरासी भी समझ नहीं रखते ऐसे बेसमझ ज्ञानी,ध्यानी है इसका तुम सभी विचार करो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते। ।।३।।

सोही वस्तु सकळ घर माही ।। सोई हाट मे होई ।।
क्यूं पच मरे मुक्त ने मुरख ।। रात दिवस मिल रोई ।। ४ ।।

जो जो वस्तु घर में है वही सभी वस्तुये बाजार में दुकान में बेचने के लिये लगी है। दुकान में लगी हुई वस्तुये घर मे ही भरपूर है फिर ऐसा कौन मूर्ख है कि उन वस्तूओं को पाने के लिये पच-पचकर परेशान होगा और पाने के लिये रात-दिन रोयेगा ऐसा ही होनकाल ब्रम्ह पाने के लिये क्यो पचेगा और परेशान होकर रात-दिन रोएगा ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी संतो को पूछ रहे है । ।।४।।

कविता कहे क्रम तज भजरे ।। ब्रम्ह उलट समाई ।।
के सुखराम पेल के आयो ।। तो अबके क्यूं नहीं आई ।। ५ ।।

साधू संत,कविता के रुप मे ज्ञान कहते है कि कर्मो का त्याग करो और होनकाल पारब्रम्ह को भजकर उलटकर ब्रम्ह में याने होनकाल ब्रम्ह में समाओ। इसपर आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जीव पहले होनकाल ब्रम्ह से ही नीचे आया है और अब पच-पचकर पुन: वहाँ जाना चाह रहा है तो आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ज्ञानियों को कह रहे की जीव पहले वही से जब आया है तो अब जीव वही पहुँचने के बाद वह जीव वापिस नीचे नहीं आयेगा क्या?इसका ज्ञान से विचार करो और इस होनकाल पारब्रम्ह के परे के सारशब्द को पहचानो। ।।५।।

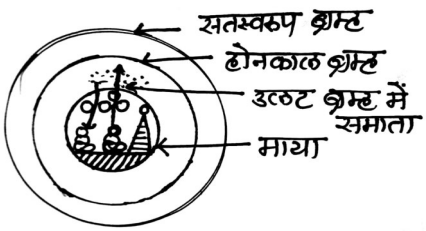

संतो भाई ग्रहस्थ भेव बताऊँ

संतो भाई ग्रहस्थ भेव बताऊँ ।। न्याव छाण सत्त गाऊँ ।। टेर ।।

संतो भाई,ग्रहस्थी का भेद बताता हूँ। ग्रहस्थी के सभी गुण छाण कर कैसे कैसे सत्य है,ऊँचे है वह तुझे बताता हूँ। ।।टेर।।

ब्यावर का गुण सोज दाखुं ।। सुण लिज्यो सब कोई ।।
दुध दही घी गोरस बछियो ।। सुख पायो सब लोई ।। १ ।।

गाय का ग्रहस्थी गुण खोजकर बताता हूँ। बच्चा देनेवाले गाय का गुण खोजकर बताता हूँ यह सभी त्यागी लोग नर-नारी सुन लो,बच्चा देनेवाले गाय से दूध मिलता है,दही मिलता है, छाछ मिलती है,घी मिलता है,आगे दूध दही देनेवाली गाय, बछडी मिलती है और खेत में अनाज उगाने के लिए बैल बछडा मिलता है ऐसा संसार के सभी लोगो को सुख मिलता। इसप्रकार ग्रहस्थी संत से त्यागी,बैरागी,संसारी सभी को सुख मिलता है। ।।१।।

सुर नर मुनी जंगम जोगी ।। रिष हरिजन कुवावे ।।
वै ग्रस्त सकळ कूं पूजे ।। सारा के गुण आवे ।। २ ।।

सभी देव-देवता,मनुष्य,ऋषी मुनी,जंगम,जोगी,रामजी के जन तथा सभी त्यागी बैरागी को ग्रहस्थी से लाभ होता इसलिए ये सभी ग्रहस्थी को पूजते याने आदर करते। त्यागी बैरागी का भोजन,प्रसाद,दवाई पानी,कपडे लत्ते सभी का खर्च ग्रहस्थी झेलता ऐसा ग्रहस्थी सभी को सुख देता,सभी को काम आता इसलिए ये सभी ग्रहस्थी का आदर करते,पूजते।।२।।

लडका लडकी पुतर जनमे ।। तामे अेह फळ होई ।।
हर की भगत करे जे सूरो ।। सब कुळ तारे लोई ।। ३ ।।

ग्रहस्थी से पुत्र, पुत्री जन्मते ये फल लगते है। ग्रहस्थी से जन्मा हुआ पुत्र हरी की भक्ति कर सांमत शूरवीर समान शूरवीर संत बनता,काल को मारकर अपने सारे कुल को और संसार के सारे लोगो को काल के चंगुल से मुक्ति करता और बडे सुख के देश को पहुँचाता ऐसा सभी को तारता है। ।।३।।

लड़की ब्याव धरम कर देवे ।। फेर भगत हुवे दासा ।।
जन सुखराम इसा गिरस्त रे ।। त्याग जत्त सत्त आछा ।। ४ ।।

ग्रहस्थी संत अपने कुख से जन्मे हुए कन्या बालक को दूजे का घर बसाने के लिए धर्म याने दान कर देते और दूजे का घर उसके साथ ब्याव करके बसाते इसप्रकार सभी को इस ग्रहस्थी से सुख मिलता। यह ग्रहस्थी स्वयम् खुद भी रामजी के त्यागी वैरागी के समान भक्ति कर रामजी का और संतो का दास बन जाता और अपनी चौरासी लाख योनी काटकर रामजी के देश जाता। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि, इसप्रकार ग्रहस्थी यह त्यागी,जती,जोगी आदि सभी से अच्छा है,ऊँचा हैं। ।।४।।

३४९

|| पदराग दीपचन्दी ||

संतो भाई त्यागन भेव बताऊँ

संतो भाई त्यागन भेव बताऊँ || आद अंत मधले गाऊँ || टेर ||

संतो भाई,त्यागी जो सब कुछ त्याग कर साधू हो गये है,वे किस काम के रह गये है। उसका भेद मैं तुम्हें दिखाता हूँ। त्यागी संतो से जगत के लोगो को होनेवाली तकलीफे बताता हूँ। उसका शुरु से लेकर अंततक और बीच में का भी संसार को कष्ट देने का स्वभाव बताता हूँ। ।।टेर।।

कासी साँड गाया में || कोहो काहा फळ लेवे ||
तोड़े वाड़ खेत वो खावे || दुनियाँ कूं दू:ख देवे || १ ||

जैसे बैल के समान नसबंदी किया गया सांड गायों मे रहता उससे कोई फल नहीं लगते। वह सांड खेतोके कुंपन तोडता और खेत में घुसकर खेत का अनाज तोड-तोड कर खा जाता ऐसे किसानो को नुकसान करता। ऐसे ही यह साधू रोटी कमाने का काम छोड देते,त्यागी बन जाते और घर-घर में घुसकर घर में रोटी नहीं रही तो जबरदस्ती से रोटी माँगते ऐसे दुनिया को तकलीफ देते है। ।।१।।

बांब गांय सो कदे न ब्यावे || तामे क्या गुण होई ||
चारो खावे गोबर न्हाके || युं दु:ख पायो लोई || २ ||

बांझ गाय कभी बच्चा दे नहीं सकती परंतु उसको घरवालों को चारा देना ही पडता और उसका गोबर मुत्र इकठ्ठा करके बाहर फेकना पडता मतलब उससे दूध बछडे का लाभ नहीं होता परंतु उसके कष्ट जरुर झेलने पडते ऐसे ही त्यागी पुरुष से मोक्ष नहीं मिलता परंतु त्यागी साधुको संसारी लोगो को कपडे लत्ते अनाज पानी से पोसना पडता ऐसा सांड के समान संसार के लोगो को लाभ तो कुछ नहीं होता परंतु कष्ट जरुर झेलने पडते है। ।।२।।

फूला फळाँ बिन ब्रछ बड़ो || तो पात ना लागे ||
काठ ता को अेसो कोमळ || घड़त घड़त जुं भागे || ३ ||

वृक्ष बहुत बडा है परंतु उसे कभी फुल फल या पत्तें लगते नहीं और उसका लकडा भी बहुत नाजुक रहता वह लकडा तासते तासते ही टुटकर तुकडे तुकडे हो जाते इसीप्रकार जैसे यह पेड जगत के किसी काम का नहीं होता वैसे ये त्यागी संसार के कोई काम के नहीं रहते। ।।३।।

चीना पियां बिना सब मर जावे || काहा बांब क्या ब्याई ||
जन सुखराम काळ में दुनियां || किस कूं नीरे लाई || ४ ||

चारा चरे बिना और पानी पीए बिना,सब मर जाते हैं । क्या तो बांझ और क्या बच्चा देने वाली,बांझ गाय को भी चारा तो डालना ही पडता है,नहीं डाला तो मर जाती है,तो

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,कि अकाल में दुनिया किसे चारा डालेगी। दूध देनेवाली गाय,भैंसों को चारा नहीं दिये जाता तो बांझ गाय को कहा से चारा डालेगे। ऐसे ही अकाल मे घर के आदमियों को पालना मुश्किल हो जाता तो ये त्यागियों को कहा से रोट्यिाँ देते आएगी। अकाल में त्यागियों पर ऐसा दु:ख पड्ता वह दु:ख ध्यान में रखकर त्यागियों ने दुनिया के उपर जबरदस्ती से निर्भर होकर जगत को तकलीफ देते पेट भरने से तो खुद संसार कर उदर निर्वाह पुरती रोटी मिलानी चाहिए जिससे अकाल में रोटी के फाके नहीं पड्ते। ।।४।।

३५२

।। पदराग बिहगडो ।।

संतो चोथे पद नहीं जावे

संतो चोथे पद नहीं जावे ।।

राम उणी का राजा महाराजा ।। वेई अमराव कहावे ।। टेर ।।

संतो,ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति,अवतार आदि के भक्त रामजी के चौथे पद नहीं पहुँचते ये ब्रम्हा,विष्णु,महादेव के स्वर्ग,मृत्यु,पाताल इन तीन लोक में ही रहते। ये ब्रम्हा,विष्णु, महादेव को पिता समझते और रामजी को राजा समझते इसलिए वे रामजी के पुत्र नहीं बनते इसलिए रामजी के देश नहीं जाते,रामजी के उमराव बनते। ।।टेर।।

सुण प्रहलाद सुरग लग पूगा ।। ईदर पदवी पाई ।।

ध्रु आकास अढळ घर कीया ।। सब जग देखे आई ।। १ ।।

प्रल्हाद स्वर्ग में पहुँचा और वहाँ इंद्र बना। ध्रुव ने आकाश मे अटल घर किया यह सभी देख रहे। ये सभी ब्रम्हा,विष्णु,महादेव के आकाशतक के तीन लोक में ही रहे रामजी के चौथे लोक नहीं गए। ।।१।।

पांडु पांच सुर्ग मे माले ।। हरचंद करण सहेती ।।

बळ राजा पंयांळ सिधायो ।। ईण ऊण बिच आ छेती ।। २ ।।

पाँचो पांड्व,हरिचंद्र,कर्ण ये सभी तीन लोक में के स्वर्ग लोक में पहुँचे। ये रामजी के चौथे लोक नहीं गए। बली राजा तीन लोक के पाताल लोक में गया। यह भी रामजी के चौथे लोक नहीं गया। इसप्रकार पांचो पांड्व,हरिचंद्र,कर्ण स्वर्ग में गए तो बली राजा पाताल में गया ऐसा अंतर स्वर्ग पाताल इनमे पड गया। ।।२।।

अत्री मैत्री बेद ब्यासजी ।। मुनि जन सेंस अटयासी होई ।।

अे धरम राय के मुजरे बेठा ।। नास्केत आयो जोई ।। ३ ।।

अत्री ऋषी,मैत्री ऋषी और सभी अठ्ठयासी हजार ऋषीमुनी धर्मराजा के मुजरे बैठे है। यह उद्यालक के पुत्र नासिकेतू देखकर आया। ऐसे ये सभी चौथे लोक नहीं गए तीन लोक मे ही रहे। ।।३।।

नौ नाथ चोरासी सिध्दा ।। सुर तेतीस कहिजे ।।

तीन लोक नारद की रमणी ।। दक्ष सराप सहीजे ।। ४ ।।

नौ नाथ,चौरासी सिध्द,तैंतीस देव ये सभी तीन लोक में ही रहे,ये रामजी के चौथे लोक नहीं गए। दक्ष के श्राप कारण नारद तीन लोक में ही रमता,चौथे लोक नहीं जाता। इसप्रकार ये सभी तीन लोक में ही रहे चौथे लोक में नहीं गए। ।।४।।

गोरखनाथ धरण पर खेले ।। सिव ने ब्यांव रचाया ।।
हेमाचळ घर गौरां परण्या ।। बार अठोत्तर ब्याया ।। ५ ।।

गोरक्षनाथ पृथ्वी पर घूमता है, वह चौथे लोक नहीं गया। शिव ने हिमालय की पुत्री गौरी के साथ एक सौ आठ बार विवाह किया मतलब शिव भी तीन लोक में ही रहता रामजी के चौथे लोक नहीं जाता। ।।५।।

सुण औतार अलख सो बाजे ।। बार बार यां आवे ।।
के सुखराम तिथंगर पूगा ।। कोई सपने ई आण बतावे ।। ६ ।।

ये अवतार अलख बाजते है,बार-बार पारब्रम्ह से जगत में आते। इसका मतलब ये अवतार चौथे लोक नहीं गए। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,तिर्थंकर चौथे लोक पहुँचे है वे सपन में भी मृत्युलोक,पाताल लोक,स्वर्ग लोक में जैसे सभी दिखते वैसे कभी नहीं दिखते। ।।६।।

३६१

।। पदराग आसा ।।

संतो केवळ मत्त तो न्यारी
संतो केवळ मत्त तो न्यारी ।।
बेद भेद की मत सब ऊला ।। पारब्रम्ह लग सारी ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ज्ञानी,ध्यानी तथा नर-नारियों को कह रहे कि, केवल का मत याने ज्ञान याने भेद यह वेद,भेद आदि,त्रिगुणी माया तथा निरगुणी पारब्रम्ह के मत याने ज्ञान याने विधियों से न्यारा है। वेद,भेद आदि,त्रिगुणी माया के तथा निरगुणी पारब्रम्ह की विधियाँ पारब्रम्हतक पहुँचाती।पारब्रम्ह के परे के आनंदपद में नहीं पहुँचाती इसप्रकार आनंदपद के इधर ही रहती। ।।टेर।।

सरगुण भक्त करे नर कोई ।। जांरे बिसवास कहावे ।।
काया माहे कछु नहीं ब्यापे ।। बाहेर प्रचो पावे ।। १ ।।

सरगुण याने रजोगुणी ब्रम्हा,सतोगुणी विष्णू तथा तमोगुणी शंकर और अवतारों की पूर्ण श्रध्दा विश्वास के साथ भक्ति साधेगा उसे घट मे आनंदपद प्रगट नहीं होगा। उसमें घट के बाहर के(आकाश मार्गसे उड जाना,सागर पर चलना,जमीन में गड के अनेक कोसो पर निकलना,मूर्दे को जिंदा करना,पल में सृष्टि मिटाना,पल में सृष्टि बनाना,एकही समय पर अलग अलग जगह शरीर धारण करना,दूजेके मन की बात कहना,लाख कोसकी बात यही देखके(बताना,कहना)पर्चे प्रगट होंगे। ।।१।।

जिऊँ माँ बाप पूत को कारज ।। ब्याव बिरध कर देवे ।।
इऊं सुरगुण मे बाहेर पर्चा ।। आनंद पद नहीं लेवे ।। २ ।।

जैसे जगत में माँ–बाप पुत्र को सुख मिलेगा ऐसा व्यापार,विवाह आदि कार्य कर देते है और उसे मायावी कुल के सुख देते है ऐसेही सगुणी माया माता तथा निरगुणी पिता पारब्रम्ह जीव मे रिध्दी–सिध्दी प्रगट कर देते और ३ लोक के परचे चमत्कार के सुख देते। इन रिध्दी–सिध्दियों से हंस को घट के बाहर के पर्चे होते कारण घट के अंदर के आनंदपद के परचे कभी नहीं होते। सगुणी माया माता और निरगुणी पिता पारब्रम्ह हंस को हंस के घट में जिससे हंस को महासुख मिलेगा ऐसा आनंदपद कभी नहीं प्रगट करा पाते। ।।२।।

जिऊं संसार माहे सुण पदवी ।। खाण पीन की होई ।।
भोगा बिना प्राक्रम नर मे ।। इऊं निर्गुण गुण जोई ।। ३ ।।

जैसे संसार में घर मे खाने–पीने के सुख मिलते वैसे जीव को त्रिगुणी माया माता के परचे चमत्कार के सुख मिलते। खाने–पीने के सुख से न्यारे व्यापार हुन्नर के सुख रहते यह व्यापार हुन्नर के सुख पिता से मिलते ऐसे माता माया के रिध्दी के परचे से न्यारे सिध्दी के परचो के सुख जीव को निरगुण पारब्रम्ह पिता से प्रगटते। ।।३।।

रिध प्रताप माय की भक्ति ।। सिध गुण पिता कहावे ।।
सतस्वरूप आणंद पद घट मे ।। सतगुरू सरणे पावे ।। ४ ।।

जीव मे सगुण माता के भक्ति के प्रताप से रिध्दी के परचे चमत्कार के गुण प्रगटते और निरगुण पिता के भक्ति के प्रताप से सिध्दी के परचे चमत्कार के गुण प्रगटते। इन सगुण माता तथा निरगुण पिता से सतस्वरुप आनंदपद के गुण घट में कभी नहीं प्रगटते। उसके लिये माता–पिता त्याग के सतगुरु शरण जाना पड्ता। ।।४।।

माता के सुण रेहे घर माही ।। सब सुख आणंद होई ।।
निर्भे ग्यान भेद न पावे ।। बिन संता कहुं तोई ।। ५ ।।

कुल माता के साथ रहने से खाने–पीने से लेकर बिछाना गादीतक के सुख मिलते और कुल पिता के साथ रहने से हुन्नर के सुख मिलते परंतु संसार के उदम आपदा के भय से मुक्त नहीं होते। हंस वैदिक गुरू के शरण में जाने से ही संसार के सभी आपदाओं के भय से मुक्त होता। इसीप्रकार त्रिगुणीमाया माता से और निरगुण पारब्रम्ह पिता से तीन लोक के मायावी सुख मिलते परंतु काल के जुलूमों के दु:ख नहीं मिटते। काल के जुलूमो से निर्भय होने का भेद विज्ञानी आनंदस्वरुपी संतो से मिलता। ।।५।।

जिऊं कुळ माय द्रब बोहो तेरा ।। ईऊं निरगुण लग करणी ।।
कुळ कूं छाड़ संत जब हूवा ।। सब बिध दूरी धरणी ।। ६ ।।

जैसे कुल में धन बहुत रहता और उस धन से मनुष्य संसार के अलग–अलग सुख

भोगता वैसेही माता से प्रगट हुयेवे रिध्दी के चमत्कारो से तीन लोको के माया के अलग-अलग सुख लेता इसीप्रकार पिता से प्रगट हुईवी सिध्दी के चमत्कारों के अलग-अलग सुख लेता परंतु तीन लोको के परे के चवथे लोक का महासुख और काल के जुलूमों से मुक्त होने का निर्भय सुख कभी नहीं ले पाता। यह महासुख माया माता को तथा पिता पारब्रम्ह को त्यागकर आनंदपद के सतगुरु का शिष्य बनने पर ही मिलता। इसके लिये माया माता से तथा पिता पारब्रम्ह से प्रगट होनेवाले रिध्दी-सिध्दी के परचे-चमत्कार की कलाये दूर करनी पड्ती तब हि जन्मने-मरने का ८४००००० योनी का फेरा मिटता। ।।६।।

जिऊं कुळ छोड़ हुवो बेरागी ।। अब जग फंद रहयो न कोई ।।
अेकी ध्यान साहेब सूं मिलणा ।। हार जीत नहीं कोई ।। ७ ।।

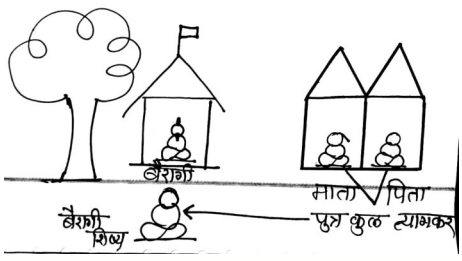

जैसे कुल छोड्कर बैरागी होता तब उसे जगत का कोई भी फंद नहीं रहता।(धंदा चलाना,माल लाना-बेचना,पुत्र-पुत्री का विवाह करना,कर भरना,अन्य विवाहों में जाना ,बारवे जाना ऐसे जगत के फंद कोई भी नहीं रहते।) इसीप्रकार सतस्वरुप विज्ञान वैराग्य प्रगट करने से तप करना,व्रत करना,संध्या करना,त्राटक करना,१०१ यज्ञ करना ऐसे करणियों के फंद एक भी नहीं रहते। ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,अवतार,त्रिगुणी माया,होनकाल पारब्रम्ह इन सबका जो मालिक है उसेही घट में प्राप्त करना इतनाही एकमात्र हेतू रहता बाकी हार-जीत याने चाहना जैसे इंद्र पदवी पाना,विष्णू पदवी पाना,देवताओं की पदवी पाना यह नहीं रहती। ।।७।।

इऊं सुर्गण निर्गुण भक्ति माही ।। प्रचा जन केहावे ।।
सतगुरू रूप आणंद पद गहीयां ।। प्रचा दिस ना जोवे ।। ८ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,सगुण और निरगुण भक्ति में संत को पर्चे चमत्कार होते है और वे पर्चे चमत्कार होने की राह भी देखते परंतु सतस्वरूपी सतगुरु को ग्रहण करनेवाले संत को तीन लोक के परचे चमत्कार नहीं होते और उन्हें इन परचे चमत्कारो में काल दिखता इसलिये ऐसे परचे चमत्कार होने की उनकी चाहना भी नहीं रहती याने उनके ध्यान में भी नहीं आता। ।।८।।

के सुखराम समझ बिन ग्यानी ।। माया फंद सरावे ।।
आणंद पद को भेद न्यारो ।। बिन सतगुरू नहीं पावे ।। ९ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के सभी ज्ञानी,ध्यानियों तथा नर-नारियों को कहते है कि,इन ज्ञानियों को समझ न होने के कारण ये माया के फंद की याने परचे चमत्कार की सराहना करते,शोभा करते। इन पर्चे चमत्कारो से जीव के फंद नहीं छूटेगे और सदा सुख का देश नहीं मिलेगा यह समज ज्ञानियों को न होने से पर्चे चमत्कारों से

मैं सुखी हो गया ऐसे समझकर उसकी सराहना करते। इसपर आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते कि,उस सुख के देश का भेद, उस आनंदपद का भेद तो आप जो समझ रहे उससे न्यारा है,अलग है और वह भेद सतगुरु के बिना नहीं मिलेगा। ।।९।।

३६४

।। पदराग मिश्रित ।।

संतो मे अेसा सतगुरू चाऊँ

संतो मे अेसा सतगुरू चाऊँ ।।

आवागवन मीटे दु:ख भारी ।। म्हा प्रम सुख पाऊँ ।। टेर ।।

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज संतो से कहते है कि,मैं घट में राम प्रगट करा देनेवाला सतगुरु चाहता हूँ। वह राम घट में प्रगट हो जाने पर मेरा आवागमन का भारी दु:ख मिट जाएगा और मुझे महा परमसुख मिलेगा। ।।टेर।।

पाप करूं तो दोजख देवे ।। ध्रम कीयाँ भुगतावे ।।

तपस्या कियां राज फंद गल मे ।। जलम जलम दू:ख पावे ।। १ ।।

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि,मैं पापकर्म करता हूँ तो मुझे नरक मिलता है और मैं धर्म याने पुण्यकर्म करता हूँ तो मुझे स्वर्गादिक मिलता है और वे पुण्य कर्म पुर्ण भोगे जब तक भोगवाने के लिए अपने वश रखकर मुझे भुगवाते है। तपस्या करता हूँ तो मैं राजा बनता हूँ और राज चलाने का फंद मेरे गले में पड्ता इस प्रकार चौरासी लाख योनी के आवागमन के चक्कर से न निकलते उसी मे अटके रहता और आवागमन के भारी दु:ख जन्म-जन्म लग भोगता। ।।१।।

साझन किया सिधाई जागे ।। क्रामात फळ पावे ।।

बूरो भलो काहू को बंछे ।। यूं कर नरकाँ जावे ।। २ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,सिध्दी की साधना जागृत करता तो मुझ मे सिध्दाई जागृत होती और उससे करामाती बनता। मेरा मन ऐसे सिध्दी के करामात से किसी का अच्छा चाहता उसका अच्छा कर देता तो किसी का बुरा चाहता उसका बुरा कर देता। इसप्रकार सिध्दियों से जगत का अच्छा बुरा करके अच्छे बुरे फल पाता और आवागमन रुपी नरक में जा पड्ता।

दृष्टान्त :-कोई गुरू-शिष्य,दोनो भी सिद्ध थे। ये सिद्ध लोग,सिद्धाई से प्राप्त की हुई,कोई भी वस्तु नहीं खाते है। वे दोनो भी गुरू-शिष्य,एक ही गाँव में आए। गुरू गाँव के बाहर रहा और शिष्य भिक्षा के लिए गाँव में गया। इस शिष्य ने,एक आटा पिसानेवाली को देखा की,किसी एक का आटा पीसवाकर घर ला रही थी। वह आटा हवा के कारण उड़ रहा था। वह गाँव में आये हुए शिष्य ने देखा की,इसका आटा हवा से उड़ रहा है,जिसका आटा है वह पुन: तौलेगा,तो तब आटा कम पड़ेगा,फिर वह इसकी पिसाई में से,पैसे कम कर लेगा और मेरा तो सिद्धाई के योग से,हवा बंद करना सहज है। मैं हवा बंद कर दूँ

,तो इसका आटा नहीं उड़ेगा। ऐसा विचार करके,शिष्य ने हवा बंद कर दिया,उस हवा के योग से,समुद्र में एक जहाज चल रहा था इसके हवा बंद कर देने से,वह जहाज डूब गया और जहाज के सभी मनुष्य मर गए। यह गुरू को ध्यान में दिखाई दिया। शिष्य गाँव से भिक्षा लेकर आया तब गुरू बोला कि,दुष्ट,मुँह मत दिखा। तूने आज जहाज डूबा दिया है। इस पाप के योग से तुम्हें नरक मिलेगा। ।।२।।

करणी किया करम सिर बंदे ।। ग्रह आव दम तुटे ।।
त्यागन किया रहे सिर बदले ।। जनम दूसरे लूटे ।। ३ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मैं ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति इस त्रिगुणी माया की क्रिया,विधियाँ करता तो मेरे सिरपर ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति आदि के कर्म बांधे जाते और मैं कर्म जबतक भोगता नहीं तबतक वे कर्म मुझे अपने कर्म बंधन से मुक्त नहीं करते। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,मैं ग्रहस्थी बनता हुँ तो संसार मे उदम आपदा से जीवन व्यतीत होता मतलब अमुल्य साँस संसार के गांगरत में खुट जाते। ग्रहस्थी जीवन के उदम आपदा मे न पड़ते ग्रहस्थीपणका त्याग करता तो माता, पिता,भाई,पत्नी,पुत्र,पुत्री के लेने देने के बदले थे वे बदले त्यागपणा मे चुकाये नहीं जाते बाकी रह जाते। ऐसे चुकाये नहीं गए बदले अगले जन्म में मुझे आकर लुटते। ।।३।।

भणीयाँ सोच भ्रम ब्हो ऊठे ।। तीरथ सूं तन छीजे ।।
सेवा कियाँ साच नहीं पावे ।। यूं तो राम न रिजे ।। ४ ।।

माया की न्यारी-न्यारी पोथियाँ,बाणियाँ सीखता हूँ तो पोथियाँ,बाणियाँ सीखने से मेरे मन में सच्चा क्या है और झुठ क्या है यह उलझन उठती इस कारण कई बार झुठा भी सच्चा लगने लग जाता तो कई बार सच्चा भी झुठा लगने लग जाता। इसप्रकार से सच्चे झुठे के बडे-बडे भ्रम मुझ में उठते। तीरथ करता तो मेरा शरीर घटता याने गलकर क्षीण होता। मैं मुर्तियों की सेवा करता तो मुझे रामजी की सेवा कर रहा यह विश्वास नहीं आता इस कारण मुझ से रामजी नहीं खुश होते । ।।४।।

भ्रम क्रम दोना सूं न्यारा ।। ज्याँ सूं रहो लिव लाई ।।
के सुखराम राम बिन जग मे ।। सब ही क्रम ऊपाई ।। ५ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज नर नारियों को कहते है कि,ऐसे भ्रम और कर्म से जो न्यारा राम है उस राम से लीव लगाओ। उस राम के लीव बिना धर्म करना,तपस्या करना,सिध्दाई जागृत करना,त्याग करना,अनेक पोथियाँ,बाणियाँ अध्ययन करना,तीर्थ जाना,मुर्तियोंकी सेवा करना ये आवागमन के दु:ख में पटकनेवाले कर्मो के उपाय है। इन कर्मो में महापरम सुख प्राप्त करा देनेवाला राम नहीं है। महासुख प्राप्त करा देनेवाला राम सतगुरु में है, इसलिए मैं महा सुख देनेवाला राम प्रगट करा देनेवाले सतगुरु चाहता हूँ अन्य मायावी कोई गुरु या देवी देवता नहीं चाहता। ।।५।।

३७२

|| पदराग आसा ||

संतो तो सुण कारण नाही

संतो तो सुण कारण नाही ||

भावे त्याग आज कर निकसो || भावे रहो घर मांही || टेर ||

सत्त नाम पाने के लिये संतो आज ही घर त्यागकर,त्यागी बनकर वन में जाना या ग्रहस्थी बनकर कुल परिवार के साथ घर में रहना यह कोई कारण नहीं रहता। ।।टेर।।

माहा बेराग ऊपनो हो छिन मे || जंगळ की राह धावे ||

तां दिन त्याग करे नर अेसो || देह तज्यां हंस जावे || १ ||

महाबैराग उत्पन्न होता तब पल में घर परिवार त्यागकर जंगल की राह पकड्ता। किसी दिन मनुष्य को महाबैराग्य इतना आया रहता की कुल परिवार तो त्यागना चाहता ही चाहता इसके परे भी देह इस माया में भी आत्मा नहीं रखना चाहता। ।।१।।

मन सुळझाय कियो जब न्यारो || अडबी रही न काई ||

अेसो ग्यान माहारस पाया || भेळ्यो मिले न मांई || २ ||

परंतु इतने भारी बैराग्य मन को सुलझाकर सबसे न्यारा करता सुलझाने मे कोई अड्चा याने फेर फार नहीं रखता। ऐसा वैराग्य का महारस ज्ञान उपजता और संसार में किसीसे हिल मिलकर न रहते वैराग्य मे अकेला रहता फिर भी उसे सतज्ञान नहीं प्रगटता। ।।२।।

दूध मथ घ्रित करत जुग न्यारो || कासट आग प्रकासा ||

यूँ मथ ग्यान बिरच नर बेठो || तजी ब्रम्ह लग आसा || ३ ||

जैसे दुध में से घ्रित अलग होता वह वापीस दूध में डालने से दूध में मिलता नहीं। लकडे से अग्नि अलग हो जाती वह अग्नि वापीस लकडे में मिलती नहीं ऐसे ही ज्ञान से अलग होकर पारब्रम्ह होनकाल तक माया से न्यारा रहने की आशा करता है और पारब्रम्ह का नाम धारण करता फिर भी सतनाम नहीं पाता। ।।३।।

मात पिता सुत नार कुलंतर || जुग जुग बोहो संग कीना ||

दिन दस सुळज समझ ढिगं बेठो || अंत छाड़ सब दीना || ४ ||

माता,पिता,सुत,नार कुलंतर यह जन्म-जन्म में साथ रहते यह ज्ञान से सुलझकर दस दिन के साथी है समझकर इन सबको त्याग देता और समझ के मजबूती से बन में जाता फिर भी आवागमन नहीं मिटता। ।।४।।

आवागवण मिटाई चावो || माहापरम सुख लीजे ||

के सुखराम नाव तज करतां || सतनांव चित्त दीजे || ५ ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,आवागमन मिटाना चाहते हो,महापरम सुख लेना चाहते हो,तो पारब्रम्ह होनकाल कर्ता का नाम तजो और सत्तनाम में चित्त दो। उसके लिये त्यागी बनकर बन में जाने का कारण नहीं या घर में न रहकर सत्तनाम न पाने का

कारण नहीं यही सत्तज्ञान से समझो। ।।५।।

३७३

।। पदराग जोग धनाश्री ।।

सरब दुखी लो सरब दुखि लो

सरब दुखीलो सरब दुखिलो ।। तन धर सुखि हन कोई रे ।।

सुर सब देव मीनष सो पंछी ।। सब मे दुबध्या होई रे लो ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जिसने-जिसने महाप्रलय में नष्ट होनेवाले माया का तन धारण किया है वे सभी शरीरधारी दु:खी है। वे शरीरधारी कोई भी सुखी नहीं है। ये सभी ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति,इंद्र,सभी३३००,००,०००देवता,सभी मनुष्य, सभी पशु-पंछी,पेड-पौधे ये सारे दु:खी है। सभी में किसी ना किसी प्रकारके दु:ख याने दुबध्या है। ।।टेर।।

देव लोक मे ओ दुख व्यापे ।। अेक अेक सिर होई रे ।।

निस दिन नाटक करे सिर ऊपर ।। देव देव सिर जोई रे लो ।। १ ।।

देव लोक इक्कीस मंजिल का है। देवलोक में निचे के मंजिल से लेकर इक्कीसवे मंजिल तक स्पष्ट दिखता है। इन देवता लोको में हर मंजिल में सुख संपदा भोगने का फरक रहता है। देवताओं में सबसे ऊँची करनी किया हुआ देवता इक्कीसवे मंजिलपर रहता और देवताओं में सबसे हलकी करनी किया हुआ देवता पहले मंजील पर रहता है। पहले मंजीलवालो को जो पाँच विषयों का सुख मिलता उससे अधिक दूसरे मंजिलवालो को मिलता और दूसरे मंजिल वालो से तीसरे मंजिलवालो को अधिक सुख मिलता है। ऐसा जैसे-जैसे मंजिल बढती वैसा सुख बढता है। सबसे अधिक सुख इक्कीस वे मंजिलवालों को मिलता। इसप्रकार से स्वर्ग में देवता एक-एक के सिरपर रहते और ये नित्य पाँच विषयों के सुख भोगने का नाटक करते रहते। निचेवाले को कम सुख मिलते और उपरवाले को जादा सुख मिलते इसलिए निचेवाला देव उपरवाले के सुख देखकर उदास होता,उसे बुरा लगता। सुखों के फरक के कारण देवता लोको में निचेवाले देवताओं को उपरवाले देवता से इर्षा भाव रहता तो उपरवाले देवता को नीचेवाले देवता से हीन भाव रहता ऐसे सभी देवता कोई ना कोई कारण से दु:खी रहते है। ।।१।।

म्रत लोक मे ओ दुख भारी ।। मरतां बार न लागे रे ।।

इंद्रि सुख व्हे नाहि पूरण ।। चाय बोहोत घट जागे रे लो ।। २ ।।

मृत्युलोक में बहुत भारी दु:ख है। कब मरेंगे यह कभी पहले मालूम नहीं पडता अचानक शरीर से प्राण निकल जाता,मरे जब तक भी इंद्रियों के सुखों से तृप्त नहीं होता और इंद्रियों के सुखों की चाहना दिन ब दिन बहुत जागृत होती। ।।२।।

सेस लोक मे ओ दुख व्यापे ।। भक्त बिना नर काया रे ।।

वां को बोझ पडे. सिर वांके ।। नाग दुखी यूं भाया रे लो ।। ३ ।।

नागलोक में नाग लोगो को धरती का बोजा जरासा भी नहीं मालुम होता परंतु धरती पर जो सतस्वरुप के भक्ति बिना पापकर्मी काया रहती उसका बोजा नागलोक के उपर भारी पड्ता है। पुण्यकर्मी देवताओं के भक्ति करनेवालों का बोजा नागलोक पर पड्ता परंतु वह सहे जाता किंतु पापकर्मी देवताओं के भक्त का और पापकर्मीयों का बोझा न सहे जानेवाला बहुत पीडादायक रहता। जैसे मनुष्य को सिरपर पाँच दस किलो बोझा बिना महसूस हुए सहते आता परंतु छोटीसी जू का रेंगना सहे नहीं जाता। इसी प्रकार पापकर्मियों के बोज से नागलोक दु:खी रहता। ।।३।।

धरणी जम पवन जळ दुखिया ।। काळ मरण भो माही रे ।।
श्रोता वक्ता पिंडत ग्यानी ।। करणी को दुख यां हा रे लो ।। ४ ।।

धरणी,यम,हवा,अग्नि,जल इन सभी को महाप्रलय में काल का मरने का भय है इस संसार में काल और मरण सभी में है इसलिए ये सभी दु:खी है। श्रोता,वक्ता,पंड्ति,ज्ञानी इन पर स्वर्गादिक में करणियाँ भोगने के दु:ख पड्ते ऐसे ये सभी दु:खी है। ।।४।।

शिव ध्रम दुखीया ।। कुर्राण स दुखिया ।। जैन धरम दुख भारी रे ।।
आठूं पोहोर पचे भ्रम माही ।। पांच आतमा मारी रे लो ।। ५ ।।

शिव धर्म तथा मुसलमान धर्म में करणियों के फल भोगने का भारी दु:ख रहता। जैन धर्म में तो बहुत दु:ख है,आठो प्रहर भ्रम में रहते और पाँचो आत्मा को मारते रहते । ।।५।।

सिंवरण साच भजन सूं लागा ।। मन के बेग सब खोया रे ।।
के सुखराम रंचक सुख वांहे ।। ब्रम्ह ग्यान घट आया रे लो ।। ६ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जो पारब्रम्ह पर विश्वास रखकर पारब्रम्ह के सोहम् जाप अजप्पा के भजन में लगा है तथा पारब्रम्ह के भजन से जिसके मन की विषय वासना की गती पूर्ण खत्म हुई है और जिसके घट में ब्रम्हज्ञान जागृत हुए वे रंचक याने जरासे सुखी है। उसे गर्भ में जल्दी न पड्ने का जरासा सुख आता है। बाकी सभी तनधारी दु:खी है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ,जिसने जीते–जी ने:अंछर का स्मरण करके घट में ने:अंछरी काया प्राप्त की है वे ने:अंछरी संत पुर्ण सुखी है। उनके मन की वासनाओं की गति मिट गई है। उनके गर्भ में पड्ने के भ्रम मिट गए है। उनके संचित,प्रारब्ध,क्रियेमान कर्म मिट गए है। उनकी मोह ममता मिट गई है। उनकी काल के दु:खों की चिंता मिट गई है और शरीर छुट्ने के पश्चात जहाँ महासुख है और काल के दु:ख जरासे भी नहीं है ऐसे देश पहुँचने की निश्चिंतता आ गई है इस कारण ने अंछरी संत पूर्ण सुखी हो गए। ।।६।।

३७८

।। पदराग भेरू (प्रभाती) ।।

सतगुरू चरण बंदो मेरे प्राणी
सतगुरू चरण बंदो मेरे प्राणी ।। सतगुरू चरण बंदो रे ।।

वे तो कूं सत्त ग्यान बतावे ।। कछू न राखे छंदोरे ।। टेर ।।

हे मेरे प्राणी,पत्थरों के मूर्ति को नमन न करते सतगुरु के चरणों को वंदन करो। ये सतगुरु तुझे सत्त क्या है और झूठ क्या है याने सतसुख का देश कौनसा है और काल का दु:ख देने वाला माया का देश कौनसा है यह सतज्ञान देंगे। वह ज्ञान देने में जरासा भी फरक या कसर नहीं रखेंगे। ।।टेर।।

चलतां देवळ पूज पिराणी ।। मांह बसे सयजादा रे ।।
पाहन देवळ झूट बिन चेतन ।। ता कूं पूजत आंधारे ।। १ ।।

हे प्राणी,सतगुरु के पांच तत्वों के देवल को पूज। जगत में जितने चेतन जीव है वे सभी परमात्मा के सहजादे है ऐसा परमात्मा का सहजादा याने चेतन उस चलते फिरते सतगुरु के देवल में बैठा है। यह पत्थर देवल में चेतन याने परमात्मा का सहजादा नहीं है। ऐसे बिना चेतन की मूर्ती जो झूठी है उसको अज्ञान रुपी अंधा प्राणी पूजता है ऐसा यह जीव अंधा भ्रमित प्राणी है । ।।१।।

बोलतडो सो निरगुण कहिये ।। सुरगुण काया खंदो रे ।।
सुरगुण निरगुण अे सुण प्राणी ।। ओर सकळ भ्रम बंधो रे ।। २ ।।

संत के देह में जो बोलता है वह निर्गुण है और संतका पाँच तत्व का देह है यह सर्गुण है। उस सर्गुण और निर्गुण के सिवा,अरे प्राणी,पत्थर कें मुर्ती को या वेद व्याकरण को सर्गुण या निरगुण बताते यह सभी भ्रम है । ।।२।।

सुरगुण सेवा गुरू की मेहेमा ।। ब्रम्ह शब्द मन सांधो रे ।।
कहे सुखराम भगत अे साची ।। काया खोज्याँ हरि लाधो रे ।। ३ ।।

गुरु की सेवा,भक्ति यही सगुण भक्ति है और गुरु जो सतस्वरुप ब्रम्ह शब्द बताते है उस सतस्वरुप ब्रम्ह शब्द से मन लगाना यही सच्ची भक्ति है। अन्य सभी भक्तियाँ काल काटने को असत्य भक्तियाँ है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,सतगुरु के विधि से काया खोजने पर हरी मिलता है। ।।३।।

३९८

।। पदराग धनाश्री ।।

तिरषा कूं हर जळ कियो रे
तिरषा कूं हर जळ कियो रे ।। खुद्या कूं अन्नदेव ।।
सीत कूं अंबर आसरो रे ।। तिरणे कूं गुरू सेव ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,कि प्यास के लिए रामजी ने जल बनाया,भुख के लिए अन्नदेव बनाया,ठंडी मे बिमार न पडने के लिए ब्लँकेट समान कपडे एवम रहने के लिए मकान बनाए,ऐसे ही भवसागर से तिरने के लिए ब्रम्हा,विष्णु,महादेव नहीं,सतगुरु भक्ति बनाई। ।।टेर।।

सस्तर कीया मारणे रे ।। रिक्षा कुं बगतर ढाल ।।

ढोल बणायो धात को रे ।। मंडणे कूं सुण खाल ।। १ ।।

मारने के लिए शस्त्र बनाए,उस शस्त्रों से बचने के लिए हरने चिलखत,ढाल बनाए। ढोल धातु का हरने बनाया उस ढोल को मढने के लिए,चमडा भी हरने बनाया है। ।।१।।

रोग बणायर सोचियोरे ।। ओषध कीवी लार ।।
भूलण भ्रम अग्यान पे रे ।। ग्यान कीयो तत्त सार ।। २ ।।

हरने जीवों मे रोग उपजाए और उस रोग के निवारण के लिए सोच समझकर औषधी भी बनाई। परमात्मा को भूलने के कारण परमात्मा याद नहीं आता ऐसा परमात्मा याद आने के लिए और माया के अज्ञान में भ्रम जानेपर माया के भ्रम मिटाने के लिए तत्तसार ज्ञान बनाया। ।।२।।

चोर बणाया बाहारू रे ।। सरण बणाई जोय ।।
वाँ सरणे वो आवियो रे ।। मार सके नहीं कोय ।। ३ ।।

हरने चोर बनाया और उस चोर को पकडने के लिए चोर के पीछे दौडकर पकडने जाते है उन्हें बाहरु कहते है ऐसे बाहरु बनाए और शरण भी उसीने बनाई(चोर चोरी करके,बडे आदमी की शरण में चले जाते है,फिर उसे कोई भी नहीं पकड सकता है। यह शरण में जाने की रीति,अंग्रेजो के राज्य के पहले थी। अंग्रेजो के राज्य में,गुनाहगार को कोई शरण नहीं दे सकता,लेकिन पहले चोर या गुनाहगार,किसी के भी शरणागत हो जाते थे। उन गुनाहगारो को स्वयं राजा भी,निकाल कर नहीं देता था और राजा से भी कहते थे कि, मुझे मारे बिना,मेरी शरण में आया हुआ तुम्हे नहीं मिलेगा तब राजा भी,उसे नहीं मारता था और गुनाहगारको भी,राजा को सुपुर्द नहीं करते थे। पहले बहुत से लोगो के राज्य में, गुनाहगारो के लिए,कुछ गाँव रखे गये थे। गुनाहगार,गुनाह करके भाग कर,उस गाँव में पहुँचने के पहले,यदि किसीने उसे पकड लिया,तो पकड लिया,परंतु यदी उस गाँव में चला गया,तो उस गाँव मे,राजा भी उसे नहीं पकडता था। उस गाँव को,शरण लेने का गाँव कहते थे।)उसकी शरण लेने पर उसे कोई मार नहीं सकता। ।।३।।

किया खायाँ बिना बाहरो रे ।। काज सरे नहीं कोय ।।
युँ सुखदेव हर बिना रटयाँ रे ।। परथ न मुक्ती होय ।। ४ ।।

पीए बिना,खाए बिना प्यासे,भूखे रहने से जैसे देह का काम सरता नहीं इसीप्रकार रामनाम रटे बिना परममुक्ति का काम सरता नहीं ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।५।।

४०६

।। पदराग धमाल ।।

तुम सुणज्यो सकळ जन आण
तुम सुणज्यो सकळ जन आण ।। सो पेल क्रम कन जिव हुवे हो ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,तुम सभी लोग आकर सुनो,आप सभी

संत जन पहले कर्म हुए या पहले जीव हुआ यह सतज्ञान से न्याय करके बताओ। ।।टेर।।

परालबध कूं सब जुग गावे ।। के लिखियो ज्युं होय ।।
पेली अंट किसि बिध खंचिया ।। सोध बतावो मोय ।। १ ।।

प्रारब्ध कर्म को सभी जगत जानते है और सुख–दु:ख प्रारब्ध कर्म में लिखकर लाए वैसे जीव भोगता है ऐसे सभी कहते है। जीव को प्रारब्ध कर्म संचित कर्म से मिलते है और संचित कर्म क्रियेमान कर्म करने से बनते है। क्रियेमान कर्म न करने से संचित कर्म कभी नहीं बनते तो जीव को भोगने के लिए संचित में से प्रारब्ध कर्म कहा से मिले। जब प्रारब्ध कर्म ही नहीं थे तो आदि प्रथम जीव ने जन्म लिया तब जीव के साथ प्रारब्ध कर्म लिखे गए या नहीं यह वेद,शास्त्र,पुराण आदि ज्ञान ग्रंथ खोजकर मुझे बताओ। ।।१।।

प्रालब्द सुण पेल कहिजे ।। कन क्रिये सुण भाई ।।
को हे अरथ स्मज कर खोजो ।। ग्यान ग्रंथ के माई ।। २ ।।

प्रारब्ध कर्म पहले बनते या क्रियेमान कर्म पहले बनते यह तुम वेद,शास्त्र,पुराण आदि आपके ज्ञान खोजकर मुझे बताओ। क्रियेमान कर्म जीव उत्पन्न होने के पश्चात होते है और संचित कर्म क्रियेमान कर्म करने के पश्चात होते है। प्रारब्ध कर्म संचित कर्म से मिलते है तो जीव जब आदि प्रथम जन्मा था तब किस कर्म के बस डोल रहा था या वह बिना किसी कर्म से यहाँ जगत में आया था यह बताओ। ।।२।।

क्रिये क्रम बस यां डोले ।। कन संचत के मेल ।।
कन ओ समज सोचरे भाई ।। परालब्ध के खेल ।। ३ ।।

यह जीव क्रियेमान याने आज नया कर रहा है उसके बस डोलता या पुराने किए हुए संचित कर्म के बस डोलता है या संचित से लाये हुए प्रारब्ध कर्म के बस डोल रहा है यह समझ के सोच करो। ।।३।।

संचत क्रम बस ओ डोले ।। कन क्रिये कियां से होय ।।
के सुखराम जिव सो पेला ।। पाछे करम बिध सोय ।। ४ ।।

जीव संचित कर्म के बस डोल रहा है या क्रियेमान कर्म के बस डोल रहा है यह बताओ। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है, सर्व प्रथम जब जीव जन्मा था तब जीव के साथ कोई कर्म नहीं यह जीव कर्म के बस ही नहीं डोल रहा था वह स्वयम् अपने मन और पाँच आत्माओं के विषय रस के चाहते माया में घूस रहा था और अपने विषय वासनाओंके वश होकर माया के साथ कर्म कर रहा था ऐसे जीव ने कर्म किए। सर्व प्रथम जो कर्म किए उसे क्रियेमान कर्म कहते है। जो क्रियेमान कर्म भोगे नहीं गए ऐसे क्रियेमान कर्मो से उसकी संचित कर्म की गठडी बन गई और उन संचित कर्म के गठडी से सुख–दुख भोगने के लिए प्रारब्ध लिखके मिलते गए ऐसा कर्म भोगने के वश हो गया मतलब विषय विकारो के चलते उसीने कर्म किए और अब उसी के किए हुए कर्म से उसे कर्म

भोगने के लिए मतलब कर्म के बदले चुकाने के लिए दु:ख में जन्मना पड्ता है। ऐसा कर्म के वश होकर तीन लोक में कर्म भोगने डोल रहा है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।४।।

४२२

।। पदराग भेरू (प्रभाती) ।।

वो सुण भेद न्यारो सबसूं

वो सुण भेद न्यारो सबसूं ।। वो सुण भेद नियारो ।।

कुद्रत कळा प्रेम सूं जागे ।। सो साहेब को प्यारो वो ।। टेर ।।

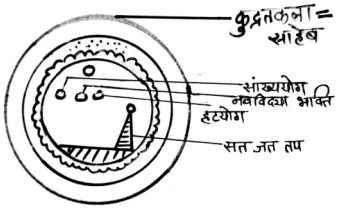

साहेब के कुद्रतकला का भेद त्रिगुणी माया के सत,जप,तप, तीर्थ,व्रत,हटयोग,सांख्ययोग,वेद की अनंत करणियाँ,नवद्या भक्ति इन सभी भेदो से न्यारा है। यह कुद्रतकला हंस को साहेब से प्रेम जागृत होने पर प्रगट होती। ऐसा हंस साहेब को प्यारा लगता। ।।टेर।।

जोगी पीर मोख नहीं पूंथा ।। ना यां नाव न पाया ।।

कष्ट करें कर कर्ता हूवा ।। जुग ही माय पुजाया ।। १ ।।

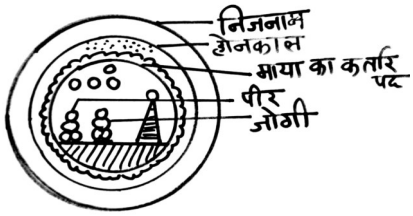

जोगी,पीर आदि को साहेब का निजनाम नहीं मिला इसलिए ये महासुख के परममोक्ष पद में नहीं जा पाए। इन्होंने त्रिगुणी माया के भेदो में कष्ट करकर माया का कर्तापद हासिल किया और कर्तापद पाने के कारण ३ लोक १४ भवन में ये सभी पूजाएँ भी गए परंतु ये जनम-मरन के चक्र से मुक्त नहीं हुए। ।।१।।

रिष पैगंबर दोनू पूगा ।। भेस्त मुक्त मे जाई ।।

ने: अंछर को भेद न पायो ।। रहया जप तप माई ।।२।।

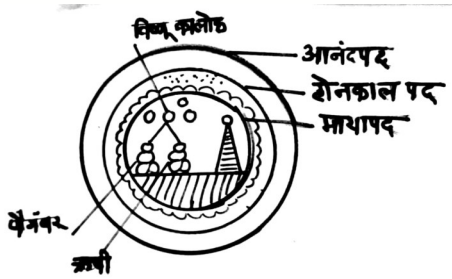

हिंदू के ऋषी मुनी और मुसलमानों के पैगंबर जप-तप करके महाप्रलयतक जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त हुए और विष्णू के वैकुंठ याने भेस्त के सुखों में गए परंतु हिंदु के ऋषी मुनी और मुसलमानों के पैगंबरों ने साहेब के ने:अछर का भेद नहीं पाया जिससे ये सभी सदा के लिए जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त नहीं हुए और विष्णू के सुखों से न्यारे ऐसे साहेब के सुखों में नहीं गए। ।।२।।

संत अवलिया मोख पहूंता ।। ज्यां ने:अंछर पायो ।।

अणंद लोक मे जाय समाणा ।। पाछो कोय न आयो ।।३।।

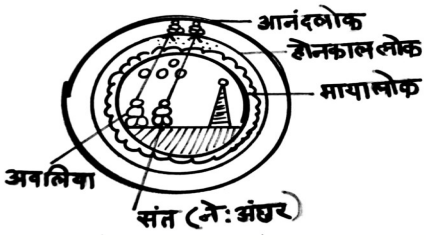

हिंदू परिवार से संत और मुसलमान परिवार से अवलिया

ये दोनों ने ने:अछर पाया। जिससे ये काल से मुक्त हो गए और आनंदलोक के महासुख के मोक्षपद में जाय समाए। ये आनंदपद से होणकाल पद के जन्म–मरण के चक्कर में वापस कभी नहीं आए। ।।३।।

नवध्या भक्त करे जन हूवा ।। ओऊँ सोऊँ मांही ।।
वां ने:अंछर नाव न पायो ।। गया बिसन घर तांई ।। ४ ।।

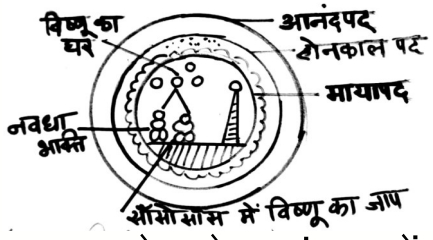

संतो ने विष्णू की नौ प्रकार की भक्ति की और ओअम–सोहम याने आती–जाती साँस में विष्णू के नाम का जप किया। इस आती–जाती साँस में विष्णू नाम जपने से विष्णू का घर मिला परंतु साहेब का ने:अंछर न मिलने के कारण साहेब के आनंदपद में नहीं पहुँचे। ।।४।।

सुणज्यो मोख तिथंगर पूगा ।। ज्यां संग अनंत अपारा ।।
बालमीक बासट मुनि रामा ।। पायो नांव बिचारा ।। ५ ।।

सतयुग,त्रेतायुग,द्वापारयुग में २४ तीर्थंकर (ऋषभदेव,अजीतनाथ,संभवनाथ,अभिनंदन,

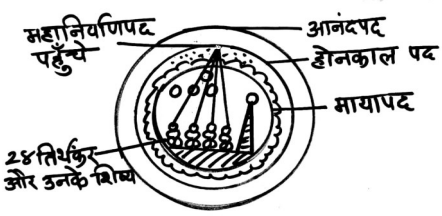

सुमतिनाथ,पद्मप्रभु,सुपार्श्वनाथ,चंद्रप्रभु,सुविधीनाथ,अनंत नाथ,धर्मनाथ,शांतिनाथ, कंथुनाथ,आदिनाथ, मल्लिनाथ, मुनीसुवृत्तनाथ,नेमिनाथ, रिष्टनेमनाथ ,पार्श्वनाथ,महावीर)

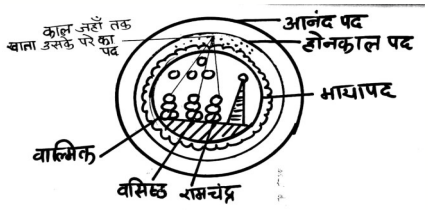

काल नहीं खाएगा ,ऐसे माया के परे महानिर्वाण पद पहुँचे तथा उनके साथ अनंत अपार हंस भी महानिर्वाण पद पहुँचे। त्रेतायुग में वाल्मिक(रत्नाकर डाकू),वशिष्ट मुनी,रामचंद्र इन्होंने निजनाम का भेद पाया और काल जहाँ तक माया को खाता उसके परे का पद पाया। ।।५।।

कळजुग माय कबीर नामदेव ।। दादु दर्या सोई ।।
वां प्रताप बोहोत ने पायो ।। क्हां लग कहुं मे तोई ।। ६ ।।

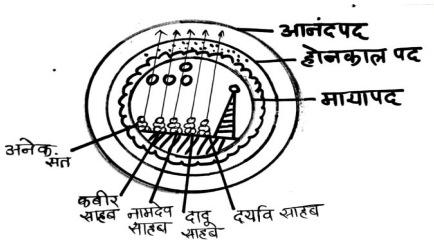

अभी कलियुग में काशी के कबीर साहब,महाराष्ट्र के नामदेव साहब,राजस्थान के दादू साहब, दर्यावसाहब आदि ने साहेब का आनंदपद पाया तथा इन सभी के प्रताप से बहुतों ने आनंदपद पाया और भी अनेक संत कलियुग में साहेब के आनंदपद पहुँचे । उनके प्रताप से अनंतों ने आनंदपद पाया यह यदी मैं तुम्हें कहाँ तक बताके सुनाऊ। ।।६।।

यामे फेर फार कहे भाई ।। सुण लीज्यो जन सोई ।।
राम कहया से नाव न जाग्यो ।। ज्यां नहि पायो कोई ।।७।।

जगत में कई संतो ने सतगुरु धारण न करते बाहर के साँस में रामनाम जपा परंतु इन संतों में ने:अंछर नाम जागृत नहीं हुवा यह सभी संतो सुनो। इन संतों पर सतगुरु की मेहेर न होने के कारण इनमें ने:अंछर नाम नहीं प्रगट हुआ। इसकारण इन संतों में और कबीर साहब,नामदेव साहब,दादू साहब,दर्याव साहब के समान आनंदपद पाने का फरक रहा। ।।७।।

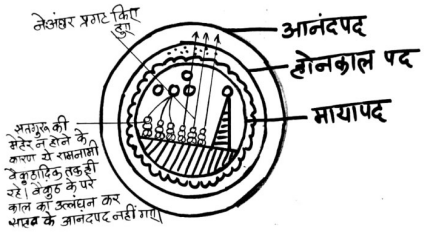

क्हे सुखराम म्हेर सतगुर की ।। ने:अंछर हम पाया ।।
जो चावे सो लो सब कोई ।। तन मन सु पर भाया ।। ८ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,सतगुरु की मेहेर मुझ पर हुई इसकारण मुझे साहेब के आनंदपद का ने:अंछर नाम प्राप्त हुआ। अब जिसे-जिसे जनम-मरन के चक्र से मुक्त होना है और महासुखों का आनंदपद पाना है,उन्होंने उनका निजमन तन,मन माया से निकाल कर मुझे सौंपना है। ऐसा करने से उन सभी को३ लोक,१४ भवन के त्रिगुणी माया के सभी भेदों से न्यारी ऐसी महासुख की कुद्रतकला प्रगट होगी। ।।८।।